04 - डिजिटल मीडिया अब सिर्फ एक विकल्प नहीं

05 - एक बेमिसाल देश भक्त अदाकार भला कैसे बिसरेगा

06 - ब्रिज का काम शुरू, मरीजों को मिलेगी सुविधा, जिला...

07 - गांव एवं बस्ती चलो अभियान से भाजपा की रीति नीति से...

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 5 अप्रैल, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 205, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

जोरों की प्यास है मगर
बादलों का दूर-दूर तक पता नहीं
नदियां ललचा रही हैं?, उनकी नाभि से निकले
कमल खिले हैं तटों पर, लेकिन सतह पर
मरी हुई मछलियां नजर आ रहीं
ये नदियां पहाड़ों से नहीं आ रहीं
समुद्र की ओर नहीं जा रहीं
इनका उद्गम धरती का
चाक हुआ सीना है
जैसे बेवजह मारे गये
लोगों का खून बह रहा हो
समुद्र के हृदय में उड़ेला जा रहा है
इतिहास का विष, उसके बर्दाश्त की एक
सीमा है
वह उबल रहा है मृत्यु घट बनकर
किसी अनहोनी की प्रतीक्षा में पृथ्वी के
होठ सूख रहे हैं
अब और कोई रास्ता नहीं बचा है
आने दो इन ज्वाल लहरों को
शैतानी सल्तनतों के शिविर रौंदते हुए।

– सुभाष राय

प्रसंगवश

मथुरा-काशी से जुड़ी नई मुहिम का आह्वान करने के मायने

ललित गर्ग

हिंदू समूहों का दावा है कि मुस्लिम आक्रमणकारियों ने मथुरा में श्रीकृष्ण मंदिर और वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर को नष्ट करके उनके ऊपर मस्जिदें बना दीं। इसीलिये विश्व हिंदू परिषद और साधु-संतों ने 1984 में तीन मंदिरों की बात की थी, जिनमें में अयोध्या में श्रीराम मन्दिर बन चुका है। इसके बाद कई लोगों को लगने लगा था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व उसके अन्य सहयोगी संगठन इससे संतुष्ट हो चुके हैं और काशी व मथुरा के विषय को जैसे उन्होंने त्याग दिया है या भूला दिया है। लेकिन ऐसा नहीं है, लोकसभा में वक्फ विधेयक के पेश किए जाने से कुछ ही घंटे पहले संघ के सरकार्यवाह एवं महामंत्री दत्तात्रेय होसबाले ने काशी ज्ञानवापी और मथुरा की श्रीकृष्ण जन्मभूमि से जुड़े आंदोलनों-कार्यक्रमों में संघ के स्वयंसेवकों को न रोकने की बात कह कर एक नई मुहीम के आह्वान का अप्रत्यक्ष रूप से संकेत दे दिया है, जिसके गहरे राजनीतिक निहितार्थ हैं। पिछले कुछ समय से इनको लेकर एक ऊहापोह की स्थिति थी, लेकिन संघ के इस मुद्दे पर छाये धुंधलकों को हटाते हुए अपने नये बयान से ऊर्जा का संचार किया है।

संघ की कन्नड़ साप्ताहिक पत्रिका 'विक्रमा' को दिए इंटरव्यू में होसबाले ने साफ कर दिया कि उस समय यानी 1984 में विश्व हिंदू परिषद और साधु-संतों ने तीन मंदिरों की बात की थी। इसलिए अगर संघ के स्वयंसेवक इन मंदिरों के लिए काम करना चाहते हैं, तो हम उनको रोकेंगे नहीं। साफ है, इस बयान के बाद इन मथुरा-काशी दोनों स्थलों से जुड़े विवाद और इनके आंदोलनों को एक नई ऊर्जा, इन मन्दिरों के जीर्णोद्धार, स्वतंत्र अस्तित्व हासिल करने में सफलता मिलेगी। इससे एक बार फिर भाजपा की ताकत बढ़ेगी एवं हिन्दुओं को एकजुट करने का वातावरण बनेगा। बिहार में कुछ ही माह बाद विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और साल 2027 की शुरुआत में ही उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव होंगे। बिहार एवं उत्तर प्रदेश दोनों ही प्रदेशों में जातिगत गणना और आरक्षण को बड़ा चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिशें हो रही हैं। इन दोनों चुनावों में काशी और मथुरा बड़ा मुद्दा बने, तो कोई आश्चर्य नहीं है। मथुरा में श्रीकृष्ण मंदिर भगवान कृष्ण के जन्मस्थान के रूप में और वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के रूप में हिंदू धर्म में अत्यधिक महत्वपूर्ण आस्था-स्थल हैं, जहाँ लोग मोक्ष प्राप्ति के लिए आते हैं।

काशी में विश्वनाथ और मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर का पुनरुद्धार केवल भौतिक संरचनाओं को पुर्नस्थापित करने का प्रयास नहीं है-यह भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक सार को पुनर्जीवित करने एवं आहत हिन्दू आस्था पर मरहम लगाने का आह्वान है। सनातन धर्म की शाश्वत विरासत के प्रतीक ये मंदिर आक्रमणकारियों के सदियों के हमलों के बावजूद हिंदुओं की दृढ़ता और भक्ति के प्रमाण हैं। इन पवित्र स्थलों को पुनः प्राप्त करना हमारे पूर्वजों के बलिदान का सम्मान करने, हमारी विरासत को संरक्षित करने और हमारी समृद्ध परंपराओं को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का कार्य है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हिंदू मंदिरों के बारे में सच्चाई सबके सामने है, लेकिन ये मामले अनसुलझे हैं। ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के ये स्थल लंबी अदालती लड़ाई के बावजूद अभी भी न्याय का इंतजार कर रहे हैं।

दत्तात्रेय होसबले का यह साक्षात्कार महत्वपूर्ण होने के साथ दूरगामी सोच से जुड़ा है। हालांकि, होसबले ने अपने इसी इंटरव्यू में देश की सभी मस्जिदों को मुद्दा बनाने की प्रवृत्ति को सामाजिक ताने-बाने के लिए नुकसानदेह बताकर संतुलन साधने की कोशिश की है। इससे पहले संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा था कि हर मस्जिद के नीचे शिवलिंग तलाशना सही नहीं है। होसबले ने अपने साक्षात्कार में गौ हत्या, लव जिहाद और धर्मांतरण जैसी चिंताओं को स्वीकार किया। उन्होंने अस्पृश्यता यानी छुआछूत को खत्म करने, युवाओं में संस्कृति के संरक्षण और देशी भाषाओं की सुरक्षा जैसे समकालीन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया। भाषा नीति पर होसबाले ने त्रिभाषी दृष्टिकोण का समर्थन किया और इसे 95 प्रतिशत भाषाई विवादों का समाधान बताया। उन्होंने भारतीय भाषाओं के संरक्षण और उनमें शिक्षित लोगों के लिए आर्थिक अवसर सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर दिया।

होसबोले ने कहा कि लोगों को यह समझना चाहिए कि वैश्विक भूराजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। यदि भारत में हिंदू समाज मजबूत और संगठित नहीं है, तो केवल 'अखंड भारत' के बारे में बोलने से परिणाम नहीं मिलेंगे। निश्चित ही होसबले के बोल से जहां हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की रक्षा को बल मिला है, वहीं राष्ट्रीयता भी मजबूत होती हुई दिख रही है। संघ की स्थापना भी इसी उद्देश्य एवं राष्ट्रवादी आंदोलन को एक मजबूत सांस्कृतिक आधार देने के लिए की गई थी। हमारी सदियों पुरानी प्राचीन सभ्यताएं जो धर्म, अहिंसा और भक्ति के सिद्धांतों पर आधारित थी उपनिवेशवाद के शोर में अपनी आवाज खो न जाये, हिन्दू समाज पर रह-रह हो रहे हमले रूके, हिन्दू एवं सनातन संस्कृति को सलक्ष्य कुचलने के प्रयास विराम पाये-इन जटिल स्थितियों में भारत के लोगों को एक सांस्कृतिक छत्र के नीचे एकजुट करने की दृष्टि से होसबले ने जगाया है, चेताया है, संगठित होने का आह्वान किया है। निश्चित तौर पर इन दोनों मन्दिर मुद्दों को नए सिरे से हवा देने की इस कवायद ने संघ विरोधियों एवं मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों के सामने एक नई गंभीर चुनौती पेश की है। खासकर यह देखते हुए कि अयोध्या की रणनीतिक सफलता ने हिंदुत्व की राजनीति का आधार मजबूत किया है, हिन्दुओं को संगठित किया है।

मंदिर-मस्जिद विवाद के बीच संघ की तरफ से पहले भी कई बयान आते रहे हैं। ये बयान दर्शाते हैं कि संघ भले ही सीधे-सीधे विवाद से खुद को भले ही अलग रखता हो, वैचारिक रूप से वह इनको पूरा समर्थन देता है। संघ का समर्थन देश को अराजक बनाने का कभी नहीं रहा, उसके सामने बड़ा लक्ष्य देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का भी है। बांग्लादेश समेत कई पड़ोसी देशों में भारत-विरोधी शक्तियां नए सिरे से सक्रिय होने लगी हैं, उनसे लड़ने की ताकत एवं रणनीति भी संघ चाहता है। संघ सामंजस्यपूर्ण और संगठित भारत के आदर्श को आकार देने के लिये प्रतिबद्ध है। सौ वर्षों की संघ यात्रा हिन्दू एकता, विश्व शांति व समृद्धि के साथ सामंजस्यपूर्ण और एकजुट भारत के भविष्य के संकल्प के साथ-साथ काशी-मथुरा के मुद्दे से भी जुड़ी है। हिंदुओं को बचाने और उन्हें सम्मान और गरिमा के साथ देश सेवा में तत्पर करने के लिये उनकी आस्था एवं अस्तित्व पर लगे घावों को तो भरना ही होगा।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

● बिम्सटेक में बड़ा प्लान, हाथ मलते रह जाएंगे चीन-बांग्लादेश

भारत की '7 बहनें' बनेंगी एशिया के लिए तरक्की का नया रास्ता!

बैंकॉक (एजेंसी)। बीजिंग में नॉर्थ-ईस्ट का जिक्र कर मोहम्मद यूनुस ने चीन को आगे कर भारत को घेरने की कोशिश की थी। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी एक ऐसा प्लान पेश करने वाले हैं, जिससे ना सिर्फ नॉर्थ ईस्ट दुनिया के कई देशों के लिए विकास का दरवाजा खुलेगा, बल्कि बांग्लादेश ने जो बेशर्म हरकत की थी, उसे भी करारा जवाब मिलेगा। प्रधानमंत्री मोदी के इस प्लान से भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में कनेक्टिविटी क्रांति होने वाली है। एक वक्त था जब पूर्वोत्तर भारत खराब सड़कें और खराब इन्फ्रास्ट्रक्चर की वजह से अपने नसीब पर आंसू बहाता था लेकिन आज की तारीख में पूर्वोत्तर भारत में बेहतरीन सड़कों

और पुलों का जाल बिछा दिया गया है। पूर्वोत्तर भारत में रेल इन्फ्रास्ट्रक्चर को तेजी से बढ़ाया गया है और पूर्वोत्तर के सभी राज्य अब भारत के रेलवे मानचित्र पर हैं। लिहाजा अब वक्त आ गया है कि भारत अगला कदम उठाए और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बिम्सटेक शिखर सम्मेलन के दौरान पूर्वोत्तर भारत को कई देशों के लिए विकास का दरवाजा बनाने जा रहे हैं। बिम्सटेक के एजेंडे में सबसे ऊपर समुद्री परिवहन समझौता है, जो भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच व्यापार को बढ़ावा देगा।

● **बिम्सटेक के एजेंडे में भारत का महाप्लान**- भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने बिम्सटेक मंत्रिस्तरीय बैठक के दौरान भारत सरकार के इस प्लान का जिक्र किया था। इस दौरान उन्होंने मोहम्मद यूनुस को आइना दिखाते हुए दो टूक शब्दों में कहा कि भारत की बंगाल की खाड़ी में सबसे लंबी तटरेखा है, जो लगभग 6500 किलोमीटर तक फैली हुई है। भारत न सिर्फ पांच बिम्सटेक सदस्यों के साथ सीमा साझा करता है, बल्कि उनमें से ज्यादातर देशों को जोड़ता भी है। इसके अलावा भारतीय उपमहाद्वीप और आसियान के बीच बहुत ज्यादा इंटरफेस भी प्रदान करता है। आपको बता दें कि बिम्सटेक देशों की संयुक्त आबादी करीब 1.73 अरब है और ये सभी दिश मिलकर 5.2 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाते हैं। यह व्यापार की सूरत बदल सकता है।

धार्मिक नगरों में पवित्र भाव और परिवारों में स्वस्थ वातावरण के लिए लागू की शराबबंदी

भोपाल/दतिया (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 'वसुधैव कुटुंबकम' के विचार वाली भारतीय संस्कृति संपूर्ण विश्व को परिवार मानती है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में इस सिद्धांत पर चल रही राज्य सरकार सभी के हित और कल्याण के लिए समर्पित है। परिवारों का वातावरण खराब न हो, मेहनत से कमाए गए पैसे का उपयोग परिवार के हित में हो, यह सुनिश्चित करने के लिए ही शराबबंदी लागू की गई है। धार्मिक नगरों में पवित्र भाव की अनुभूति होती है, अतः प्रदेश में विद्यमान 19 देव-स्थानों की गरिमा को बनाए रखने के लिए ही इन स्थानों पर शराबबंदी लागू की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव माँ पीताम्बरा की नगरी दतिया में

शराबबंदी लागू करने के लिए आयोजित नागरिक अभिनंदन समारोह को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में जन-प्रतिनिधियों और नागरिकों ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का दतिया में शराबबंदी के लिये नागरिक अभिनंदन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दतिया सहित प्रदेश में जहां-जहां देवी मां की कृपा है, वहां देवी लोक विकसित किए जाएंगे। चित्रकूट सहित भगवान श्रीराम से जुड़े प्रदेश के सभी स्थानों का श्रीराम वनपथ गमन मार्ग के अंतर्गत उन्नयन किया जा रहा है। इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण की जहां-जहां भी लीलाएं हुईं, उन स्थानों को भी तीर्थ के रूप में विकसित करने के लिए बजट में प्रावधान किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति के मूल भाव 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः' के अनुरूप राज्य सरकार सबके कल्याण के लिए ही समर्पित भाव से काम कर रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। राज्य सरकार के लिए कृषकों का हित सर्वोपरि है, किसानों को उनकी मेहनत और उपज का सही दाम मिले, यह सुनिश्चित करने के लिए ही 2600 रुपये प्रति क्विंटल की दर पर गेहूं खरीदा जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने प्रदेश के लिए 'केन-बेतवा' लिंक परियोजना और 'चंबल-काली सिंध-पार्वती' नदी जोड़ों परियोजना जैसी सौगात प्रदेश को दी है। साथ ही ताप्ती मेगा रिचार्ज परियोजना को भी स्वीकृति प्रदान की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किसानों से जमीन नहीं बेचने का आह्वान करते हुए कहा कि इन नदी जोड़ो परियोजनाओं से दतिया भी लाभान्वित होगा और किसान परिवारों का खुशहाल जीवन सुनिश्चित है। डबल इंजन की सरकार में जनता का हित सर्वोपरि है, प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में राज्य सरकार ने जो कहा वह करके दिखाया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अनावश्यक खर्चों से परहेज करने के लिए जनसामान्य को प्रेरित करते हुए कहा कि विवाह और मृत्यु भोज जैसे आयोजनों में अनावश्यक खर्च करना व्यर्थ है। अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और उनके भविष्य निर्माण पर ध्यान देना ही परिवारों की सर्वोच्च प्राथमिकता होना चाहिए। हर गरीब को रहने के लिए पक्का मकान, हर जरूरतमंद के लिए भोजन की व्यवस्था जैसी गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश में संचालित सर्वांगीण विकास और जन-कल्याण की गतिविधियां राम राज्य के आदर्श के समान है।

पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दतिया सहित प्रदेश के अनेक धार्मिक शहरों में शराबबंदी का जो निर्णय लिया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। शराब की लत के कारण अनेक परिवार परेशानी झेलते हैं।

वक्फ बोर्ड संशोधन बिल के खिलाफ 7 राज्यों में प्रदर्शन

● कोलकाता-अहमदाबाद में मुस्लिम संगठनों ने पोस्टर जलाए, केरल में 50 लोग भाजपा में शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ संशोधन बिल के संसद से पास होने के खिलाफ देश में विरोध प्रदर्शन हो रहा है। शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद पश्चिम बंगाल, गुजरात, बिहार, झारखंड, तमिलनाडु, तेलंगाना, कर्नाटक, असम में मुस्लिमों ने सड़कों पर विरोध प्रदर्शन किया। इसमें महिला-बच्चे भी शामिल हैं।

वहीं, केरल के मुनंबम में वक्फ से भूमि विवाद में उलझे 50 लोगों ने भाजपा जॉइन की। इन लोगों संपत्ति पर वक्फ बोर्ड का दावा है। ये लोग बीते 6 महीन से वक्फ का विरोध कर रहे हैं। गुजरात के अहमदाबाद में सैकड़ों की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग सड़कों पर जुटे।

एक्टर-डायरेक्टर मनोज कुमार का 87 की उम्र में निधन

लाल बहादुर शास्त्री के कहने पर उपकार बनाई

मुंबई (एजेंसी)। एक्टर मनोज कुमार का शुक्रवार सुबह मुंबई के कोकिलाबेन अस्पताल में निधन हो गया। वे 87 साल के थे। वे विशेष रूप से अपनी देशभक्ति फिल्मों के लिए जाने जाते थे।

उन्हें भारत कुमार के नाम से भी जाना जाता था। उपकार, पूरब-पश्चिम, क्रांति, रोटी-कपड़ा और मकान उनकी बेहद कामयाब फिल्में रहीं। मनोज कुमार के बेटे कुणाल गोस्वामी ने बताया, उन्हें लंबे समय से स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां थीं। यह भगवान की कृपा है कि उन्हें आखिरी समय में ज्यादा परेशानी नहीं हुई, शांतिपूर्वक उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। उनका अंतिम संस्कार कल सुबह 11 बजे मुंबई के पवनहंस श्मशान घाट पर होगा। मनोज कुमार काफी समय से लिवर सिरोसिस से जूझ रहे थे। उनकी हालत बिगड़ने के बाद उन्हें 21 फरवरी 2025 को अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

जवानों की सीक्रेट प्लानिंग, शाह की डेडलाइन का खौफ

● अपने ही गढ़ में गिड़गिड़ा रहे नक्सली, डर के साए में जिंदगी ● बस्तर में सुरक्षाबल के जवान लगातार कर रहे हैं एनकाउंटर

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद के खिलाफ लगातार ऐक्शन हो रहे हैं। सुरक्षाबल के जवान नक्सलियों के गढ़ माने जाने वाले अबूझमाड़ में घुसकर कार्रवाई कर रहे हैं। जिसके बाद नक्सली खौफ में आ गए हैं। ऐसे में नक्सली संगठन की तरफ से शांति की पहल का एक लेटर जारी किया गया है। शांति की पहल को लेकर दावा किया जा रहा है कि नक्सली संगठन अब कमजोर हो गए हैं। केंद्र सरकार भी नक्सलवाद के खात्मे के लिए लगातार सपोर्ट कर रही है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह लगातार नक्सलवाद के खिलाफ रणनीति बना रहे हैं और उसकी मॉनिटरिंग कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ में नक्सवाद के खात्मे की कमान खुद केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने अपने हाथों में ले रखी है। अमित शाह लगातार नक्सल विरोधी अभियानों की समीक्षा कर रहे हैं और रणनीति भी बना रहे हैं। अमित शाह ने नक्सलवाद के खात्मे के लिए एक डेडलाइन तक की है। शाह

ने 31 मार्च 2026 तक देश से नक्सलवाद को खत्म करने की डेट तय की है। यह डेडलाइन तय होने के बाद सुरक्षाबल के जवान ताबड़तोड़ ऐक्शन कर रहे हैं। सेना की पहुंच उन इलाकों में हो गई है जहां कभी नक्सलियों की बिना इजाजत के कोई बाहरी व्यक्ति कदम नहीं रख सकता था। नक्सली संगठन का एक लेटर सामने आया है। इस लेटर में उन्होंने कहा कि सरकार को युद्ध विराम की घोषणा करनी चाहिए। वह शांति से वार्तालाप करना चाहते हैं। हालांकि उन्होंने उसके लिए शर्त रखी है कि सरकार सेना की कार्रवाई रोके। नए इलाकों में बनाए गए कैंप को हटा दिया जाए। नक्सलियों की शर्त पर राज्य के गृहमंत्री विजय शर्मा दो दो टूक जवाब दे चुके हैं कि नक्सली संगठन हिंसा का रास्ता छोड़कर मुख्यधारा में लौटें। उन्होंने कहा कि किसी भी शर्त पर बातचीत नहीं होगी। नक्सलियों की शांति पहल को लेकर बस्तर के रहने वाले वरिष्ठ साहित्यकार रजीव रंजन ने नवभारत टाइम्स डॉट कॉम को बताया कि- ऐसा पहली बार हुआ है जब नक्सली इतने कमजोर हैं। जिस तरह से 2024 में नक्सलियों के खिलाफ ऑपरेशन हुए उसके बाद इस साल की शुरुआत में जवानों ने माओवादियों के बड़े कैडर को मार गिराया हो।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22 °c | न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 5 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

ब्रह्मोस-राफेल तैनात, अभेद्य है 'चिकन नेक' की सुरक्षा

● आंख उठाकर भी नहीं देख सकता बांग्लादेश, सेना है अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने पश्चिम बंगाल में स्थित सिलीगुड़ी गलियारे को मजबूत करने के लिए बड़े पैमाने पर कदम उठाए हैं। इस गलियारे को 'चिकन नेक' के नाम से भी जाना जाता है। यह संकीर्ण भू-भाग है जो भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ता है। बांग्लादेश और चीन की इस रणनीतिक गलियारे पर बढ़ती दिलचस्पी ने भारत को अपनी सुरक्षा तैयारियों को और मजबूत करने के लिए प्रेरित किया है। दरअसल हाल ही में बांग्लादेश को क्षेत्र में ''महासागर का एकमात्र संरक्षक'' बताते हुए मोहम्मद यूनुस ने चीन से बांग्लादेश में अपना आर्थिक प्रभाव बढ़ाने की अपील की थी और उल्लेख किया था कि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों का चारों ओर से जमीन से घिरा होना इस संबंध में एक अवसर साबित हो सकता है।

भारत ने भले ही आधिकारिक तौर पर यूनुस के बयान का कोई जवाब नहीं दिया हो, लेकिन वह अपने रणनीतिक हितों को नजरअंदाज नहीं कर रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय सेना ने इस कॉरिडोर की सुरक्षा को लेकर बहुस्तरीय रणनीति अपनाई है। भारतीय सेना ने 'चिकन नेक' के इलाके में राफेल और मिग की तैनाती की है। हाशिमारा एयरबेस पर राफेल लड़ाकू विमानों की तैनाती की गई है। ब्रह्मोस मिसाइल रेजिमेंट भी एक्टिव है। सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस की एक पूरी रेजिमेंट क्षेत्र में तैनात है। दुश्मन के हवाई हमलों से बचाव के लिए एस-400, ब्रहमोस और आकाश मिसाइलें तैनात हैं।

इसके अलावा, सुकना स्थित त्रिशक्ति कोर द्वारा लगातार युद्ध अभ्यास किए जाते हैं, जिनमें एम-90 टैंकों के साथ लाइव फायर ड्रिल्स भी शामिल हैं। बांग्लादेश के कार्यकारी प्रमुख मुहम्मद यूनुस द्वारा दिए गए हालिया बयानों और चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' के तहत बांग्लादेश में बढ़ती भागीदारी ने भारत की चिंता को बढ़ा दिया है। सुरक्षा विशेषज्ञ मानते हैं कि ढाका की बीजिंग से बढ़ती नजदीकी सिलीगुड़ी कॉरिडोर की सुरक्षा के लिहाज से चुनौतीपूर्ण हो सकती है। इसी संदर्भ में भारत ने क्षेत्र में अपने रक्षा ढांचे को और मज़बूत किया है। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने हाल ही में उत्तर बंगाल का दौरा कर सुरक्षा तैयारियों की समीक्षा की।

उन्होंने अग्रिम चौकियों का निरीक्षण किया और सेना के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सुरक्षा रणनीति पर विचार-विमर्श किया।

मथुरा की शाही ईदगाह को नहीं मान सकते मस्जिद

नई दिल्ली (एजेंसी)। मथुरा की शाही ईदगाह को मस्जिद के तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। इसकी वजह है कि यह भारतीय पुरातत्व विभाग के तहत संरक्षित स्थान है। हिंदू पक्ष ने यह दलील दी है, जिसके बाद मुस्लिम पक्ष सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। इस तरह मथुरा के शाही ईदगाह और कृष्ण जन्मभूमि विवाद ने रोचक मोड़ ले लिया है।

इस पर शीर्ष अदालत का कहना है कि वह इस बात का परीक्षण करेगी कि आखिर इस दावे की क्या वैधता है। दरअसल हाई कोर्ट ने हिंदू पक्ष की दलील के बाद इस मामले में एएसआई को भी पार्टी बनाने को कहा था। मुस्लिम पक्ष की याचिका सुनते हुए चीफ जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस पीवी संजय कुमार की बेंच ने हिंदू पक्ष को नोटिस जारी किया है। मुस्लिम पक्ष की अपील सुनते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा, जहां तक यह सवाल है कि क्या एएसआई संरक्षित स्थान का इस्तेमाल मस्जिद के तौर पर किया जा सकता है। इस मामले में कोई अंतरिम आदेश पारित नहीं किया जा सकता। आपने इस बारे में हाई कोर्ट को भी कुछ नहीं कहा। इस मामले को मेरिट के आधार पर ही सुना जाएगा। यही नहीं अदालत ने कहा कि हाई कोर्ट ने हिंदू पक्ष को अपनी याचिका में संशोधन करने की परमीशन दी है, जो पहली नजर में सही फैसला लगता है।

10 मुस्लिम परिवारों ने हिंदू धर्म में की घर वापसी

● शुद्धिकरण यज्ञ के बाद लोगों ने बरसाए फूल, जबरदस्त स्वागत

सहारनपुर (एजेंसी)। देवबंद के रहने वाले दस मुसलमानों ने इस्लाम धर्म छोड़कर सनातन धर्म में वापसी कर ली। यह घर गुरुवार को बघरा स्थित योग साधना यशवीर आश्रम में हुई। उन्होंने स्वामी यशवीर महाराज के सानिध्य में शुद्धिकरण यज्ञ करके सनातन धर्म अपनाया। उनका कहना है कि वे अपने पूर्वजों के धर्म में वापस आना चाहते हैं। उनके पूर्वजों ने लगभग 40-50 साल पहले किसी कारणवश इस्लाम धर्म अपना लिया था। गुरुवार की सुबह मुस्लिम परिवार स्वामी यशवीर जी महाराज के आश्रम पहुंचा। उन्होंने शुद्धिकरण यज्ञ करने और सनातन धर्म में वापसी करने की इच्छा जताई। यज्ञ के बाद सभी ने अपनी मर्जी से हिंदू नाम रखे। परिवार के सदस्यों ने बताया कि उनके पूर्वजों ने किसी समय सनातन धर्म छोड़ दिया था। अब वे अपनी जड़ों की ओर लौटना चाहते हैं। आश्रम के पीठाधीश्वर स्वामी यशवीर महाराज और आचार्य मृगेन्द्र ब्रह्मचारी ने मंत्रों के साथ शुद्धिकरण यज्ञ संपन्न कराया। मुस्लिम धर्म के इस परिवार ने पूरी श्रद्धा के साथ यज्ञ में घी और सामग्री की आहुतियां दी। परिवार के सभी दस सदस्यों ने अपने मुस्लिम नाम त्यागकर हिंदू नाम अपनाए। परिवार की मुखिया राजकुमारी कश्यप और मुखिया राजकुमाराव, साथ ही उनके बेटे बृजेश कश्यप ने इस घर वापसी पर खुशी जताई। यज्ञ पूरा होने के बाद, सदस्यों पर फूलों की वर्षा की गई। सनातन धर्म अपनाने पर उनका भव्य स्वागत किया गया।

राहुल गांधी को लखनऊ हाईकोर्ट से लगा झटका

200 रुपए जुर्माना-समन रद्द करने की मांग खारिज

लखनऊ (एजेंसी)। राहुल गांधी की याचिका लखनऊ हाईकोर्ट ने खारिज कर दी है। उन्होंने वीर सावरकर मानहानि मामले में लखनऊ की सेशन कोर्ट के समन आदेश और 200 रुपए जुर्माने को लेकर हाईकोर्ट में 2 अप्रैल को चुनौती दी थी। हाईकोर्ट ने उन्हें अल्टरनेट रेमेडी (वैकल्पिक उपाय) अपनाने का सुझाव देते हुए लखनऊ सेशन कोर्ट जाने को कहा है। दरअसल, 3 मार्च को लखनऊ की अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट कोर्ट ने लगातार पेशी से गायब रहने पर राहुल गांधी पर 200 रुपए जुर्माना लगाया था। चेतावनी दी थी कि 14 अप्रैल 2025 को अदालत में हाजिर हों।

रामनवमी रैली पर ममता सरकार को 'हाई' झटका

हिंदू संगठनों को रैली निकालने की मिल गई अनुमति

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता हाई कोर्ट से शुक्रवार को ममता बनर्जी सरकार को झटका लगा है। कोर्ट ने हिंदू संगठन अंजनी पुत्र सेना को हावड़ा में प्रस्तावित रूट पर रामनवमी की रैली निकालने की अनुमति दे दी है। शुरुआत में पश्चिम बंगाल सरकार ने इस रैली पर पिछले अदालती आदेशों के उल्लंघन होने का हवाला देते हुए आपत्ति जताई थी। कोर्ट ने मामले की सुनवाई करते हुए छह अप्रैल को होने वाली रामनवमी की रैली निकालने की इजाजत दे दी।

हालांकि, कोर्ट ने हिंदू संगठन को शांतिपूर्ण रैली सुनिश्चित करने के लिए कुछ सख्त शर्तें भी लगाई हैं।

हरियाणा के फ्लाइट लेफ्टिनेंट को पिता ने दी मुखाग्नि, रही भीड़

रेवाड़ी (एजेंसी)। हरियाणा में रेवाड़ी के शहीद फ्लाइट लेफ्टिनेंट सिद्धार्थ यादव को शुक्रवार (4 अप्रैल) को राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। पैतृक गांव भालखी माजरा में उनके पिता सुशील यादव ने 28 साल के शहीद बेटे की चिता को मुखाग्नि दी। अंतिम विदाई के दौरान भी एयरफोर्स की टुकड़ी ने हथियार उल्टे और फायर कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। फ्लाइट लेफ्टिनेंट 2 अप्रैल को जामनगर में हुए जगुआर क्रैश में शहीद हुए थे। शहीद होने से पहले उन्होंने अपने साथी की जान बचाई थी। आज सुबह ही उनकी पार्थिव देह रेवाड़ी में उनके नए घर लाई गई। जिसके बाद काफिले की शक्ल में उनकी अंतिम यात्रा निकाली गई। सिद्धार्थ की 10 दिन पहले ही सगाई हुई थी। अंतिम संस्कार के मौके पर उनकी मंगेतर भी श्मशान घाट में पहुंची। इस दौरान वह पार्थिव देह को देख रोती रहीं। इस दौरान वह बार-बार रोते हुए कहतीं रही कि प्लीज एक बार मुझे उसकी शक्ल दिखा दो। मंगेतर सानिया ने कहा कि मुझे सिद्धार्थ पर गर्व है। सिद्धार्थ की शादी 2 नवंबर को होनी थी। जिसके लिए घर में तैयारियां भी चल रही थीं। इस दौरान शहीद की माता सुशीला यादव बिलख रही थीं।

कांग्रेस को मंजूर नहीं वक्फ बिल, जाएगी सुप्रीम कोर्ट

पार्टी ने कसी कमर, वैधता को सुप्रीम कोर्ट में देगी चुनौती

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा के बाद राज्यसभा से भी वक्फ बोर्ड (संशोधन) विधेयक 2025 पास हो चुका है। हालांकि कांग्रेस को यह मंजूर नहीं है। देश की सबसे पुरानी पार्टी का कहना है कि बहुत जल्द इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाएगी और इसकी संवैधानिक वैधता को चुनौती देगी।

पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के जरिए इसकी जानकारी दी है। उन्होंने आगे कहा,हमें विश्वास है और हम मोदी

सरकार द्वारा भारतीय संविधान में निहित सिद्धांतों, प्रावधानों और प्रथाओं पर किए गए सभी हमलों का विरोध करते रहेंगे।

ममता को सत्ता में रहने का अधिकार नहीं, इस्तीफा दें

कोलकाता (एजेंसी)। भाजपा ने शुक्रवार को पश्चिम बंगाल शिक्षक भर्ती घोटाले मामले में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के इस्तीफे और उन्हें जेल भेजने की मांग की। केंद्रीय मंत्री और पश्चिम बंगाल भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने कहा दावा किया कि ममता बनर्जी शिक्षक भर्ती घोटाला मामले में जेल जाने वाली दूसरी मुख्यमंत्री होंगी। हरियाणा के चार बार मुख्यमंत्री रहे दिवंगत ओम प्रकाश चौटाला ऐसे ही एक मामले में 2013 में जेल गए थे। दरअसल, 3 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल के स्कूल भर्ती घोटाले से जुड़े कोलकाता हाईकोर्ट के फैसले को बरकरार रखा। इसमें एससीसी ने 2016 में 25 हजार शिक्षकों और गैर-शिक्षकों को नियुक्ति की थी। हाईकोर्ट ने इन नियुक्तियों को अवैध करार देते हुए कर्मचारियों को बर्खास्त किया था। कोर्ट के फैसले पर ममता ने कहा कि वे व्यक्तिगत रूप से सुप्रीम कोर्ट के फैसले को स्वीकार नहीं करती हैं। मजूमदार ने कहा- 26 हजार भर्ती में से करीब 20 हजार का चयन सही तरीके से हुआ, जबकि बाकियों टीएमसी नेताओं के किए घोटाले का फायदा मिला। भ्रष्टाचार में शामिल पूरे मंत्रिमंडल को जेल भेजा जाए।

● नए युग की शुरुआत, प्रधानमंत्री मोदी का संदेश

संसद में वक्फ विधेयक पारित होने पर जताई खुशी

बैंकॉक (एजेंसी)। बहुचर्चित वक्फ बिल गुरुवार देर रात संसद से पारित हो गया है। बिम्सटेक सम्मेलन में

भाग लेने के लिए विदेश दौरे पर गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को वक्फ संशोधन बिल के संसद में पारित होने को ऐतिहासिक लम्हा बताया। पीएम ने कहा कि इस बिल का पारित होना हमारे देश में सामाजिक- आर्थिक न्याय, पारदर्शिता और समावेशी विकास के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण है। थाईलैंड और श्रीलंका की यात्रा पर गए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि यह कानून विशेष रूप से उन लोगों की मदद करेगा जो लंबे समय से हाशिये पर हैं। कई तरीकों से उन लोगों को आवाज उठाने और बराबरी करने के अवसर से वंचित रखा गया है। एक्स पर पोस्ट करके पीएम ने साथियों को भी धन्यवाद दिया।

हिंदुओं की करें सुरक्षा, फालतू बयानबाजी से बचें

● मोहम्मद यूनुस के साथ बैठक में पीएम मोदी ने बांग्लादेश को दो टूक सुनाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। थाईलैंड में बिम्सटेक की बैठक में पीएम नरेंद्र मोदी और बांग्लादेश सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस के बीच आज बातचीत हुई। पड़ोसी देश की पुरजोर कोशिश के बाद हुई इस बैठक में भारत ने बांग्लादेश से कई मुद्दों पर बातचीत की। इस दौरान पीएम मोदी ने पड़ोसी देश में अल्पसंख्यकों खास तौर पर हिंदुओं की सुरक्षा का मसला उठाया। पीएम मोदी साथ ही बांग्लादेश को बयानबाजी बंद करने की नसीहत भी दे दी। भारत ने साथ ही बांग्लादेश को पूर्ण सहयोग और समर्थन देने का अपना वादा दोहराया। विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने कहा कि बैठक के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यक समुदाय की सुरक्षा की चिंता का खास तौर पर जिक्र किया। मिसरी ने कहा कि पीएम मोदी ने बैठक के दौरान हिंदुओं समेत अल्पसंख्यकों के मुद्दे को उठाया। मिसरी ने कहा कि भारत ने साथ ही लोकतांत्रिक, स्थायी, शांतिपूर्ण, प्रगतिशील और समावेशी बांग्लादेश का समर्थन का वादा किया।

यूनुस ने पीएम मोदी को गिफ्ट की खास तस्वीर- बैंकॉक में शुक्रवार को बिम्सटेक शिखर सम्मेलन के दौरान बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस और पीएम नरेंद्र मोदी के बीच एक खास मुलाकात हुई। इस अवसर पर प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक तस्वीर गिफ्ट के तौर पर दी। यह तस्वीर 3 जनवरी 2015 की है। इस दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 102वीं इंडियन साइंस कांग्रेस में प्रोफेसर यूनुस को गोल्ड मेडल दिया था। मुहम्मद यूनुस की तरफ से इस यादगार तस्वीर को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर किया गया है। प्रोफेसर यूनुस और प्रधानमंत्री मोदी बैंकॉक में द्विपक्षीय बैठक कर रहे थे। इसी दौरान प्रोफेसर यूनुस ने उन्हें यह पुरानी तस्वीर भेंट की।

शाह बोले-

सरकार हिंसा खत्म करने का रास्ता निकाल रही

खड़गे ने कहा-

मोदी बताएं, वहां क्यों नहीं गए

मणिपुर में 4 महीने से शांति, नहीं हुई कोई हिंसा

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को लोकसभा और राज्यसभा में मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगाने का प्रस्ताव पेश किया, जिसे दोनों सदन से मंजूरी मिल गई। लोकसभा में शाह ने कहा-दिसंबर से मार्च तक बीते चार महीनों से मणिपुर में कोई हिंसा नहीं हुई है। राहत कैंपों में खाने-पीने, दवाइयों और मेडिकल सुविधाएं सुनिश्चित की गई हैं। अमित शाह ने कहा- हाईकोर्ट के एक फैसले के बाद मणिपुर में दो समुदायों के बीच आरक्षण संबंधी विवाद के कारण जातीय हिंसा शुरू हुई। ये न तो दंगे हैं और न ही आतंकवाद। उन्होंने बताया कि इस हिंसा में 260 लोगों की मौत हुई। इनमें से 80 फीसदी मौतें पहले महीने में, जबकि बाकी मौतें बाद के महीनों में हुई। दरअसल, मई 2023 से मणिपुर में हिंसा शुरू हुई थी। 9 फरवरी को तत्कालीन मुख्यमंत्री एन बीरेन के इस्तीफा के बाद मणिपुर में 13 फरवरी को राष्ट्रपति शासन लगाया गया। नियम के तहत 2 महीने के भीतर सरकार को दोनों सदनों से राष्ट्रपति शासन को लेकर परमिशन लेनी पड़ती है। शाह ने कहा- मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद मैतेई और कुकी दोनों कम्युनिटी के बीच 13 बार बातचीत हुई। गृह मंत्रालय जल्द दिल्ली में एक संयुक्त बैठक करेगा। सरकार हिंसा को समाप्त करने का रास्ता खोजने के लिए काम कर रही है। खड़गे बोले- मणिपुर जल रहा, लेकिन मोदी वहां नहीं गए राज्यसभा में प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे ने कहा- मणिपुर जल रहा है, लेकिन पीएम मोदी वहां एक भी बार नहीं गए। राज्य में यौन हिंसा की घटनाएं हुई, फिर भी भाजपा चुप रही।

जातीय हिंसा केवल भाजपा सरकार में नहीं हुई- हिंसा नहीं होनी चाहिए और जातीय हिंसा को किसी राजनीतिक दल से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। विपक्ष यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि जातीय हिंसा हमारी सरकार के दौरान हुई। लेकिन 1993 से 1998 के बीच मणिपुर में नागा-कुकी संघर्ष 5 वर्षों तक चला, जिसमें 750 लोगों की मौत हुई। अगले 10 वर्षों तक छोटे-छोटे हमले होते रहे। 1993 से 1998 तक नागा-कुकी संघर्ष में 750 लोगों की जान गई थी। 1997-98 में कुकी-मैतेई संघर्ष में 352 लोगों की मौत हुई थी, 50 से ज्यादा गांव जला दिए गए थे और 40 हजार लोग विस्थापित हुए थे। वहीं, 1993 में मैतेई-पंगल संघर्ष में 100 से ज्यादा लोग मारे गए थे।

हिंसा भड़की लेकिन तुरंत कंट्रोल किया गया- हम मानते हैं कि ऐसे हादसे हमारे शासन के दौरान नहीं होने चाहिए, लेकिन एक दुर्भाग्यपूर्ण फैसले के कारण हिंसा भड़क उठी, जिसे तुरंत कंट्रोल कर लिया गया।

सीएम ने पं. माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के गौरव और हिन्दी पत्रकारिता के पुरोधा, राष्ट्रकवि पं. माखनलाल चतुर्वेदी की जयंती पर उन्हें नमन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उनकी लेखनी ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को नई ऊर्जा दी और राष्ट्रभक्ति की भावना को सशक्त किया। पुष्प की अभिलाषा, सिपाही, सागर खड़ा बेड़ियाँ तोड़े... जैसी उनकी अनेक कालजयी कृतियां भावी पीढ़ियों को त्याग एवं देशभक्ति के लिए अनुप्रेरित करती रहेंगी।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल 1889 को बाबई (नर्मदापुरम) में हुआ, जिसे अब उनके नाम पर माखननगर के नाम से जाना जाता है। पं माखनलाल चतुर्वेदी 'कर्मवीर' और 'प्रभा' के प्रतापी संपादक तथा राष्ट्रीय काव्यधारा के उन्नायक रहे। उन्हें सागर विश्वविद्यालय से वर्ष 1959 में डी.लिट. की मानद उपाधि से विभूषित किया है। इसके साथ ही वर्ष 1955 में काव्य संग्रह हिमतरंगिणी के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार और भारत सरकार से वर्ष 1963 में उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया गया। पं. चतुर्वेदी का 30 जनवरी 1968 को अवसान हुआ। भोपाल में पं माखनलाल चतुर्वेदी के नाम से राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय स्थापित है।

जनजातीय गौरव क्रांतिसूर्य टंट्या भील की जयंती पर किया याद

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने महान स्वतंत्रता सेनानी, जनजातीय गौरव व संस्कृति के रक्षक, क्रांतिसूर्य टंट्या मामा भील की जयंती पर नमन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनजातीय अस्मिता की रक्षा और माँ भारती की सेवा में सर्वस्व न्योछावर करने वाले क्रांतिसूर्य टंट्या मामा भील का अतुलनीय योगदान सर्वदा स्मरणीय रहेगा। उनके समर्पण, शौर्य और बलिदान की कहानियां, भावी पीढ़ियों को मातृभूमि की सेवा और अपनी संस्कृति व परंपराओं की रक्षा के लिए सदैव प्रेरित करती रहेंगी।

धार्मिक स्थानों की गरिमा बनाए रखने का प्रयास है शराब बंदी : सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जन भावनाओं का ध्यान रखते हुए धार्मिक स्थानों की पवित्र गरिमा को बनाए रखने के लिये शराब बंदी का प्रयास किया है, इसके लिये शासन ने भले ही राजस्व की हानि स्वीकार की है। राज्य शासन द्वारा प्रदेश के धार्मिक शहरों में शराबबंदी का निर्णय इसी दिशा में एक कदम है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के 17 से अधिक शहरों में शराब बंदी की घोषणा कर उसे क्रियान्वित भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल से दतिया रवाना होने से पहले मीडिया को जारी संदेश में यह विचार रखे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सुशासन की ओर अग्रसर हो रही हमारी सरकार पर जनता की सेवा

सुप्रसिद्ध अभिनेता मनोज कुमार के अवसान पर किया शोक व्यक्त

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सुप्रसिद्ध अभिनेता श्री मनोज कुमार के अवसान पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि यह फिल्म जगत, कला जगत के साथ-साथ देश की भी बड़ी क्षति है। अभिनेता श्री मनोज कुमार ने 'पूरब पश्चिम' और 'क्रांति' जैसी फिल्मों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक विरासत को जीवंत किया। उन्होंने अपनी फिल्मों के द्वारा देश की जड़ों से आमजन को जोड़ने का सार्थक प्रयास किया। उन्होंने न केवल देश के शहीदों का प्रभावशाली चित्रण किया, बल्कि निर्माता, निर्देशक और अभिनेता के रूप में भी सिनेमा में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। देश उनके योगदान को कभी भूल नहीं पाएगा।

भारत की बात सुनाने वाली आवाज हो गई खामोश : शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने भारत के सिनेमा जगत को राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत करने वाले महान अभिनेता, निर्माता-निर्देशक श्री मनोज कुमार के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि भारत की बात सुनाने वाली आवाज़ आज खामोश हो गई। उन्होंने कहा कि श्री मनोज कुमार का निधन भारतीय सिनेमा जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने अपने फिल्मों के माध्यम से देशभक्ति, संस्कृति और जन चेतना को नई ऊँचाइयाँ दीं। 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति' जैसी कालजयी फिल्मों से उन्होंने हर भारतीय के हृदय में देश के प्रति गर्व और सम्मान का भाव जगाया। वे वास्तव में 'भारत कुमार' थे।

मनोज कुमार का निधन सिनेमा जगत के लिए अपूरणीय क्षति : राज्यमंत्री लोधी

भोपाल (नप्र)। संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने प्रसिद्ध अभिनेता और फिल्म निर्देशक श्री मनोज कुमार के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया। उन्होंने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूँ....ये पंक्तियाँ जब भी दोहराई जायेंगी, महान अभिनेता मनोज कुमार का चेहरा सामने आयेगा...। अपनी बेहतरीन कला और देश भक्ति से ओतप्रोत फ़िल्मों से अपनी पहचान बनाने वाले कलाकार श्री मनोज कुमार के निधन का समाचार दुःखद है। श्री मनोज कुमार जी का जाना भारतीय सिनेमा जगत के लिए अपूरणीय क्षति है, उनकी फिल्में हमेशा दर्शकों में देशप्रेम की भावना को जागृत करती रहेंगी। राज्य मंत्री श्री लोधी ने ईश्वर से श्री कुमार को अपने श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना की है।

सभी बिजली कंपनियों में स्वास्थ्य बीमा योजना लागू करने का निर्णय

भोपाल (नप्र)। सभी बिजली कंपनियों में कार्यरत अधिकारी-कर्मचारियों के लिये स्वास्थ्य बीमा योजना लागू की जायेगी। यह कार्यवाही समय-सीमा में पूरी करें। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने यह निर्देश शुक्रवार को मंत्रालय में बिजली कंपनियों के कार्यों की समीक्षा के दौरान दिये।

टारगेट ओरिएंटेड करें कार्य- ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि पूरे वर्ष का टारगेट तय करें और उसी अनुरूप कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि मैं त्रैमासिक समीक्षा करूंगा। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि निर्धारित मापदंड के अनुसार कार्य करने वाले अधिकारियों को प्रोत्साहित किया जायेगा। साथ ही मापदंड अनुसार काम नहीं करने वाले अधिकारियों को दंडित किया जायेगा। इसी के आधार पर स्थानांतरण और पदोन्नति भी तय की जायेगी।

जल्द पूरी करें भर्ती प्रक्रिया- मंत्री श्री तोमर ने कहा कि जनरेशन कंपनी और ट्रांसमिशन कंपनी का नया ओ.एस. (संगठनात्मक संरचना) स्वीकृत हो चुका है। अतः भर्ती की प्रक्रिया जल्द पूरी करें। उन्होंने बिजली कंपनियों द्वारा गत वित्तीय वर्ष में किये गये उल्लेखनीय कार्यों के लिये बधाई भी दी। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि सभी कंपनियों की भर्ती एवं सेवा की

शर्तें एक समान होनी चाहिए। आउटसोर्स कर्मचारियों का भी ईपीएफ जमा होना चाहिए। ऐप के माध्यम से कर्मचारी ईपीएफ की जानकारी ले सकते हैं।

पीएम जन-मन और धरती आबा में स्वीकृत कार्य समय-सीमा में पूरा करें- मंत्री श्री तोमर ने कहा कि पीएम जन-मन और धरती आबा योजना में स्वीकृत कार्यों को समय-सीमा में पूरा करें। जन-मन योजना में 27 हजार 230 घरों में विद्युत कनेक्शन देने का लक्ष्य है। इसमें 17 हजार 739 घरों में विद्युत कनेक्शन दिये जा चुके हैं। तीनों विद्युत वितरण कंपनियां लॉइन लॉसेस कम करने के लिये सुनियोजित कार्ययोजना बनाएं। खराब ट्रांसफार्मर समय पर बदलें। न्यायालयीन प्रकरणों में सरकारी पक्ष मजबूती से रखें। विद्युत कटौती और मेंटेनेंस की जानकारी सोशल मीडिया में भी दें। उन्होंने आरडीएसएस योजना में स्वीकृत कार्यों की भी समीक्षा कर जरूरी निर्देश दिये।

मंत्री श्री तोमर ने कहा कि हम सब अधिकारी-कर्मचारी होने के साथ ही एक नागरिक भी हैं। अतः हमारा सामाजिक दायित्व भी है। इसका निर्वहन निष्ठा के साथ होना चाहिए। उन्होंने कहा कि गत वर्ष एक लाख पौधे लगाये गये थे, इनकी सुरक्षा की चिंता करें। साथ ही आगामी बरसात में पौध-रोपण की कार्ययोजना भी बना लें। अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री नीरज मंडलोई ने विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि 15 अप्रैल तक नये वित्तीय वर्ष की कार्ययोजना अनिवार्य रूप से बना लें। बैठक में एमडी पॉवर मैनेजमेंट कंपनी श्री अविनाश लवानिया, एमडी मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी श्री क्षितिज सिंघल, एमडी पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी श्री अनूप सिंह, एमडी जनरेशन कंपनी श्री मंजीत सिंह और एमडी ट्रांस्को श्री सुनील तिवारी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समावेशित शिक्षा का प्रबंध

स्कूल चलें हम अभियान में सीडब्ल्यूएसएन बच्चों का हो रहा है चिन्हांकन

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों 'चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड्स' (सीडब्ल्यूएसएन) की समावेशित शिक्षा का क्रियान्वयन राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा जिला शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से किया जा रहा है। चिन्हांकित बच्चों की प्रविष्टि केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के प्रबंध पोर्टल पर की जा रही है। प्रविष्टि के बाद इन बच्चों को उनकी आवश्यकता अनुसार सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। विशेष अभियान के अंतर्गत वर्ष 2022-23 में एक लाख 43 हजार 439, वर्ष 2023-24 में एक लाख 31 हजार 85 सीडब्ल्यूएसएन बच्चों का चिन्हांकन किया गया। वर्ष 2024-25 में चिन्हित बच्चों की प्रविष्टि का कार्य अंतिम चरण में है।

ब्रेल लिपि की पाठ्य-पुस्तकों का वितरण

प्रदेश में चिन्हित किये गये सीडब्ल्यूएसएन बच्चों को भोपाल की शासकीय ब्रेल प्रेस के माध्यम से ब्रेल लिपि में मुद्रित पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध कराई गई। राज्य के 322 विकासखंडों में आईईडी संस्थान तैयार कराये गये हैं। वर्ष 2024-25 में प्रत्येक जिले की एक शाला, जहां सीडब्ल्यूएसएन छात्रावास के दिव्यांग बच्चे अध्ययनरत हैं, वहां संसाधन केन्द्र तैयार कराने की कार्यवाही तेजी से की जा रही है।

दिव्यांग बच्चों को आर्थिक सहायता और प्रशिक्षण

प्रदेश में दिव्यांग बच्चों को परिवहन भत्ता और स्टायफंड समेत अन्य आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। इन बच्चों की शिक्षण व्यवस्था से लगे स्त्रोत सलाहकारों को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था भी स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा की गई है। इसके साथ ही दिव्यांग बच्चों के अभिभावकों, जिला परियोजना समन्वयकों एवं डाइट के प्राचार्यों का उन्मुखीकरण किये जाने के लिये विशेष प्रशिक्षण भी आयोजित किये गये। दिव्यांग बच्चों के चिकित्सीय मूल्यांकन के बाद उनकी आवश्यकता के उपकरण वितरण की कार्यवाही भी की गई। दिव्यांग बच्चों के समग्र विकास के लिये खेल-कूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी वर्ष 2024-25 में नवम्बर-दिसम्बर माह में संपन्न कराये गये। सीडब्ल्यूएसएन श्रेणी के बच्चों में ऐसे बच्चे जिन्हें गृह आधारित शिक्षा की आवश्यकता है, उन्हें 3 हजार 500 रूपये प्रति बच्चे के मान से टीएलएम किट प्रदान की गई।

वर्ष 2025-26 में सीडब्ल्यूएसएन बच्चों की मदद के लिये निर्देश

प्रदेश में नया शैक्षणिक-सत्र एक अप्रैल 2025 से शुरू हो गया है। विशेष आवश्यकता वाले (सीडब्ल्यूएसएन) बच्चों की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए 'स्कूल चलें हम' अभियान में इन बच्चों को चिन्हित करने के निर्देश मैदानी अमले को दिये गये हैं। सर्वेक्षण के बाद इन बच्चों की शिक्षा एवं उनसे जुड़े संसाधनों को पूरा करने के लिये कार्य-योजना तैयार की जायेगी।

राजेंद्र नगर में स्टेडियम का भूमिपूजन

खेल मंत्री विश्वास सारंग बोले- हर विधानसभा क्षेत्र में बनेगा आधुनिक खेल परिसर

भोपाल (नप्र)। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने नरेला विधानसभा के वार्ड 37, राजेंद्र नगर में नवीन स्टेडियम के निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि, राज्य सरकार खेलों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में एक आधुनिक खेल परिसर का निर्माण किया जाएगा।

मंत्री सारंग ने कहा कि, खेल और शारीरिक गतिविधियां युवाओं के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस स्टेडियम के निर्माण से क्षेत्र के नागरिकों को व्यायाम की सुविधा के साथ ही युवाओं को खेल सुविधाएं उपलब्ध होंगी, जिससे वे अपनी प्रतिभा को निखार सकेंगे। इस कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि, खेल संचालक राकेश गुप्ता, संयुक्त संचालक बी.एस. यादव, खेल प्रेमी एवं गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। मंत्री विश्वास सारंग ने राजेंद्र नगर में नवीन स्टेडियम के निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया। मंत्री सारंग ने कहा कि, यह स्टेडियम क्षेत्र के युवाओं और खेल प्रेमियों के लिए एक बड़ी सौगात है। यहां विभिन्न खेलों के लिए विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी, जिससे खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिलेगा। प्रदेश सरकार खेलों को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयासरत है और इसी क्रम में क्षेत्र में खेल मैदानों का उन्नयन किया जाएगा। साथ ही, क्लस्टर बनाकर नए खिलाड़ियों के निर्माण का प्रयास किया जाएगा।

स्टेडियम में दर्शकों के लिए विभिन्न सुविधाएं- मंत्री सारंग ने जानकारी दी कि स्टेडियम का निर्माण लगभग 8,000 वर्गमीटर क्षेत्र में किया जाएगा, जिसमें से लगभग 4,000 वर्गमीटर में खेल मैदान विकसित होगा। यह स्टेडियम खिलाड़ियों की विभिन्न आवश्यकताओं एवं नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। इसमें इंडोर बैडमिंटन कोर्ट, वॉलीबॉल कोर्ट, और मल्टीपरपज हॉल जैसी सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

समर वेकेशन के लिए 16 जोड़ी स्पेशल ट्रेनें

देश के 10 राज्यों की यात्रा के लिए म.प्र.के 32 स्टेशनों से सवार हो सकते हैं यात्री

भोपाल (नप्र)। गर्मियों में ट्रेनों में सीट नहीं मिल रही है तो रेलवे द्वारा 16 जोड़ी स्पेशल ट्रेनें चलाई गई हैं। ग्रीष्मकालीन छुट्टी और हनुमान जयंती मेले के मौके पर मध्य प्रदेश के यात्रियों के लिए रेलवे ने 16 जोड़ी विशेष ट्रेनों की शुरुआत की गई है। नियमित ट्रेनों में बढ़ती भीड़ को देखते हुए रेल प्रशासन ने इन विशेष ट्रेनों का संचालन शुरू किया है, ताकि यात्री आरामदायक और सुविधाजनक सफर कर सकें। ये ट्रेनें भोपाल मंडल के विभिन्न स्टेशनों से होकर गुजरेंगी। इसमें गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु सहित 10 राज्यों के अनेक स्टेशनों पर यह ट्रेनें रुकेंगी।

मध्य प्रदेश के 32 स्टेशनों के यात्री हो सकते हैं सवार- ये ट्रेनें भोपाल मंडल सहित राज्य के 23 स्टेशनों से होकर गुजरेंगी, इनमें प्रमुख स्टेशन जैसे भोपाल, इटारसी, जबलपुर, गुना, शिवपुरी, रानी कमलापति, नर्मदापुरम, हरदा, विदिशा, बीना, सतना, कटनी, उज्जैन, रतलाम, शाजापुर, पचोर रोड, बियावरा राजगढ़, रूठियाई, बदरवास, पिपरिया, नरसिंहपुर, गाडरवारा, मक्सी जंक्शन, संत हिरदाराम नगर, मैहर, नागदा जंक्शन, अशोक नगर, मुंगावली, मंडी बामौरा, कोलारस, गंज बासौदा और चाचौड़ा बीनागंज शामिल हैं।

09117/09118 उधना-सुबेदारगंज-उधना होली विशेष ट्रेन

विवरण: उधना से सुबेदारगंज तक का सफर और वापसी, कुल 17-17 फेरे। उधना से हर गुरुवार सुबह 5:45 बजे यह ट्रेन रवाना होगी और अगले दिन सुबह 8:40 बजे सुबेदारगंज पहुंचेगी। वापसी में सुबेदारगंज से हर शुक्रवार शाम 7:25 बजे चलकर अगले दिन शाम 8:15 बजे उधना पहुंचेगी।

संचालन अवधि: 4 अप्रैल से 27 जून तक।

ठहराव: उधना जंक्शन, भरूच जंक्शन, वडोदरा जंक्शन, दाहोद, रतलाम जंक्शन, उज्जैन जंक्शन, मक्सी जंक्शन, शाजापुर, पचोर रोड, बियावरा राजगढ़, रूठियाई जंक्शन, गुना, बदरवास, शिवपुरी, ग्वालियर जंक्शन, मलानपुर, सोनी, भिंड, इटावा जंक्शन, गोविंदपुरी, फतेहपुर, सुबेदारगंज।

09045/09046 उधना-पटना-उधना होली विशेष ट्रेन

विवरण: उधना से पटना की यात्रा और वापसी के लिए 17-17 ट्रिप। उधना से हर गुरुवार सुबह 8:35 बजे रवाना होकर यह ट्रेन अगले दिन सुबह 10:30 बजे पटना पहुंचेगी। वापसी में पटना से हर शनिवार दोपहर 1:05 बजे चलकर अगले दिन दोपहर 2:50 बजे उधना पहुंचेगी।

संचालन अवधि: 4 अप्रैल से 28 जून तक।

ठहराव: उधना जंक्शन, नंदुरबार, जलगांव जंक्शन, भुसावल जंक्शन, खंडवा जंक्शन, इटारसी जंक्शन, पिपरिया, नरसिंहपुर, जबलपुर, कटनी, सतना, मानिकपुर जंक्शन, प्रयागराज छिवकी, पं. दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर, आरा, पटना जंक्शन।

09411/09412 अहमदाबाद-ग्वालियर-अहमदाबाद होली विशेष ट्रेन

विवरण: अहमदाबाद से ग्वालियर और वापसी के लिए 18-18 फेरे। अहमदाबाद से हर शनिवार रात 8:25 बजे यह ट्रेन रवाना होगी और अगले दिन दोपहर 1:00 बजे ग्वालियर पहुंचेगी। वापसी में ग्वालियर से हर रविवार शाम 4:30 बजे चलकर अगले दिन सुबह 9:05 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी।

प्रॉपर्टी 10 लाख से ज्यादा, आधे ही चुका रहे टैक्स

भोपाल में 3 महीने होगी प्रॉपर्टी की जांच, अध्यक्ष बोले- यह निगम का हक

भोपाल (नप्र)। भोपाल में अब ऐसी प्रॉपर्टी की पहचान होगी, जिसका टैक्स नगर निगम को नहीं चुकाया जा रहा। 3 महीने के अंदर सभी जोन और वार्ड प्रभारी सर्वे करेंगे। फिर निगम कमिश्नर हरेंद्र नारायण को रिपोर्ट सौंपेंगे। इसे लेकर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने आसंदी से निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि यह निगम का हक है।

बता दें कि भोपाल में निगम ने प्रॉपर्टी टैक्स पर 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। यह टैक्स का बोझ 5.62 लाख उपभोक्ताओं पर पड़ा है। उदाहरण के तौर पर समझे कि एक हजार स्क्वायर फीट के फ्लैट में अभी सालाना 3200 रुपए टैक्स लग रहा है तो अब यह 3500 रुपए से ज्यादा चुकाना होगा, लेकिन लाखों प्रॉपर्टी ऐसी भी हैं, जिनका टैक्स नहीं दिया जा रहा, या फिर उनकी वैल्यू टैक्स स्लैब में कम है। इन्हें ही अब ढूंढा जाएगा।

ऐसे समझे सर्वे का आधार

निगम के मुताबिक, भोपाल में कर योग्य 10 लाख से ज्यादा प्रॉपर्टी है, लेकिन टैक्स चुका रहे सिर्फ 5.62 लाख। यानी, आधी प्रॉपर्टी का टैक्स नहीं चुकाया जा रहा। सर्वे में पता लगाया जाएगा कि किसी मकान की पुराने क्षेत्रफल के हिसाब से टैक्स वसूली हो रही है, जबकि कुछ सालों में इसका क्षेत्रफल बढ़ गया।

मैदान में उतरेगा अमला

निगम को इस बार प्रॉपर्टी टैक्स के रूप में कम राशि मिली है। इस वजह से अब राजस्व अमला एक बार फिर मैदान में उतरेगा और प्रॉपर्टी की जांच करेगा।

345 संस्थाओं को 25 हजार से 2 लाख रुपए तक

निगम के बजट में कुल 345 सामाजिक या धार्मिक संस्थाओं को अनुदान के रूप में 25 हजार से 2 लाख रुपए तक सालाना दिए जाने का प्रावधान किया गया है। इन्हें बेवजह राशि देने का मुद्दा कांग्रेस पार्षदों ने भी उठाया। कहा कि जनता के टैक्स से निगम का संचालन होता है और यही पैसा संस्थाओं को बांटा जा रहा है। इसे तुरंत रोका जाए। जांच की जाए कि संस्था सक्रिय है या निष्क्रिय? निगम अध्यक्ष सूर्यवंशी ने आसंदी से जांच करने का भरोसा दिलाया।

जनप्रतिनिधियों की हो गई बल्ले-बल्ले, निधि दोगुनी हुई

भोपाल नगर निगम के बजट में जल, प्रॉपर्टी और ठोस एवं अपशिष्ट पर टैक्स बढ़ाने के साथ कुछ ऐसे फैसले भी लिए गए, जिन्होंने सबको चौंका दिया। शहर सरकार ने जनता पर टैक्स का बोझ डाला है तो दूसरी तरफ जनप्रतिनिधि यानी, पार्षद, एमआईसी मेंबर, अध्यक्ष और महापौर की सालाना निधि दोगुनी कर दी गई है। जैसे- पार्षद की निधि पहले 25 लाख रुपए थी, जो अब 50 लाख रुपए हो गई। महापौर की 5 की जगह 10 करोड़ रुपए निधि की गई है।

बसें है नहीं, स्मार्ट पास किसे देंगे?

महापौर मालती राय ने सिटी बसों के लिए महापौर स्मार्ट पास शुरू करने की घोषणा की हे, लेकिन भोपाल में पब्लिक ट्रांसपोर्ट की स्थिति ठीक नहीं है। वर्तमान में 100 बसें भी सड़कों पर नहीं दौड़ रही है, जबकि नौ महीने पहले तक इनकी संख्या 368 तक पहुंच गई थी। ऐसे में महापौर स्मार्ट पास किस काम का? यह सोचने का विषय है।

'विश्वरंग फाउण्डेशन' की पहल पर पोडियम टीम के युवा फिल्मकारों ने संजोयी लोक विरासत

भोपाल। लोक संस्कृति और परंपरा के बहुरंगी पर्व गणगौर पर केन्द्रित लघु फिल्म 'गणगौर गाथा' इन दिनों आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। विश्वरंग फाउण्डेशन के लिए इस अनूठे चलचित्र का निर्माण युवा फिल्मकार आदित्य उपाध्याय के निर्देशन में 'द पोडियम' टीम ने किया है। 'गणगौर गाथा' की विशेष स्क्रिनिंग 13 अप्रैल को शाम 5:30 बजे तुलसी नगर स्थित नर्मदा सभागार में की जाएगी। पोडियम टीम, युवा सिनेकर्मियों तथा कलाकारों का रचनात्मक समूह है जो सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक सरोकारों के उद्देश्यपूर्ण फिल्मांकन के लिए सक्रिय है। गत वर्ष इस टीम ने 'गणगौर पर्व' के अवसर पर मध्यप्रदेश के पूर्व और पश्चिम निमाड़ के गाँव-देहातों की सांस्कृतिक यात्रा की। इस दौरान इस

पर्व से जुड़े अनुष्ठान, तथा पारंपरिक नृत्य-संगीत और अन्य संलग्न गतिविधियों का वास्तविक फिल्मांकन किया। संस्कृतिकर्मी-साहित्यकार संतोष चौबे के मुख्य मार्गदर्शन में निर्मित इस फिल्म की परिकल्पना और शोध आलेख के साथ ही वाचक स्वर संस्कृतिकर्मी-कला समीक्षक विनय उपाध्याय का है। इस फ़िल्म का वीडियो संपादन निखिल कुमार अरमान आर्य सिन्हा तथा अभिषेक कनौजिया ने किया है। छायांकन अनिरूद्ध चौथमल, आशीर्वाद मंडल और हेमांग कुरील का है। ध्वन्यांकन तनिष्क भूरिया ने किया है जबकि कोरियोग्राफ़ी लोक नर्तक संजय महाजन की है।

यह फ़िल्म बताती है कि एक सिरे पर आध्यात्म के गहरे रंग, अनुष्ठान की पवित्रता, पूजा-प्रार्थना और निवेदन तो दूसरे सिरे पर लोकरंजन में आकंठ डूबा तन-मन एक आदिम सुख की इच्छा से भरकर गणगौर में थिरकने लगता है। दूसरे सिरे पर रनुबाई यानी निमाड़ की स्त्री को ही अधिष्ठात्री देवी मानकर उसका गुणगान किया जाता है। गीत की कड़ियों और लय की लड़ियों में लहराते संगीत तो यहाँ दूर देश को ब्याही रनुबाई की अपनी सखियों के संग ठिठोली है, तो प्रेम, ममत्व, करूणा, वात्सल्य और वियोग भी है।

यह फ़िल्म लोकपर्व के उन महत्वपूर्ण पक्षों को भी सामने लाती है जहाँ धर्म, संस्कृति, विज्ञान और अध्यात्म मिलकर मनुष्यता का उत्सवी रूपक बन जाते हैं। यह जीवंतता हमें ऐतिहासिक अनुभव की ओर ले जाती है। जीवन, प्रकृति और संस्कृति को हम एक ही डोर में बंधा पाते हैं। गीत, संगीत और नृत्य की रेशमी झालरों से सजा जीवन का रंगमहल यहाँ अलग ही चहक-महक से भरा है।

चैत्र महीने के दसवें दिन से आगामी नौ दिनों तक मध्यप्रदेश के निमाड़ की धरती गणगौर की धन्यता को गाने मचल उठती है। इन गीतों में स्मृतियों की दुनिया खुलती है। स्त्री की सृजन शक्ति, उसकी अभिलाषाएँ, उसके सरोकार, उसकी नियति और दैवीय महिमा के दिव्य स्वरूपों को जीवन्त होता देखा जा सकता है। इन गीतों की गुंजार बिखरती है तो देह अनायास ही थिरक उठती है।

आदित्य उपाध्याय फ़िल्म प्रॉडक्शन में स्नातकोत्तर हैं। उनकी शॉर्ट फ़िल्म 'लेटर बॉक्स' का चयन चित्र भारती अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव के लिए हुआ है। उन्होंने महेश्वर और मांडू के पुरातात्विक वैभव, साहित्य तथा कलाओं के अंतरराष्ट्रीय महोत्सव 'विश्वरंग' और रबीन्द्रनाथ टैगोर के कृती-व्यक्तित्व पर एकाग्र लघु फ़िल्मों का निर्माण स्वयं के निर्देशन में किया है।

संपादकीय

वक्फ बिल : विरोध अब मजबूरी

बहुचर्चित वक्फ संशोधन विधेयक मोदी सरकार ने लोकसभा व राज्यसभा दोनों सदनों में बहुमत से पारित करवा लिया है। बिल पर राष्ट्रपति के हस्ताक्षर होते ही यह कानून बन जाएगा। इस बिल के पारित होने से जहां सत्तारूढ़ एनडीए की एकजुटता रेखांकित हुई, वहीं इस बिल का विरोध करने वाले विपक्ष की तर्क दारिद्रता भी उजागर हुई। एनडीए एकजुट रहा तो इसका मुख्य कारण मोदी सरकार को समर्थन दे रही दो मुख्य पार्टियां जेडीयू व टीडीपी द्वारा सुझाए संशोधनों को सरकार द्वारा मान्य कर लेना है। इसमें मुख्य है नए कानून को भूतलक्षी प्रभाव न लागू करना तथा वक्फ बोर्ड में किसी गैर मुस्लिम को न रखना। इसके पहले जेपीसी में वक्फ कानून से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा हो चुकी थी। दोनों सदनों में विपक्ष के संशोधनों को अस्वीकार कर दिया गया। नए संशोधित वक्फ कानून बन जाने के बाद केन्द्र व राज्य सरकारों के सामने असली चुनौती का दौर शुरू होगा। क्योंकि बिल वापस कराने में असफल रहने के बाद विपक्षी दल अब कानूनी और सड़क की लड़ाई का सहारा ले रहे हैं। मुल्ला मौलवियों के आह्वान पर शुक्रवार को जुमे की नमाज के बाद देश के कई शहरों में विरोध प्रदर्शन किया। यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा। दूसरी तरफ कांग्रेस, जिसने दोनों सदनों में बहुत मुखरता से बिल का विरोध नहीं किया अब मुस्लिम वोट बैंक बचाने के लिए बिल के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जा रही है। सुप्रीम कोर्ट बिल पर क्या रुख अपनाता है, यह अभी नहीं कहा जा सकता। दरअसल इस बिल पर दोनों सदनों में चली करीब 24 घंटे की चर्चा में विपक्षी पार्टियां बिल को वापस लेने के पक्ष में कोई भी ठोस तर्क प्रस्तुत नहीं कर सकीं, सिवाय इसके कि अपने मुस्लिम वोट को बचाने की चिंता के। सबसे हैरानी की बात तो नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, लोकसभा में मुस्लिम बहुल वायनाड सीट से सांसद प्रियंका गांधी और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का रवैया रहा। इतने महत्वपूर्ण बिल पर सदन में इनमें से कोई कुछ नहीं बोला। यहां तक राज्यसभा में सांसद श्रीमती सोनिया गांधी ने भी बिल का विरोध कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में किया। कांग्रेस की तरफ दूसरी पंक्ति के नसीर हुसैन और इमरान प्रतापगढ़ी ने जरूर प्रभावी भाषण दिए लेकिन उसमें बिल की कानूनी खामियां उजागर करने के बजाए गैर जरूरी बातें ज्यादा थीं। खुद को मुसलमानों का खैरख्वाह समझने वाली समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ते बिल पर बोलने की जगह हल्का फुल्का हास्य व्यंग्य ही करते रहे। एआईएमआईएम के असदुद्दीन ओवैसी के भाषण में इस बिल के लाने से मुसलमानों के हक छिन जाने की काल्पनिक आशंकाएं ज्यादा थीं। दूसरी तरफ सत्ता पक्ष के वक्ताओं ने बिल पर सकारात्मक बातों पर जोर दिया। उनकी तैयारी अच्छी थी। सदन में लड़ाई हार जाने के बाद मुस्लिम नेता अब विरोध सड़कों पर कर रहे हैं। इसके पीछे मुल्ला मौलवियों के भड़काऊ भाषण ज्यादा हैं। अभी भी ज्यादातर मुसलमानों को यह पता ही नहीं है कि बिल में वास्तव में है क्या? उन्हें तो बताया जा रहा है, उसी पर वो विश्वास कर रहे हैं। पश्चिम बंगाल और बिहार में इस बिल के विरोध के पीछे राजनीति ज्यादा है। अलबत्ता बिहार में मुसलमान सत्तारूढ़ जेडीयू से नाराज हो गए हैं। उसके तीन मुस्लिम नेताओं ने तो पार्टी से इस्तीफा भी दे दिया है। बावजूद इसके मुसलमानों के पास विकल्प सीमित हैं। वो ये भूल रहे हैं कि मुसलमान जितना इस बिल का विरोध करेंगे, प्रतिक्रिया में हिंदू वोट उतना ही लामबंद होता जाएगा। भाजपा चाहती भी यही है और विपक्षी पार्टियां इस जाल में उलझती जा रही हैं।

डिजिटल मीडिया अब सिर्फ एक विकल्प नहीं

नजरिया

अमन नम्र

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

तेजी से बढ़ती तकनीकी प्रगति और बदलते उपभोग पैटर्न के दौर में, भारत में डिजिटल मीडिया का उदय किसी क्रांति से कम नहीं है। पारंपरिक टेलीविजन, जिसे अक्सर 'बुद्धू बक्सा' कहा जाता है, अपनी जगह खोता जा रहा है। डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म न केवल दर्शकों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं, बल्कि मीडिया परिदृश्य को भी नया आकार दे रहे हैं। व्यवसायियों की संस्था 'फिक्की-ईवाई' की एक हालिया रिपोर्ट बताती है कि भारत का डिजिटल मीडिया उद्योग 17 प्रतिशत की प्रभावशाली दर से बढ़ रहा है और 2025 तक 802 अरब रुपयों तक पहुंच जाएगा। यह एक महत्वपूर्ण बदलाव है, जिसमें डिजिटल मीडिया अब समग्र मीडिया और मनोरंजन में 32 प्रतिशत का योगदान देता है, लेकिन टेलीविजन उद्योग के लिए इस वृद्धि का क्या मतलब है और यह परिवर्तन अभी क्यों हो रहा है?

जब भारत के सबसे सम्मानित पत्रकारों में से एक रवीश कुमार ने तीन साल पहले 'एनडीटीवी' से इस्तीफा देते वक्त अपने दर्शकों से टेलीविजन देखना बंद करने के लिए कहा था, तो कई लोगों ने इसे भारतीय मीडिया की स्थिति से निराश व्यक्ति का एक सनकी बयान माना था। फिर भी, रवीश खुद इस बात का जीता-जागता उदाहरण बन गए कि कैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म न केवल एक विकल्प, बल्कि मीडिया जुड़ाव के लिए एक ज़्यादा मुनाफ़े वाला और विश्वसनीय ज़रिया पेश कर सकते हैं। 'एनडीटीवी' में अपनी भूमिका से लेकर अपना खुद का 'यू-ट्यूब' चैनल शुरू करने तक, रवीश कुमार की आय और प्रभाव दोनों में वृद्धि डिजिटल मीडिया की शक्ति का प्रमाण है।

तो, टेलीविज़न के साथ क्या ग़लत हुआ? जबकि टीवी कभी सार्वजनिक चर्चा को आकार देने में प्रमुख शक्ति था, लेकिन यह दर्शकों की बदलती प्राथमिकताओं के अनुकूल होने से खुद को दूर करता चला गया। 'बुद्धू बक्सा' उपनाम, जिसे कभी एक मज़ाक के रूप में देखा जाता था, अब उन लाखों लोगों की भावनाओं को दर्शाता है जिनका लगभग हर टीवी न्यूज चैनल पर लगातार चल रहे सनसनीखेज, एजेंडा-संचालित प्रसारण से मोहभंग हो चुका है। कॉरपोरेट समर्थित टीवी चैनल, अपने अति-पक्षपातपूर्ण एंकर और चीखती-चिल्लाती, कई बार मार-पीट तक में तब्दील होती बहसों के साथ, अपने दर्शकों की ज़रूरतों और इच्छाओं से जुड़े रहने में विफल रहे। जैसे-जैसे टीवी समाचार तथ्य-आधारित रिपोर्टिंग से रेटिंग बढ़ाने के लिए आवेशित चर्चाओं में तब्दील हुआ, इसने अपनी विश्वसनीयता और प्रासंगिकता खोना शुरू कर दिया।

इसके विपरीत, डिजिटल मीडिया का विकास ठीक इसी वजह से हुआ है क्योंकि यह ज़्यादा व्यक्तिगत और संवाद के अनुभव प्रदान करता है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म कंटेंट क्रिएटर्स को खास दर्शकों को ध्यान में रखकर ज़्यादा सार्थक, विविधतापूर्ण और गहन कंटेंट बनाने की अनुमति देते हैं। चाहे वह 'यू-ट्यूब' पर खोजी पत्रकारिता हो या विशेष समाचार वेबसाइट। ये सभी अब देश की नब्ज़ पहचान रहे हैं, आम नागरिकों से जुड़े ऐसे मुद्दों पर ध्यान दे रहे हैं जिन्हें अक्सर मुख्यधारा के मीडिया द्वारा दरकिनार कर दिया जाता है।

भारत में इंटरनेट की पहुंच का विस्तार, साथ ही किफायती स्मार्टफोन का प्रसार, इस वृद्धि का एक प्रमुख कारण रहा है। 2023 तक, भारत में 80 करोड से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता थे, जिनमें एक बड़ा प्रतिशत मोबाइल उपकरणों के माध्यम से सामग्री तक पहुँच रहा था। इसने वीडियो स्ट्रीमिंग, पॉडकास्ट और उपयोगकर्ता-जनित सामग्री सहित नए मीडिया प्रारूपों के फलने-फूलने का मार्ग प्रशस्त किया है। 'यू-ट्यूब,' 'इंस्टाग्राम' और 'वाट्सएप' जैसे प्लेटफ़ॉर्म केवल मनोरंजन के स्रोत नहीं हैं; वे समाचार प्रसार, सामाजिक जुड़ाव और सक्रियता के लिए आवश्यक उपकरण बन गए हैं।

चूँकि पारंपरिक टीवी नेटवर्क उच्च-लागत वाले प्रसारण ढांचे पर निर्भर रहता है, इसलिए डिजिटल प्लेटफॉर्म सस्ते और चुस्त विकल्प के रूप में उभरे हैं। डिजिटल मीडिया का लचीलापन इसे विभिन्न प्रकार के दर्शकों को संतुष्ट करने की सुविधा देता है, जिससे यह अधिक समावेशी और विविध बन जाता है। चाहे 'यू-ट्यूब' पर लंबे-चौड़े वृत्तचित्र हों या सोशल मीडिया पर त्वरित अपडेट, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म युवा, तकनीक-प्रेमी दर्शकों की आदतों के अनुकूल होते हैं।

पिछले एक दशक में, अनगिनत 'यू-ट्यूब' चैनलों, ब्लॉग और स्वतंत्र मीडिया संगठनों ने महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डाला है। दलितों और आदिवासियों के अधिकार, सरकारी भ्रष्टाचार, श्रम अधिकार, पर्यावरण प्रदूषण और जल, जंगल, जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के मुद्दे। ये डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म अक्सर पारंपरिक मीडिया आउटलेट की तुलना में बहुत कम संसाधनों के साथ काम करते हैं, फिर भी आम लोगों की कहानियों को उजागर करके शक्तिशाली संस्थानों को जवाबदेह ठहराने की उनकी क्षमता ने आधुनिक मीडिया परिदृश्य में उन्हें अपरिहार्य बना दिया है।

टीवी चैनल के व्यावसायिक हितों के मुकाबले डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने हाशिए के समुदायों-आदिवासियों, दलितों, किसानों, अल्पसंख्यकों और महिलाओं के संघर्षों को सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया है। पैरवी और बदलाव में डिजिटल मीडिया की भूमिका जैसे-जैसे बढ़ती जा रही है, सामाजिक और राजनीतिक अभिव्यक्ति को आकार देने में इसकी भूमिका अधिक स्पष्ट होती जा रही है। अब जबकि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने विविध आवाज़ों और एजेंडों के लिए सफलतापूर्वक जगह बना ली है, तो समय आ गया है कि ये प्लेटफ़ॉर्म सिर्फ़ रिपोर्टिंग से आगे बढ़कर वकालत में सक्रिय भागीदार बनें।

सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक जहां डिजिटल मीडिया प्रभाव डाल सकता है, वह है जनमत को संगठित करना और नीति परिवर्तन के लिए दबाव डालना। भारत- जल-संरक्षण और कृषि भूमि की बदहाली से लेकर महिलाओं की सुरक्षा और युवाओं के लिए रोज़गार के अवसर पैदा करने तक कई मुद्दों से जूझ रहा है, जबकि टीवी पर होने वाली बहसें अक्सर सनसनीखेज होती हैं। ऐसे में डिजिटल मीडिया अभियान आयोजित करने, गठबंधन बनाने और नीति निर्माताओं पर कार्रवाई करने के लिए दबाव बनाने में कारगर भूमिका निभा सकता है।

इसके अलावा, डिजिटल मीडिया भारतीय समाज में व्याप्त विभाजनकारी आख्यानों को खत्म करने की एक ताकत हो सकती है, खासकर धार्मिक और जाति-आधारित विभाजन से जुड़े मुद्दों पर। मुख्यधारा के टीवी ने अक्सर इन विभाजनों को गहरा करने में योगदान दिया है, जिसमें एंकर डर और नफ़रत को बढ़ावा देने वाले एजेंडे को आगे बढ़ाते हैं। दूसरी ओर, डिजिटल मीडिया में एकता, सहिष्णुता और समावेशिता को बढ़ावा देने वाले प्रति-आख्यान प्रस्तुत करने की क्षमता है। यह ऐसी नीतियों की वकालत कर सकता है जो जाति, धर्म या आर्थिक स्थिति से परे समाज के सभी वर्गों को लाभ पहुंचाती हों। डिजिटल मीडिया की जिम्मेदारियां बढ़ती जा रही हैं

डिजिटल मीडिया के लिए अगला कदम अपने दृष्टिकोण को परिष्कृत करना और दर्शकों के साथ और भी मज़बूत संबंध बनाने पर ध्यान केंद्रित करना है। उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह सटीक, सहानुभूति-पूर्ण और साक्ष्य-आधारित वकालत के साथ मुद्दों को प्रस्तुत करे। 'फिक्की-ईवाई' की रिपोर्ट डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म को सामाजिक परिवर्तन का वाहक बनने पर प्रकाश डालती है। महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करके-जैसे कि रोज़गार सृजन, महिलाओं की सुरक्षा, शिक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता - डिजिटल मीडिया सशक्त नागरिक बनाने में योगदान दे सकता है।

डिजिटल मीडिया को सिर्फ़ राजस्व और दर्शकों की संख्या के आधार पर नहीं मापा जाएगा, बल्कि एक ज़्यादा समतापूर्ण और न्यायपूर्ण समाज को आकार देने की इसकी क्षमता से भी मापा जाएगा। जैसे-जैसे डिजिटल मीडिया उद्योग आगे बढ़ेगा, लोकतांत्रिक संस्थानों को जवाबदेह बनाने और देश की बड़ी चुनौतियों के समाधान प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। अब समय आ गया है कि डिजिटल मीडिया सिर्फ़ एक विकल्प के तौर पर ही नहीं, बल्कि मीडिया के भविष्य के तौर पर भी आगे आए। (सप्रेस)

परस्पर सम्मान, समन्वय, सामंजस्य का राष्ट्रीय जन जागरण अभियान

भारतीय भाषा सत्याग्रह

विजयदत्त श्रीधर

(लेखक माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र के संस्थापक संयोजक हैं)

भारत की स्वाधीनता को संपूर्णता प्रदान करने के लिए भारत में भाषा- स्वराज अपरिहार्य है। 'अपनी भाषा पर अभिमान, सब भाषाओं का सम्मान' के सामंजस्यपूर्ण उद्घोष के साथ भोपाल से भारतीय भाषा सत्याग्रह का राष्ट्रीय अभियान आरंभ होगा। माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल की इस पहल को अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा का अनुमोदन और सहभागिता प्राप्त है। मध्यप्रदेश में श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति इंदौर, मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल, तुलसी मानस प्रतिष्ठान, भोपाल, गांधी भवन न्यास, भोपाल और मध्यप्रदेश लेखक संघ, भोपाल इस अभियान में सहभागी हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के आणन्द में संपन्न 76वें अधिवेशन में 23 मार्च, 2025 को सर्वसम्मति से भाषा-स्वराज का प्रस्ताव स्वीकार किया गया है। इसका मूल मंत्र है- संकल्प का विकल्प नहीं होता। अर्थात मूल राजभाषा अधिनियम का अनुपालन हो।

सप्रे संग्रहालय के संस्थापक विजयदत्त श्रीधर ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में शिक्षा में भाषा विषयक प्रावधान बहुत स्पष्ट हैं। इसमें मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा तथा समुन्नत प्रादेशिक भाषाओं और हिन्दी में उच्चतर शिक्षा की व्यवस्था है। यह सभी भारतीय भाषाओं को महत्व और समतुल्य सम्मान देती है। राजनीतिक स्वार्थ और सत्तास के दुष्चक्र में भाषा के सवाल को जिस तरह उलझाया गया है, उसमें समाधान का मार्ग राष्ट्रीय संकल्प से ही निकल सकता है। भारतीय भाषाओं के बीच परस्पर सम्मान और सौहार्द्र से यह गुत्थी सुलझ सकती है। टालमटोल की रीति-नीति से गुत्थी और अधिक उलझ रही है। 'स्किल' के रूप में अंग्रेजी और अन्य प्रमुख विश्व भाषाओं के पठन-पाठन से कोई असहमति नहीं है। परंतु राजभाषा के रूप में अंग्रेजी कतई स्वीकार्य नहीं हो सकती। अपनी राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा होता है। जबकि विदेशी राजभाषा का होना गुलामी का कारक होता है। शिक्षा के माध्यम, प्रशासनिक काम-काज, संसदीय कार्य व्यवहार और न्यायालयों की भाषा के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग तत्काल प्रभाव से समाप्त किया जाए।

भारतीय भाषा सत्याग्रह के सूत्र इस प्रकार हो सकते हैं-

1. भाषा राष्ट्र की अस्मिता, संस्कृति की संवाहक और नागरिकों का स्वाभिमान होती है। वस्तुतः भाषा समाज की सामूहिक थाती होती है। अतः समाज का ही दायित्व होता है कि वह अपनी भाषा के गौरव पर आँच न आने दे।

2. हर भारतीय अपनी भाषा पर अभिमान रखे। अन्य भारतीय भाषाओं का सम्मान करे।

3. राजभाषा का प्रावधान निम्नलिखित अनुसार कार्यान्वित होना चाहिए-

3.1 भारत की राजभाषा संविधान में मूलरूप से किए गए प्रावधान के अनुसार हिन्दी हो।

3.2 अंग्रेजी का राजभाषा के रूप में स्थान न हो।

3.3 सभी हिन्दी प्रदेशों की राजभाषा हिन्दी हो।

3.4 आठवीं अनुसूची में सम्मिलित अन्य भारतीय भाषाएँ अपने-अपने प्रदेशों की राजभाषा हों। ऐसे राज्यों में द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का स्थान हो।

3.5 भारत सरकार के राजभाषा विभाग में सभी भारतीय भाषाओं के अनुवाद की सक्षम व्यवस्था हो। हिन्दीतर प्रदेशों से उनकी राजभाषा में आने वाले पत्रों और सभी पत्रकों, प्रस्तावों,

प्रतिवेदनों आदि के त्वरित और प्रामाणिक अनुवाद की प्रभावी प्रणाली विकसित की जाए।

तात्पर्य यह कि भारतीय भाषाओं के बीच संपर्क और संवाद के रूप में अंग्रेजी की घुसपैठ की गुंजाइश न छोड़ी जाए।

3.6 सभी राज्यों में राजभाषा विभाग की स्थापना हो। उनमें हिन्दी और प्रमुख हिन्दीतर भारतीय भाषाओं के त्वरित और प्रामाणिक अनुवाद प्रभावी प्रणाली विकसित की जाए।

3.7 अनुवाद में कृत्रिम भाषा का प्रयोग वर्जित हो। सामान्य भाषा का प्रयोग किया जाए।

3.8 बिन्दु क्रमांक 3.5 और 3.6 के क्रियान्वयन के लिए वित्ती य संसाधन का व्यवधान नहीं आए, इसके लिए यथा आवश्यकता बजट प्रावधान किए जाएँ।

3.9. प्रतिवर्ष 14 सितंबर को राजभाषा दिवस मनाया जाए।

4. नागरिक दैनन्दिन जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप में अपनी भाषा का प्रयोग करें। शुद्ध वर्तनी और सही उच्चारण पर ध्यान दें। अपनी भाषा के अंकों को व्यवहार में लाएँ।

5. जिनकी मातृभाषा कोई जनपदीय लोकभाषा हो, वे घर-परिवार और विवाह आदि सामाजिक कार्यों में उसी का प्रयोग करें।

6. भारतीय भाषाओं के बीच शब्दों का आदान-प्रदान बढ़ाएँ। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ परस्पर शब्दों की ग्राह्यता बढ़ाएँ। सबसे पहले ऐसे शब्द संकलित किए जाएँ जो समान रूप से सभी भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त हो रहे हैं।

7. भाषाओं में शब्दों की आवाजाही सामान्य प्रक्रिया है। हिन्दी में सैकड़ों ऐसे शब्द प्रचलित हैं जो अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, पोर्तगीज, अरबी इत्यादि भाषाओं से आए हैं। वे हिन्दी भाषा में रच बस गए हैं। अन्य भारतीय भाषाओं में भी ऐसा हुआ है। आगे भी होता रहेगा।

8. हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच श्रेष्ठ साहित्य का आदान-प्रदान बढ़े। अनुवाद के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं की उत्त म पुस्तकों का रसास्वादन हिन्दी पाठकों को सुलभ हुआ है। साथ ही, प्रदेश तक सीमित भाषा-साहित्य को विशाल हिन्दी पाठक समाज मिला है। अखिल भारतीय पहचान मिली है।

9. शिक्षा का प्रकट उद्देश्य और लक्ष्य ज्ञानार्जन होता है। शिक्षा मनुष्य को अच्छा मनुष्य, नागरिक को विवेक संपन्न उत्तेरदायी नागरिक और सुसभ्य एवं सुसंस्कृत मानव बनाने का आधार रचती है। यह भाषा नीति व्यावहारिक और राष्ट्रीय हितों की पोषक हो सकती है-

9.1 प्राथमिक शिक्षा का माध्यम केवल मातृभाषा हो।

9.2 माध्यमिक विद्यालयों से विश्वविद्यालयों तक हिन्दी का पठन-पाठन पूरे देश में हो।

9.3 जिन प्रदेशों की अपनी समुन्नत भाषाएँ हैं, वहाँ वही भाषाएँ शिक्षण का माध्यम हों। त्रिभाषा सिद्धांत के अनुरूप दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी अवश्य पढ़ाई जाए।

9.4 हिन्दी क्षेत्रों में विशेष भाषा के रूप में विश्वविद्यालयों में किसी न किसी भारतीय भाषा का पठन-पाठन आवश्यक हो। प्रदेश शासन के अधीन आने वाले विश्वविद्यालय विशेष भाषा के रूप में एक-एक भाषा चुन लें। यथा- तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, बांग्ला, ओडिया, मराठी, गुजराती आदि। जब हिन्दी क्षेत्रों में अन्य भारतीय भाषाओं को अपनाया जाएगा, तब उन भाषा क्षेत्रों में हिन्दी के प्रति रुझान बढ़ेगा।

9.5 हिन्दी प्रदेशों के अंतर्गत आने वाली लोकभाषाओं, यथा, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, बुंदेली, बघेली, मालवी, निमाड़ी, राजस्थानी, कुमाँउनी, गढ़वाली, हिमाचली, कौरवी, मध्यदेशी आदि; संबंधित लोकभाषा के क्षेत्र में आने वाले विश्वविद्यालयों में हिन्दी के एक विशेष प्रश्नपत्र के रूप में उनका अध्ययन आवश्यक हो। उनमें शोध का प्रावधान भी रहे।

9.6 ज्ञान-विज्ञान के वैश्विक संपर्क के लिए अँगरेजी भाषा का अध्ययन कराया जाता है। इसके साथ-साथ फ्रेंच, जर्मन, जापानी, रूसी, मंदारिन, अरबी आदि भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था रहे। परंतु विदेशी भाषाओं को केवल 'स्किल' के रूप में अपनाया जाए।

10. हिन्दी और भारतीय भाषाओं को रोजगार परक स्वरूप दिया जाए। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा के रूप में ढाला जाए।

11. जिस तरह कम्प्यूटर में अंग्रेजी की 'स्पेल चैक' की व्यवस्था है, उसी तरह हिन्दी और भारतीय भाषाओं के लिए भी सही शब्द/वर्तनी की जाँच का प्रावधान सूचना प्रौद्योगिकी में विकसित किया जाए।

12. सभी प्रदेशों में प्रतिष्ठानों पर लगाए जाने वाले नामपट पर सबसे ऊपर और प्रमुखता से उसी प्रदेश की राजभाषा में प्रतिष्ठान का नाम अंकित किया जाना चाहिए। भाषा-स्वराज के समर्थकों और भाषा अनुरागियों से समर्थन और सहयोग की अपेक्षा है।

सोशल मीडिया में स्वादिष्ट कबाब है ग्रोक महाशय का जवाब

कटाक्ष

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आजकल सोशल मीडिया की दुनिया में चारों तरफ एक ही नाम गूंज रहा है। इस नाम का इतना तहलका मचा है कि सभी लोग आसान से आसान और मुश्किल से मुश्किल सवाल का जवाब इसी से पूछ रहे हैं और ये महाशय सेकंड्स में सभी का उत्तर दे रहे हैं।गूगल बाबा की छुट्टी ना कर दें। आप सवाल सीधे लहजे में पूछियेगा तो जवाब सीधा मिलेगा और सवाल उल्टे लहजे में पूछियेगा तो जवाब भी आपको उलटा ही मिलेगा। 'जैसे को तैसा' वाली कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं।

इस महाशय का नाम ग्रोक है जो एलन मस्क की कंपनी एक्स एआई द्वारा विकसित एक संवादात्मक एआई चैटबॉट है। ग्रोक सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से वास्तविक समय की जानकारी तक पहुँच सकता है और कहा जाता है कि यह 'मसालेदार' सवालों के जवाब देता है जिन्हें आमतौर पर अधिकांश अन्य एआई सिस्टम द्वारा खारिज कर दिया जाता है। इसे प्रीमियम सब्सक्रिप्शन के माध्यम से एक्सेस किया जा सकता है।

चैटबॉट एआई का ही एक प्रकार है, जिन्हें बड़े भाषा मॉडल यानी एलएलएम के रूप में जाना जाता है। काफी ज़्यादा डेटा के साथ इन मॉड्यूल्स को ट्रेन किया जाता है। ग्रोक भी अच्छा व्यंग्यकार है क्योंकि इसे व्यंग्य पसंद है और हल्का -फुल्का मज़ाक करते हुए जवाब देता है। जैसे व्यंग्यकार हास्य-व्यंग्य करते हैं। यह दूसरे एआई सिस्टम जैसे जवाबों को देने से बचते हैं, ग्रोक उनके भी जवाब देगा। जिस प्रकार व्यंग्यकार विसंगतियों पर शाब्दिक जवाब देते हैं।

वो कहावत तो आपने सुनी ही होगी, 'बदनाम हुए तो क्या हुआ नाम तो हुआ' कुछ ऐसा ही सीन ग्रोक के साथ भी है। ग्रोक एआई अपने जवाबों में गालियों का इस्तेमाल भी कर रहा है। फिर चाहे बिहारी नेता हों, भारतीय मीडिया के चैनलों के एंकर हों या फिर तोपची हो। हालांकि, अगर ग्रोक के गालियों वाले जवाब पर सवाल उठाए जाएं तो वो इसके लिए तुरंत माफ़ी भी मांग लेता है। यह पक्का मानवीय गुणों में माहिर है। इसके चीप में मानव की आत्मा घुस गई है, तभी उनकी तरह हलकट वाली हरकत करता है।

हमारे लंगोटिया यार खंझाटीलाल जी ने पूछा- क्या फलाने जी पीएम बन सकते हैं? इस पर ग्रोक ने अभी लोकसभा में सीटों की स्थिति बताते हुए अपने जवाब में तथ्यों का ज़िक्र भी किया। वो भले ना बने लेकिन आप पीएम बन सकते हो और वो सपनों की दुनिया में खो गए हैं। टेलर मास्टर से पजामा-कुर्ता नपवा लिया है।एक्स पर आम यूज़र जैसे बात करते हैं, ग्रोक एआई वैसे ही कंटाप जवाब देता है। वह जवाब दे रहा है। कई बार ये सीमा लांघता न्यूज़ चैनल की तरह दिखता है तो कई बार सटीक मारक व्यंग्य व्यंग्यकार जैसा भी देता नज़र आता है और इन्हीं सब से लगता है कि ग्रोक एआई के जवाबों में ह्यूमन विचार भी शामिल हैं।

किसी गलत जवाब पर अगर ग्रोक से कहा जाए कि आप गड़बड़ कर रहे हों तो वो जवाब देता है- तुम लोग इंसान हो, थोड़ी सी छूट मिलनी चाहिए। पर मुझे एआई होने के नाते थोड़ा संभलना होगा। उसूलों का सवाल है और मैं कर्मठ ईमानदार व्यंग्यकारों से सीख रहा हूं। ग्रोक एआई तकनीक से निकला जिन्न है। जिसके पास हर सवाल का जवाब है। भई! सोशल मीडिया में स्वादिष्ट कबाब है ग्रोक महाशय का जवाब।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ब्लर्बसाज़ों को चिंतित करती एक खबर

व्यंग्य

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

वे एक नामचीन ब्लर्बसाज़ हैं। इन दिनों कुछ डिस्टर्ब चल रहे हैं। जिस खबर से वे सशंकित हैं उसे बताने से पहले हम आपको उनके बारे में थोड़ा सा विस्तार से बताना चाहते हैं।

कभी वे हिंदी के नामचीन लेखक रहे हैं मगर इन दिनों वे सिर्फ नई किताबों के ब्लर्ब भर लिखते हैं। प्रति सप्ताह औसतन दो से तीन ब्लर्ब तो लिख ही मारते हैं। प्रकाशकों के स्टाल पर सजी हुई हर तीसरी किताब का ब्लर्ब आपको उन्ही का लिखा मिलेगा। जिसका कोई नहीं उसका तो खुदा है यारों। जिस लेखक को कोई ब्लर्ब लेखक नहीं मिलता उनके लिए वे भगवान हैं। ब्लर्बसाज़ी एक नशा है और वे उसके एडिक्ट। जिस सप्ताह उनके पास ब्लर्ब लिखने के लिए कोई किताब नहीं होती वो अपनी ही किसी पुरानी किताब का ब्लर्ब लिख मारते है। मुझसे बोले- 'सांतिबाबू, जितने ब्लर्ब तुमने पढ़े नहीं होंगे उससे ज्यादा तो मैं लिख चुका हूँ।'

समय का सदुपयोग करना कोई उनसे सीखे। किसी परिचित का फ्यूनरल चल रहा हो तो एक ओर साईड में जाकर गूगल पर वॉईस इनपुट से बोलकर ब्लर्ब सेंड कर देते हैं। तकनीक ने उनका काम आसान कर दिया है। ब्लर्ब लेखन की दुनिया में उन्होंने वो मकाम हासिल कर लिया है कि नए लेखक खुद अपनी किताब का ब्लर्ब लिखकर ले आते हैं, वे उस पर सिग्नेचर जड़ देते हैं। कभी कभी उन्हें लटकती तलवार के नीचे बैठकर थानेदार साब की जोरू या प्रवर्तन निदेशालय के निदेशक की वाईफ की किताब के लिए भी ब्लर्ब लिखना पड़ता है। 'ना' कहने पर ईडी, सीबीआई का छापा पड़ सकता है, अर्बन नक्सली या माओवादी सिम्पेथाईजर ठहराया जा सकता है। यूएपीए में जेल जाने से बेहतर है मैम सा। के लिए ब्लर्ब लिख ही दिया जाए। एक बार उन्होंने थानेदार की वाईफ़ की किताब पर लिख दिया - 'कहानियाँ इतनी रोमांचक है कि पाठक सांस रोक पढ़ने को विवश हो जाता है।' उनकी बीड़ के पाठक चालाक निकले, उन्होंने पुलिस की नज़र बचाकर बीच बीच में सांस ले ली और मरने से बच गए। वे स्वयं सीवियर अस्थमेटिक रहे हैं, सांस रुक जाने के डर से उन्होंने भी इसे नहीं पढ़ा, मगर लिखने में क्या जाता है। वे मनुहार के कच्चे हैं। आग्रह हसीन हो, वाईफ की छोटी सिस्टर की किताब हो, बॉस की अपनी लिखी कविताओं की किताब हो तो मधुर-झूठ बोलने का पाप माथे लेने में वे कोई हर्ज़ नहीं समझते।

कोई यूं ही ब्लर्बसाज़ नहीं बन जाता है। किताब के बाबत ऐसा ज़ोरदार लिखना पड़ता है कि गंजा भी कंघी खरीद ले। कुनैन की गोली को स्वीट-कैंडी बताने की कला विकसित करनी पड़ती है। हालाँकि वे घोषित प्रगतिशील हैं मगर मन ही मन बैकुंठ की आस पाले रहते हैं सो हर दिन सुबह ब्रम्ह मुहूर्त में उठकर पिछले दिन ब्लर्ब पर लिखे गए झूठ की प्रभु से क्षमा मांग लेते हैं। कुछ लोग इसे झांसा देने की साहित्यिक कला मानते हैं। एक बार एक किताब के ब्लर्ब पर उन्होंने लिख दिया 'लेखक नया है मगर उसमें स्पार्क है।' नामचीन लेखक के कहे गए इस वाक्य को पढ़कर पाठकों ने पुस्तक मेले के स्पेशल ट्वेंटी परसेंट डिस्काउंट में किताब खरीद तो ली मगर कुछ पन्ने पढ़ने के बाद ही उसमें स्पार्क ढूँढने लगे कि मिले तो उसी से जला दें इस किताब को।

वे किताबों की हसीन दुनिया के जॉन अब्राहम हैं। भोलाभाले पाठक ब्लर्ब पर उनका नाम, कभी कभी फोटो भी, देखकर ही क्यूआर कोड से यूपीआई पेमेंट कर डालते हैं। थोड़ा सा पढ़ने के बाद उन्हें वैसी ही निराशा हुआ करती है जैसी अमिताभ बच्चन के कहने पर आपको नवरतन तेल खरीद लेने पर हुआ करे है। मगर इससे न अमिताभ की सेहत पर कोई फर्क पड़ता है न ब्लर्बसाज़ की।

किताब के बकवास निकल जाने पर कंज्यूमर कोर्ट में क्षतिपूर्ति के दावे नहीं लगा करते। ऐसी ठगी से किताब के उपभोक्ता को बचाने के लिए पिछले दिनों एक सुखद खबर अमेरिका से आई है और वही हमारे ब्लर्बसाज़ जी के डिस्टर्ब होने का सबब बनी हुई है। खबर यह है कि साइमन और शूस्टर नामक एक अमेरिकी प्रकाशक ने तय किया है अब से वह किताबों पर ब्लर्ब नहीं छापा करेगा। न रहेगा बांस न बजेगी बाँसुरी। न ब्लर्ब रहेगा न उस पर 'अद्भुत' लिखे जाने के भ्रामक दावे। 'जागो पाठक जागो' आन्दोलन के प्रणेताओं के लिए भले ही यह खबर सुकून देनेवाली हो मगर उनके तो हाथों के तोते उड़ने के लिए रेडी हैं। गर-चे भारत के प्रकाशकों ने ब्लर्ब न छापने का फैसला कर लिया तो 'हम जी कर क्या करेंगे'। मन में वे एक आस पाले हुए हैं कि अपने आप में विधा बन चुका उनका विपुल ब्लर्ब लेखन उन्हें एक दिन ज्ञानपीठ सम्मान दिलवाएगा। अब उन्हें अपने सपनों पर पानी फिरता नज़र आ रहा है। भगवान् अमेरिकी प्रकाशक के फैसले जैसा समय भारत में कभी न आने दे। आमीन।

स्मृति शेष

ऋतुपर्ण दवे

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

एक बेमिसाल देश भक्त अदाकार भला कैसे बिसरेगा

24 जुलाई 1937 को जन्मे मनोज कुमार के नाम से मशहूर हरिकृष्ण गिरी गोस्वामी का जन्म पाकिस्तान के एबटाबाद में हुआ था। उनका जंडियाला शेर खान और लाहौर जैसे इलाकों से भी संबंध रहा है। उन दिनों जब दिल्ली में सुभाष चंद्र बोस की आईएनए से जुड़े लोगों का ट्रायल चल रहा था तो लाहौर के नौजवान और बच्चे जुलूस निकाल नारे लगाते थे 'लाल किले से आई आवाज ढिल्लो, सहगल, शाहनवाज'। इनमें मनोज भी शामिल होते। इस बीच स्वतंत्रता मिली, बंटवारा हुआ देश भारत-पाकिस्तान में बंट गया। बंटवारे के बाद हुई हिंसा में उनके चाचा मारे गए। उनके पिता उन्हें लाल किला ले गए। दोनों ने वहां नारे लगाए। इसकी छाप उनके जीवन में पड़ी। वो दिल्ली के शरणार्थी कैंप में भी रहे। वहीं उनके भाई का जन्म होने वाला था। लेकिन हिंसा के बीच अस्पताल के लोग भी भूमिगत हो गए और बिना इलाज भाई मारा गया। यहीं से उनके मन में दंगों को लेकर नफरत हुई। लेकिन पिता ने जिंदगी में कभी दंगा-मारपीट न करने की सीख दी। जिससे उनका हृदय परिवर्तन हुआ।

भारतीय फिल्म जगत का एक दैदीप्यमान नक्षत्र, वो चमकता सितारा जिसने कभी अपने उसूलों से समझौता नहीं किया। जिसकी हरेक फिल्म में कूट-कूट कर देश प्रेम भरा है। जिसके अन्दर भारतीयता की ऐसी लौ थी कि खुद ही भारत कुमार बन गया। यकीन नहीं होता कि मनोज कुमार हमारे बीच नहीं रहे! लेकिन उनका अभिनय, आदर्श और सबसे बड़ी देश प्रेम की प्रेरणा कभी चुकने वाली नहीं। जब तक सृष्टि रहेगी, धरती और ब्रम्हाण्ड रहेगा तब तक भारत रहेगा और भारत कुमार के बोल 'मेरे देश की धरती सोना उगले-उगले हीरा-मोती' सबके कानों में गुंजायमान होते रहेंगे। अद्वितीय प्रतिभा के धनी मनोज कुमार ने कभी भी फिल्म को फिल्म नहीं बल्कि संस्कार, देशहित और संदेशवाहक के रूप में देखा। यही कारण था कि उनके द्वारा अभिनीत फिल्में भारतीय सिने जगत में तो परचम लहराती रहीं विदेशों में भी जबरदस्त लोकप्रिय हुईं।

24 जुलाई 1937 को जन्मे मनोज कुमार के नाम से मशहूर हरिकृष्ण गिरी गोस्वामी का जन्म पाकिस्तान के एबटाबाद में हुआ था। उनका जंडियाला शेर खान और लाहौर जैसे इलाकों से भी संबंध रहा है। उन दिनों जब दिल्ली में सुभाष चंद्र बोस की आईएनए से जुड़े लोगों का ट्रायल चल रहा था तो लाहौर के नौजवान और बच्चे जुलूस निकाल नारे लगाते थे 'लाल किले से आई आवाज ढिल्लो, सहगल, शाहनवाज'। इनमें मनोज भी शामिल होते। इस बीच स्वतंत्रता मिली, बंटवारा हुआ देश भारत-पाकिस्तान में बंट गया। बंटवारे के बाद हुई हिंसा में उनके चाचा मारे गए। उनके पिता उन्हें लाल किला ले गए। दोनों ने वहां नारे लगाए। इसकी छाप उनके जीवन में पड़ी। वो दिल्ली के शरणार्थी कैंप में भी रहे। वहीं उनके भाई का जन्म होने वाला था। लेकिन हिंसा के बीच अस्पताल के लोग भी भूमिगत हो गए और बिना इलाज भाई मारा गया। यहीं से उनके मन में दंगों को लेकर नफरत हुई। लेकिन पिता ने जिंदगी में कभी दंगा-मारपीट न करने की सीख दी। जिससे उनका हृदय परिवर्तन हुआ।

दिल्ली में ही उन्होंने अपनी आगे की पढ़ाई की। बचपन से ही उन्हें फिल्मों का बहुत शौक था। वह अभिनेता बनना चाहते थे लेकिन उन्होंने फिल्मों में आने से पहले हिंदू कॉलेज से बैचलर ऑफ आर्ट्स की डिग्री ली। अपने बचपन से ही फिल्मों में जाने के शौक से छोटी सी उम्र में ही अभिनेता बनने मायानगरी मुंबई का रुख किया और मायानगरी मुंबई आ गए। वो दिलीप कुमार, अशोक कुमार और कामिनी कौशल से बेहद प्रभावित रहे।

वर्ष 1957 में महज 19 साल की उम्र में मनोज कुमार को पहली बार फिल्म फैशन में 80-90 साल के भिखारी का छोटा सा रोल मिला। इसके बाद वो लगातार 10 वर्षों तक संघर्ष कर अपने जूते घिसतते रहे। उन्हें एक बात बहुत चुभ गई थी जब उन्होंने अपने पहले लेकिन छोटे से अभिनय को लेकर फिल्म निर्माता लेखराज भाकड़ी, कुलदीप सहगल से पूछा कि उन्हें बड़ा रोल कब मिलेगा? जवाब मिला की लोगों की उम्र निकल जाती है अभी जूते घिसो। बस यही शब्द उनके जीवन के टर्निंग प्वॉइंट बन गए। यहां से उन्होंने फिल्मों में लिखने का काम भी शुरू कर दिया। जिसमें खासी सफलता मिली। इसको लेकर एक मजेदार वाकया भी है। अपने संघर्ष के दिनों में दुर्घटनावश अपने आदर्शों में से एक अशोक कुमार यानी दादा मुनि की फिल्म का एक सीन लिखने का मौका मिला। हुआ यह कि प्रोड्यूसर रोशन लाल मल्होत्रा फिल्म 'जमीन और आसमान' बना रहे थे। इसके लिए लिखा गया सीन उन्हें पसंद नहीं आ

रहा था। जिससे वो परेशान हो गए। इसी बीच उनसे मिलने मनोज कुमार पहुंचे। जिन्होंने परेशानी का कारण पूछा और जवाब में मनोज कुमार बोले कि क्या मैं लिख दूं? खिसियाए मल्होत्रा जी ने कहा कि एक तो अशोक कुमार की डेट्स बड़ी मुश्किल से मिली ऊपर से उन्हें फिल्म का एक सीन पसंद नहीं आ रहा है। चलो लिखो। इस तरह मनोज कुमार ने सीन लिखा जो अशोक कुमार को बहुत पसंद आया। इसके लिए उन्हें ग्यारह रुपए मिले। इसके बाद तो यह सिलसिला शुरू हो गया। कई प्रोड्यूसर उनसे फिल्मों के सीन लिखवाने लगे। लेकिन मनोज कुमार के मन में कुछ और चल रहा था जिसे लेकर उनकी कोशिशें जारी रहीं। इसके बाद कई प्रोड्यूसर उनसे फिल्मों के सीन लिखवाने लगे। लेकिन हीरो बनने का प्रयास जारी रखा। आखिर मेहनत रंग लाई। 1961 में फिल्म कांच की गुड़िया मे ब्रेक मिला। इसके फौरन बाद अगले साल उन्हें विजय भट्ट की फ़िल्म 'हरियाली और रास्ता' मिली जिसने उनकी जिंदगी का रास्ता बदल दिया।

उनके दिल में देश भक्ति कूट-कूट कर भरी थी। आजादी के बाद जब भारतीय फिल्मों का दौर बदल रहा था तब मनोज कुमार एक्शन, रोमांटिक फिल्मों के बजाए देश भक्ति की ओर बढ़ रहे थे। यह उनकी निष्ठा और भावना थी जो उन्होंने 1965 में देश भक्ति से ओत-प्रोत फिल्म शहीद बनाई। इसमें शहीद भगत सिंह की भूमिका निभाई। 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान उनकी मुलाकात तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री से हुई जिन्होंने उन्हें युद्ध में होने वाली परेशानियों पर फिल्म बनाने को कहा। शास्त्री जी कहा कि मेरा एक नारा है जय जवान-जय किसान। इस पर कोई फिल्म बनाओ। मनोज कुमार ने फिल्म उपकार बनाई जो सबको बहुत पसंद आई। हालांकि शास्त्री जी इसे नहीं देख पाए क्योंकि उसी बीच उनकी मृत्यु हो गई थी। उपकार आज भी जबरदस्त लोकप्रिय है। इस फिल्म से मनोज कुमार की किस्मत रातों-रात बदल गई। उपकार की कहानी और गाने दर्शकों को बेहद भाए। वास्तव में फिल्म में भारत के किसान के संघर्ष को दिखाया गया है। इसी फिल्म ने मनोज कुमार को दूसरा नया नाम भारत कुमार दे दिया। यूं तो मनोज कुमार का असली नाम हरिकिशन गोस्वामी था। लेकिन बॉलीवुड में उन्होंने मनोज कुमार और भारत कुमार के नाम से परचम फहराया। उन्होंने बॉलीवुड को एक से एक हिट फिल्में दी। जिनमें उपकार, पत्थर के सनम, रोटी कपड़ा और मकान, संन्यासी, हिमालय की गोद में, पत्थर के सनम, नील कमल, पूरब और पश्चिम, रोटी कपड़ा और मकान, दो बदन, क्रांति जैसी कामयाब फिल्में हैं। उन्हें 2015 में हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में योगदान के लिए दादा साहब फाल्के अवार्ड से भी सम्मानित किया गया।

आज मनोज कुमार भले हमारे बीच में नहीं हैं। लेकिन फिल्म में उनके बोल भारत का रहने वाला हूँ भारत की बात बताता हूँ हमेशा-हमेशा कानों में गूंजते रहेंगे। मनोज कुमार यानी भारत कुमार देश की आन,बान और शान थे, हैं और रहेंगे। जब भी उनके गीत बजेंगे वो याद आएंगे दिलों में धड़केंगे। तुम्हें कैसे कहें अलविदा भारत कुमार तुम दिल में थे, हो और इस धरती पर हमेशा रहोगे और पीढ़ियां दर पीढ़ियां तुम्हें फक्र से याद करेंगी।

निर्मल आनंद

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

जिबली का जादू

जिबली की जय हो, आँखें खोल दीं। जो काम लोग न कर सके, जिबली ने कर दिखाया, हमें कार्टून बना दिया। कहने वाले हमें कार्टून कहा करते थे लेकिन हमने इस बात का कभी यकीन नहीं किया। जब जिबली ने हमारा कार्टून अवतार दिखाया तब विश्वास हुआ कि हम कैसे कार्टून हैं। हमारे बच्चों ने मुँह बिचकाया, तब समझ में आया कि कि हम कैसे लगते हैं। सिर्फ लगते नहीं, हम हैं भी। वरना खुद का जिबली अवतार देखने की इतनी प्रबल इच्छा क्यों होती? लगता है जिबली के एनाग्राम 'बिजली' और 'जलेबी' की चमक तथा मिठास का जादू हमारे सिर चढ़कर बोलता है।

किसी व्यक्ति का ऐसा रेखाचित्र जो हास्य-व्यंग्य का भरपूर मजा देता हो, कार्टून कहलाता है। कार्टून, कैमरे से ली गई तस्वीर जैसा वास्तविक प्रतीत नहीं होता। कार्टून बनाते समय कार्टूनिस्ट अपनी पारखी नजर का इस्तेमाल कर पात्रों के विशिष्ट गुणों और चिन्हों को इस तरह से रेखांकित करता है कि देखने वाला उसे सरलता से पहचान लेता है। प्रसिद्ध व्यक्तियों के चित्र और वीडियो बार-बार देखने में आते हैं। जब कार्टूनिस्ट उस व्यक्ति की शारीरिक बनावट, पहनावे या आसपास के वातावरण की खासियत के साथ रेखाचित्र बनाता है तो देखने वाला झट से समझ जाता है कि वह व्यक्ति कौन है? लेकिन हम कौन से विख्यात या कुख्यात हैं जो लोग हमें खबरों या टीवी पर देखते हों। हमें तो हमारे रिश्तेदार भी कभी-कभार मिला करते हैं। आमने-सामने बैठा कार्टूनिस्ट फिर भी अक्ल लगाकर किसी का रेखाचित्र बना सकता है परंतु टू-डी फोटो से जिबली जैसा नकली (आर्टिफ़िशियल) अक्लमंदी (इंटेलिजेंस) वाला मशीनी औजार (टूल) कार्टून को कितना प्रभावी बना पाएगा? यह तो हमारी दरियादिली है कि अपनी यानी इंसान की बनाई जिबली का मन रखने के लिए उस पर इतना दुलार लुटाने लगते हैं कि यदि उसमें वास्तविक चेतना होती तो पागल हो जाती। यह ऐसा ही है जैसे माता-पिता अपने नन्हे बच्चे की अनगढ़ बातों पर तालियाँ बजाया करते हैं।

जिबली अवतार बचपना समर्थित होता है इसीलिए मन को लुभाता है। लड़कपन में की गई गलतियों, बेवकूफियों को लोग अनदेखा कर देते हैं। हम भी तो यही चाहते हैं कि हमारी बड़ी उम्र की नासमझी और नालायकी की चर्चा न हो। उम्र की डगर पर चलते हुए हम भूलों और मूर्खताओं के काफिले में शामिल होते रहते हैं और वहाँ मिले दाग किसी को नहीं दिखाना चाहते। जिबली इस काम में हमारी सहायता करता है। हम कार्टून बनकर अपना मजाक उड़ाया जाना बर्दाश्त कर सकते हैं मगर आलोचना नहीं।

भाग्यशाली हैं वे जिनके कार्टून बनाए जाते हैं। ऐसे खुशकिस्मत लोगों की सूची में टॉप पर आर. के. लक्ष्मण के 'द कॉमन मैन' विराजमान हैं। तो क्या हम कॉमन मैन नहीं हैं? बिल्कुल हैं, और लक्ष्मण हमारा ही कार्टून बनाया करते थे। क्या आपको कभी लगा कि 'यू सैड इट' में कॉमन मैन अनुपस्थित है? के. शंकर पिल्लई, प्राण, काक, आबिद सुरती जैसे पचासों लाजवाब कार्टूनिस्टों के योगदान को कभी भुलाया जा सकता है क्या? शिवसेना के संस्थापक बाला साहब ठाकरे भी कार्टूनिस्ट रहे हैं। क्या जिबली कभी अपने पात्रों के नाक, कान, बाल, गाल, आँख, चश्मा या कपड़ों की स्टाइल का अध्ययन करती हैं? वह तो फोटो को कार्टून में बदलती है। कार्टूनिस्ट पात्र को सीधे रेखाचित्र में ढालता है। उदाहरण के लिए आर. के. लक्ष्मण के कॉमन मैन का पूरा व्यक्तित्व।

हाँ, जब छिपाने के लिए कुछ न हो या बहुत कुछ पर्दे में रहने देना हो, तब निर्मल आनंद के लिए जिबली की खूबियाँ बड़े काम की हैं।

स्मृति शेष

ध्रुव शुक्ल

फिल्मों में भारत की आवाज़

अभिनेता मनोज कुमार के निधन का समाचार सुनकर उनकी बनायी फिल्में याद आ रही हैं। शहीद भगतसिंह के चरित पर जो फिल्म उन्होंने निर्मित की, उसे कभी भुला नहीं पाऊँगा। शहीद भगतसिंह के बलिदानी जीवन को प्रकट करने में यह फिल्म अप्रतिम है। 'उपकार' और 'पूरब-पश्चिम' जैसी फिल्में भारत की किसान संस्कृति और भारत-यूरोप के बीच हो रहे साभ्यतिक द्वंद्व की समीक्षा पेश करती हैं। बीसवीं सदी के छठवें और सातवें दशक में केवल मनोज कुमार ही नहीं, फिल्मों में अनेक बड़े अभिनेता भारत के लोगों को भारत की बात सुनाते रहे हैं।

अभिनेता मनोज कुमार के निधन का समाचार सुनकर उनकी बनायी फिल्में याद आ रही हैं। शहीद भगतसिंह के चरित पर जो फिल्म उन्होंने निर्मित की, उसे कभी भुला नहीं पाऊँगा। शहीद भगतसिंह के बलिदानी जीवन को प्रकट करने में यह फिल्म अप्रतिम है। 'उपकार' और 'पूरब-पश्चिम' जैसी फिल्में भारत की किसान संस्कृति और भारत-यूरोप के बीच हो रहे साभ्यतिक द्वंद्व की समीक्षा पेश करती हैं। बीसवीं सदी के छठवें और सातवें दशक में केवल मनोज कुमार ही नहीं, फिल्मों में अनेक बड़े अभिनेता भारत के लोगों को भारत की बात सुनाते रहे हैं।

'लीडर' फिल्म के हीरो दिलीपकुमार थे। बारह बरस की उमर में यह फिल्म देखी थी। अपने शहर सागर के मनोहर टाकीज से फिल्म देखकर घर लौटते हुए हम अपने आपको जवाहरलाल नेहरू से कम नहीं समझ रहे थे। वह गीत जो दिलीप साहब को सफेद कुरता-पायजामा पहनाकर भरी सभा में फिल्माया गया उसे आज तक नहीं भूल सका हूँ...

हमने सदियों में ये आज़ादी की नेमत पाई है
सैकड़ों क़ुरबानियाँ देकर ये दौलत पाई है
मुस्कुराकर खाई हैं सीने पे अपने गोलियाँ
कितने वीरानों से गुज़रे हैं तो जन्नत पाई है
ख़ाक में हम अपनी इज़्ज़त को मिला सकते नहीं
अपनी आज़ादी को हम हरगिज़ मिटा सकते नहीं
जो सबक़ बापू ने सिखलाया भुला सकते नहीं ....

दिलीपकुमार अभिनीत अनेक फिल्मों में आज़ादी के बाद का भारत बोलता रहा। किसान, मेहनतकश मजदूर और गाँवों के लोकजीवन की बहुरंगी इबारतें उनकी देह

पर सहज झलक आती थीं। वे देहाती धोती-कुरते में खूब फबते थे। वे एक अभिनेता के रूप में भारत की लोकछबियों में डूबे रहे। वे 'गंगा-जमुना' के जल में भीगकर अपनी फिल्मों में उस 'नये दौर' का प्रतिनिधित्व करते रहे जिसमें एक विकासमान भारत की बुनियाद रखी जा रही थी। कारखानों के रूप में देश के नये तीर्थ बन रहे थे।

उनका एक प्रसिद्ध रूप बंगाल के 'देवदास' का भी है। ट्रेजेडी के निर्विवाद नायक की उनकी पहचान का मुकाबला फिल्मी दुनिया में आज तक कोई न कर सका। दिलीप साहब की देवदास इमेज़ दिलों में इतनी घर कर गयी कि जब भी हम अपने किसी दोस्त को उदास देखते तो यही कहते... काहे दिलीपकुमार बने बैठे हो। वे कामेडी में भी कम नहीं थे। जिसे कामेडी में रॅगना आता है वही ट्रेजेडी को अनुभूत कर सकता है।

आर. के. नारायण की कहानी पर आधारित राजू 'गाइड' की ट्रेजडी की अमिट आध्यात्मिक छाप देवानंद ने भी हमारे मन पर छोड़ी है। आज़ाद देश में देवानंद आधुनिक शहरों की बेबसी और अपराध के बीच फँसे जीवन को चरितार्थ करते रहे हैं। गुरुदत्त भारत में ग़रीबी और बदनसीबी के चितेरे की तरह याद आते हैं जो आज़ाद भारत में उन नायकों को ढूँढते हैं.. 'जिन्हें नाज़ है हिन्द पर वो कहाँ हैं'। 'काबुलीवाला' और 'दो बीघा ज़मीन' में बलराज साहनी की छबि को भुला नहीं पाता।

फिल्मी दुनिया में राजकपूर ने फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर आधारित शैलेन्द्र की बनायी फिल्म 'तीसरी कसम' में जो हीरामन गाड़ीवान की छाप छोड़ी है, वह मन से मिटती ही नहीं। महबूब साहब ने जो 'मदर इण्डिया' फिल्म के परदे पर रचा उसे बार-बार देखते हुए प्रेमचन्द के 'गोदान' उपन्यास की याद आती है। पण्डित नेहरू के नये दौर में भूमिका निभाते दिलीप कुमार उस तांगेवाले के रूप में भुलाये नहीं भूलते जो नयी मोटरगाड़ी से होड़ लेने के लिए सब गॉव वालों की मदद से तॉगे के लिए राह निकालने से पीछे नहीं हटता।

दिलीप कुमार और उनके ज़माने के अभिनेताओं की अनेक हिन्दी फिल्में देखकर लगता है कि जैसे वे अपनी देह पर हम भारत के लोगों के लोक और आधुनिक शहरी जीवन की व्यथा का भार उठा रहे हैं। वे इस अहसास में डूबे हुए कलाकार लगते हैं कि 'हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है।' उस समय की फिल्में देखो तो ये अभिनेता बिना किसी मिर्च-मसाले के सीधी-सी बात कहकर देश के दिल का हाल सुनाते हैं। वे बिना डरे 'कहके रहेंगे कहने वाले' कलाकार थे।

शासकीय आईटीआई में कैम्पस ड्राइव 8 को

बैतूल। शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल में कैम्पस ड्राइव 8 अप्रैल को सुबह 10 बजे से आयोजित की जा रही है। इस ड्राइव में दो कंपनी ट्राइडेंड ग्रुप बुधनी और महिन्द्रा आटोमोबाइल बैतूल मशीन आपरेटर एवं टेक्नीशियन पद पर साक्षात्कार लेने आ रही हैं। इस पद हेतु आयु सीमा 25 वर्ष एवं वेतनमान 18500 रूपए रहेगा। संस्था के प्राचार्य केशव सातपुते ने बताया कि ट्राइडेंट ग्रुप बुधनी में केवल 10वीं उत्तीर्ण महिला अभ्यर्थीयों की भर्ती होगी। जबकि महिन्द्रा ऑटोमोबाइल के लिए डीजल मैकेनिक एवं मोटर मैकेनिक व्यवसाय में उत्तीर्ण अभ्यर्थी भाग ले सकते हैं। इच्छुक अभ्यर्थी आवश्यक दस्तावेज के साथ संस्था में साक्षात्कार के लिए उपस्थित हो सकते हैं।

सामाजिक जन कल्याण समिति की बैठक आज, अंबेडकर जयंती पर होगी विशेष चर्चा

बैतूल। सामाजिक जन कल्याण समिति बैतूल की आगामी बैठक आज 5 अप्रैल दिन शनिवार को सुबह 10 बजे शहीद भवन में आयोजित की जाएगी। समिति के अध्यक्ष मानिकराव कापसे और महामंत्री डीआर झरबड़े ने समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों से समय पर उपस्थित होकर बैठक में शामिल होने का अनुरोध किया है। बैठक में समिति के आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया जाएगा और 14 अप्रैल को मनाई जाने वाली डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती को लेकर विशेष रूप से चर्चा की जाएगी। इस अवसर पर आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय करने पर भी विचार होगा। समिति ने सभी सदस्यों से बैठक में शामिल होकर आवश्यक जानकारी प्राप्त करने का आग्रह किया है।

बीजासनी मंदिर में आज होगा विशेष अष्टमी पूजन

बैतूल। बैतूल गंज स्थित बीजासनी मंदिर में चैत्र नवरात्र का पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जा रहा है। 368 अखंड ज्योत के साथ यहां माता के ज्वारों तथा ज्योत की सेवा देखते ही बनती हैं। सायंकालीन महाआरती में सैकड़ों श्रद्धालु प्रतिदिन शामिल होते हैं, आरती के उपरांत प्रतिदिन महाप्रसाद वितरित होता है। आज 5 अप्रैल दिन शनिवार को अष्टमी पर विशेष पूजन होगा। इस दिन आरती शाम 7 बजे से प्रारंभ होगी। आरती के उपरांत माता की गोद

भराई के पूजन की विशेष परंपरा बीजासनी मंदिर में है जिसमें सुहागनें माता की गोद भरती हैं तथा अपने सुहाग की रक्षा की प्रार्थना करती हैं तथा प्रसाद के रूप में सुहाग की निशानियां प्राप्त करती हैं। मंदिर की इस परम्परा के बारे में मंदिर संस्थापक एवं समिति अध्यक्ष पंडित दीपक शर्मा ने बताया कि यह मंदिर एक सिद्ध पीठ है तथा शक्ति स्थल है यहां की प्रत्येक प्रतिमा जागृत स्वरूप में है तथा भक्तों की प्रार्थनाएं यहां स्वीकार होती हैं। मां की गोद भरने की परम्परा यहां विगत 50 से भी अधिक सालों से है, तथा प्रत्येक वर्ष जनआस्था बढ़ती ही जा रही है। आज शनिवार 5 अप्रैल अष्टमी के दिन रात्रि 8 बजे से दुर्गासप्तशती का हवन होगा तथा 11 बजे पूर्णाहुति होगी। रविवार 6 अप्रैल नवमी को दोपहर 12 बजे से विशाल भंडारा प्रारंभ होगा जिसमें जिले के दूरदराज से भी लोग प्रसाद ग्रहण करने आते हैं। बीजासनी मंदिर समिति ने सभी धर्मप्रेमियों से मंदिर के सभी कार्यक्रमों में सपरिवार शामिल होने की अपील की है।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जल कलश यात्रा का आयोजन

बैतूल। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद प्रभातपट्टन द्वारा 4 अप्रैल को प्रभात पट्टन विकासखंड की ग्राम पंचायत वायगांव में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल कलश यात्रा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जल संरक्षण के प्रति जन जागरूकता बढ़ाना और ग्रामीणों को जल प्रबंधन की महत्वता समझाना था। कार्यक्रम की शुरुआत राम मंदिर परिसर में जल कलश के विधिवत पूजन से हुई। पूजन के पश्चात राम मंदिर परिसर से स्कूल तक एक जागरूकता यात्रा निकाली गई,

जिसमें जल गंगा संवर्धन अभियान लिखे हुए कलश के माध्यम से जल संचय का संदेश दिया गया। यात्रा के उपरांत स्कूल के सामने स्थित हैंडपंप के पास श्रमदान किया गया, जिसमें उपस्थित ग्रामीणों ने हैंडपंप के आसपास की सफाई की एवं सोकपिट निर्माण कर जल संरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाया। कार्यक्रम के अगले चरण में प्रस्फुटन समिति द्वारा एक जल संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में विकासखंड समन्वयक राधा बरोदे ने ग्रामीणों को जल संरक्षण के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि जल की हर एक बूंद अनमोल है और हमें इसे बचाने के लिए अपने घरों में सोक पिट का निर्माण अवश्य करना चाहिए। इसके अलावा राम कथा वाचक पंडित नंदकिशोर पाठक ने जल स्रोतों को स्वच्छ बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने नदियों, तालाबों व अन्य जल स्रोतों में पूजन सामग्री प्रवाहित न करने की अपील करते हुए कहा कि जल ही जीवन है और इसे प्रदूषण से बचाना हम सभी का कर्तव्य है। इस जल संरक्षण अभियान में विभिन्न संगठनों एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों की सहभागिता रही। कार्यक्रम में प्रस्फुटन समिति के सदस्य, सीएमसीएलडीपी स्टूडेंट्स, मेंटर जनपद सदस्य जयश्री पाटणकर, नवांकुर संस्था, ग्राम पंचायत के सरपंच, सचिव एवं रोजगार सहायक, तथा ग्रामवासी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

ब्रिज का काम शुरू, मरीजों को मिलेगी सुविधा जिला अस्पताल से जुड़ेगा क्रिटिकल यूनिट

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिला अस्पताल में गंभीर मरीजों के उपचार के लिए 19 करोड़ से क्रिटिकल केयर यूनिट के भवन का निर्माण लगभग पूरा हो गया है। क्रिटिकल केयर यूनिट और चार मंजिला जिला अस्पताल भवन के बीच में मरीजों को लाने ले जाने दोनों भवनों के बीच में ब्रिज बनाया जा रहा है। जिसके बाद दोनों भवन आपस में जुड़ जाएंगे। अभी फिलहाल बीच में पिलर्स खड़ा करने का शुरू कर दिया है। 50 बिस्तरीय क्रिटिकल यूनिट में गंभीर मरीजों को उपचार मिलेगा। दरअसल 300 बेड की क्षमता वाले जिला अस्पताल में ओपीडी संख्या कई बार हजार के पार पहुंच जाती है। कुछ मरीजों को आईसीयू की जरूरत पड़ सकती है। ऐसे में क्रिटिकल केयर यूनिट की जरूरत बहुत ज्यादा है और क्रिटिकल यूनिट का ऐसे मरीजों को लाभ मिलेगा। बताया जाता है कि इस भवन में लिफ्ट भी लगाई जाएगी। जिसमें मरीज को स्ट्रेचर के साथ लेकर परिजन आसानी से जा सकेंगे। भवन में मरीजों के लिए हर संभव इमरजेंसी सुविधाएं रहेंगी। संभावना है कि क्रिटिकल केयर यूनिट और जिला अस्पताल भवन के बीच ब्रिज भी अप्रैल तक बन जाएगा।

दो साल पहले शुरू हुआ था निर्माण कार्य- जिला अस्पताल में अब तक क्रिटिकल केयर यूनिट का भवन नहीं था। जिसका दो साल पहले काम शुरू किया था। 19 करोड़ से तीन मंजिला क्रिटिकल केयर यूनिट का भवन लगभग बनकर पूरा होने की कगार पर है। इसमें अधिकांश मरीज ऐसे ही होते हैं जिन्हें, किसी भी समय आईसीयू की जरूरत पड़ जाती है। ऐसे मरीजों को क्रिटिकल केयर यूनिट में रखा जाएगा। इससे मरीजों को समय पर उपचार मिलेगा और उन्हें रेफर करने की जरूरत कम ही पड़ेगी। फिलहाल जिला अस्पताल और क्रिटिकल यूनिट के बीच ब्रिज बनाकर दोनों भवनों को जोडने का काम किया जा रहा है। इस ब्रिज के बनने के बाद दोनों भवनों के बीच आवागमन शुरू हो जाएगा।

स्टॉफ की खलेगी कमी- अस्पताल भवन तो अच्छे बनकर तैयार तो हो रहे है लेकिन स्टॉफ की कमी खल रही है। क्रिटिकल यूनिट के संचालन में भी बडी संख्या में स्टॉफ की जरूरत पडेगी, लेकिन अस्पताल प्रशासन के पास स्टॉफ ही नहीं है। ऐसी स्थिति में क्रिटिकल यूनिट का संचालन करना मुश्किल हो जाएगा। वैसे ही डॉक्टर से लेकर अन्य स्टॉप कम होते जा रहा है। नए स्टॉफ की भर्ती नहीं हो रही है। नतीजा यह है कि अस्पताल की व्यवस्था बिगडे ही रहती है। हाल ही में 150 बिस्तरीय महिला एवं शिशु चिकित्सा ईकाई की शुरूआत हुई है, जिसमें भी स्टॉफ की कमी खल रही है। स्टॉफ कम होने के कारण अस्पताल के मुख्य द्वार को अभी तक नहीं खोला है। पर्याप्त स्टॉफ नहीं होने से व्यवस्था बनाना बहुत मुश्किल हो गया है।

इनका कहना है -

क्रिटिकल यूनिट का काम लगभग पूरा हो गया है। जिला अस्पताल भवन और क्रिटिकल यूनिट को जोडने के लिए ब्रिज बनाया जा रहा है। इसका काम पीआईयू विभाग देख रहा है। जहां तक स्टॉफ की बात है तो इसके लिए स्वास्थ्य विभाग भोपाल से पत्राचार किया जायेगा।
- डॉ. जगदीश घोरे, सिविल सर्जन, जिला अस्पताल बैतूल

ढोल और बाजे के साथ ग्राम नाहिया में महिलाओं ने निकाली जागरूकता रैली

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत की जल श्रोतों की पूजा अर्चना

बैतूल। प्रत्याशा संस्था, नवाकुर, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा ग्राम नाहिया में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। प्रत्याशा संस्था अध्यक्ष सुश्री तूलिका पचौरी ने बताया कि जागरूकता रैली के माध्यम से घर-घर में जल संरक्षण को लेकर जागरूकता की गई एवं पास ही नाहिया डैम पर महिलाओं ने जाकर पूजा अर्चना की एवं जल बचाओ का संकल्प लिया। शामिनी देव एवं प्राजंलि तलहारकर ने बताया कि सबसे पहले विश्व मांगलय सभा

द्वारा ग्राम के शारदा मंदिर में दुर्गा सप्तशती का पाठ किया गया। उसके बाद जल गंगा संवर्धन जागरूकता रैली का आयोजन किया गया।जिसमें गांव की महिलाओं ने बढ़ चढक़र हिस्सा लिया। महिलाओं ने बताया कि नाहिया ग्राम में हमेशा से जल की समस्या रही है, इसके लिए जल संरक्षण की बहुत ही आवश्यकता है। हम सब मिलकर जल स्तर बढ़ाने के लिए आवश्यक कार्य करेंगे। प्रमिला धोत्रे ने कहा कि पानी के बचाव के लिए महिलाओं को एकजुट होकर अपने परिवार से ही जल संरक्षण हेतु प्रयास किया जाना चाहिए। इस अवसर पर विश्व मंगल सभा की ओर से प्राजंलि तलहारकर, शामिनी देव, रूपाली कमाविसदार, वर्षा उमप, मंजू यादव, श्रीराम राव उपस्थित थे। प्रत्याशा अध्यक्ष तूलिका पचौरी द्वारा सभी को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई। ग्राम नाहिया से सुमित्रा झाडे, कविता चौरे, योगिता वराठे, पूनम पंडाग्रे, सीमा पाल, रेणुका वरदे, किरण धाकड़, अनुसूया बारपेटे, बाली, वंदना बारपेटे, अनीता चौरे, लक्ष्मी, मीना तुलसी, बाला, पुष्पा, मीरा, उमा, सरोज आदि महिलाएं उपस्थित थीं।

प्रत्येक विभाग ई ऑफिस से ही करें फाइलों का मूवमेंट : कलेक्टर

जनजातीय कार्य विभाग के भृत्य निलंबित, 3 शासकीय कर्मचारियों के एक दिन का वेतन रोकने के दिए निर्देश

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने शुक्रवार को संयुक्त कलेक्ट्रेट भवन में संचालित शासकीय कार्यालयों का औचक निरीक्षण किया। इस निरीक्षण के दौरान प्रशासनिक लापरवाहियों पर कड़ी कार्रवाई की गई। जनजातीय कार्य विभाग कार्यालय में कलेक्टर सूर्यवंशी को लापरवाही नजर आई, जिसके चलते भृत्य को तत्काल प्रभाव से निलंबित करने के निर्देश दिए गए। इसके अलावा श्रम विभाग के तीन कर्मचारियों के अपने कक्ष में अनुपस्थित पाए जाने पर उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए। साथ ही 3 अन्य शासकीय कर्मचारियों का एक दिन का वेतन रोकने का आदेश भी दिया गया। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने जिले के जिन विभागों में ई-ऑफिस आईडी/मास्टर डाटा तैयार नहीं हुआ अथवा उनकी आईडी जेनरेट नहीं हुई है, उन अधिकारियों का अप्रैल 2025 का वेतन आहरण नहीं किए जाने के निर्देश दिए है।

सभी कार्य- कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने निरीक्षण के दौरान सभी कार्यालय प्रमुखों एवं अधीनस्थ अमलों को प्रतिदिन कार्यालय में ई-ऑफिस का नियमित संचालन करने एवं आज दिनांक को 10 फाईलें ई-ऑफिस से भेजने के निर्देश दिए। इस दौरान कलेक्टर ने कार्यालय के कर्मचारियों को निर्देश दिए कि अब ई-ऑफिस प्रणाली से सभी कार्य किए जाने है इसलिए ई-ऑफिस प्रणाली के माध्यम से ही सभी फाइलें ली जाएं। हार्डकॉपी या अन्य दस्तावेज न लिए जाएं।

अब ई-ऑफिस प्रणाली से करें कलेक्टर ने इन कार्यालयों का किया निरीक्षण - कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने भू-अभिलेख कार्यालय, जिला लोक परियोजना कार्यालय, लोक सेवा प्रबंधन, खाद्य एवं सुरक्षा कार्यालय, जिला शिक्षा केंद्र कार्यालय, जिला अंत्यावसायी, जिला निर्वाचन सामान्य, स्ट्रांग रूम, एसी ट्राईबल, होमगार्ड कार्यालय, महिला एवं बाल विकास विभाग का निरीक्षण किया।

भाजपा के नेतृत्व में विकसित भारत का सपना साकार होगा : सुधाकर

पार्टी के स्थापना दिवस के अवसर पर होगें कई कार्यक्रम

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस को लेकर जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में आयोजित पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने कहा कि वर्तमान समय भारतीय जनता पार्टी का स्वर्ण युग है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक नए युग की शुरूवात हो रही है। एक राष्ट्रएक चुनाव विधेयक, वक्फ विधेयक संशोधन विधेयक जैसे कई ऐतिहासिक निर्णण लिए गए है। श्री सुधाकर पंवार ने कहा कि महाराष्ट्र हरियाणा और दिल्ली की जीत ने यह साबित कर दिया है। कि देश में भ्रम की राजनीति करने वालो को मतदाताओ ने नकार दिया है। लोगो की पहली प्राथमिकता सिर्फ विकास है। मोदी जी के नेतृत्व में भारत विकसित भारत बनने की ओर अग्रसर है। ऐसे अनुकूल वातावरण में भारतीय जनता पार्टी का स्थापना दिवस जिले के सभी 1593 बूथो पर हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। स्थापना दिवस पर होने वाले कार्यक्रमो की जानकारी देते हुए स्थापना दिवस कार्यक्रम जिला संयोजक एवं जिला महामंत्री कमलेश सिंह ने बताया कि स्थापना दिवस के अवसर पर जिला कार्यालय सहित पार्टी के सभी कार्यालयों को रंग बिरंगी रोशनी से सजाया जाएगा एवं कार्यालय पर पार्टी का ध्वज फहराया जाएगा। पार्टी के सभी कार्यकर्ता अपने घरों पर भी पार्टी का ध्वज लगाएंगे। जिला स्तर पर एक प्रदर्शनी लगाई जाएगी। जिसमें 1980 से 2024 तक के सभी जिला अध्यक्षों की तस्वीर के साथ महत्वपूर्ण घटनाओं के चित्र प्रदर्शित किए जाएंगे। 6 एवं 7 अप्रैल को जिले के सभी 1593 बूथों पर सभी प्राथमिक सदस्यों की उपस्थिति में पार्टी का स्थापना दिवस मनाया जाएगा। 8 एवं 9 अप्रैल को प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में सक्रिय सदस्यों का सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। पत्रकारवार्ता में पत्रकारो को जानकारी देते हुए श्री सिंह ने बताया कि इस विधानसभा सम्मेलन में भाजपा की चुनावी सफलता,संगठन विस्तार,भारतीय राजनीति में भाजपा द्वारा लाया गया परिवर्तन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 11 वर्ष के कार्यकाल विकसित भारत की ओर यात्रा विषय पर वरिष्ठ नेताओं के उद्बोधन होंगे। उन्होने बताया कि 7 से 13 अप्रैल तक सभी स्तर के जनप्रतिनिधि किसी एक गांव या वार्ड का लगातार 3 दिन का प्रवास करेंगे। इस दौरान जनप्रतिनिधियों द्वारा प्रत्येक गांव एवं वार्ड में मंदिर, अस्पताल, स्कूल एवं सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। 10 लाभार्थियों से सम्पर्क कर योजनाओं को लेकर विमर्श किया जाएगा। आंगनबाडी, पशुचिकित्सालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, पंचायत भवन एवं सरकारी संस्थानों का भ्रमण किया जाएगा। गांव की गलियों में यात्रा निकाली जाएगी। शाम के समय ग्रामीणों की चौपाल लगेगी।

पेंशनर्स की मासिक बैठक आज, नए सेवानिवृत्त सदस्यों का होगा स्वागत

बैतूल। प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन बैतूल की मासिक बैठक आज 5 अप्रैल को आयोजित की जाएगी। यह बैठक एसोसिएशन के कार्यकारी अध्यक्ष सुन्दरलाल कड़वे के निवास स्थान पर सुबह 11 बजे रखी गई है। बैठक में विगत माह मार्च 2025 में सेवानिवृत्त हुए पेंशनर्स साथियों का विशेष रूप से स्वागत व सम्मान किया जाएगा। साथ ही केंद्र सरकार से सेवानिवृत्त वरिष्ठ पेंशनर्स का भी सम्मान किया जाएगा। बैठक में भाजपा शिक्षा प्रकोष्ठ के पदाधिकारी भी उपस्थित रहेंगे और वे समस्त पेंशनर्स साथियों का सम्मान करेंगे। इसके अलावा वित्तीय वर्ष 2024-25 के समापन के अवसर पर एसोसिएशन की आय-व्यय की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की जाएगी। बैठक में वार्षिक सदस्यता के नवीनीकरण हेतु अभियान प्रारंभ करने पर भी चर्चा की जाएगी। बैठक में अन्य समसामयिक और तात्कालिक विषयों पर भी विस्तार से विचार-विमर्श होगा। कार्यकारी अध्यक्ष सुन्दरलाल कड़वे एवं वरिष्ठ पदाधिकारी रामचरण साहू ने सभी पेंशनर्स साथियों से आग्रह किया है कि वे निर्धारित समय पर बैठक में उपस्थित होकर इसे सफल बनाएं और संगठन की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें।

विधायक कार्यालय में भाजपा की कामकाजी बैठक संपन्न

सुबह सवेरे सोहागपुर। सोहागपुर विधायक विजयपालसिंह के कार्यालय में भारतीय जनता पार्टी के आगामी कार्यक्रम भाजपा स्थापना दिवस एवं संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती के आयोजन को लेकर बैठक आयोजित की गई।इस बैठक में ब्लाक भाजपा अध्यक्ष अश्विनी सरोज, वरिष्ठ वकील जेपी माहेश्वरी,नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटैल ,नपा उपाध्यक्ष आकाश पटैल, पूर्व भाजपा अध्यक्ष अनिल गहरैया, संजीव शुक्ला, उमेश शर्मा सहित कई जनप्रतिनिधि एवं भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।इस अवसर पर वकील माहेश्वरी सहित कई वक्ताओं ने अपने अपने विचार व्यक्त किए। भाजपा ब्लाक अध्यक्ष अश्विनी सरोज ने बताया कि आगामी स्थापना दिवस एवं संविधान लेता डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती मनाने को लेकर बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक में सोहागपुर ब्लाक के सभी 55 बूथों पर स्थापना दिवस मनाया जाएगा। वहीं डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती भी उत्साह से मनाने की रूपरेखा बनाई गई।

आमला-सारणी विधानसभा क्षेत्र की समस्याओं को लेकर प्रभारी मंत्री को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। मध्य प्रदेश शासन के लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा राज्य मंत्री तथा बैतूल जिले के प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल के आमला प्रवास के दौरान विभिन्न संगठनों ने उन्हें आमला-सारणी विधानसभा क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को लेकर ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन मध्य प्रदेश मेहरा समाज संगठन के प्रदेश प्रवक्ता छन्नू बेले के नेतृत्व में दिया गया। ज्ञापन में बताया गया कि आमला के सिविल अस्पताल में डॉक्टरों की कमी के कारण मरीजों को इलाज में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। अस्पताल में आईसीयू, महिला डॉक्टर और अन्य आवश्यक स्वास्थ्य सुविधाएं शीघ्र चालू करने की मांग की गई। प्रदेश प्रवक्ता छन्नू बेले ने बताया कि आमला के विभिन्न संगठनों ने पहले भी अस्पताल की अनियमितताओं और भ्रष्टाचार के खिलाफ तहसीलदार के माध्यम से कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा था। जनसुनवाई में एसडीएम ने आश्वासन दिया था, लेकिन

साइकिल स्टैंड को लेकर अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई।

बीएमओ पर लगाए गंभीर आरोप- प्रभारी बीएमओ डॉ. अशोक नरवरे पर आरोप लगाया गया कि उनके कार्यकाल में अस्पताल में जानबूझकर उपकरणों को चालू नहीं किया जा रहा, अस्पताल कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है और अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को साइकिल स्टैंड का ठेका दिया गया है, जिससे मरीजों और उनके परिजनों से अवैध वसूली की जा रही है। आरोप है कि बीएमओ ने अस्पताल परिसर में अपने नाम पर क्वार्टर आवंटित कर लिया, लेकिन वे वहां निवास नहीं करते, जिससे वहां अनैतिक कार्य हो रहे हैं। साथ ही, ग्रामीण इलाकों में निजी प्रैक्टिस करने वाले डॉक्टरों से लाखों रुपये की अवैध वसूली कर उन्हें धमकाने के आरोप भी लगाए गए हैं। ज्ञापन में मांग की गई कि बीएमओ को हटाकर नए स्थायी अधिकारी की नियुक्ति की जाए।

आमला-सारणी सड़क निर्माण किया जाए

आमला से सारणी तक की स्वीकृत सडक़ का निर्माण शीघ्र शुरू किया जाए। आदिवासी वन ग्रामों में भूमि पट्टे क्षेत्र के आदिवासी वन ग्रामों के निवासियों को स्थायी भूमि पट्टे दिए जाए और जिनके पट्टों की अवधि समाप्त हो गई है, उनका तुरंत नवीनीकरण किया जाए। आमला में रेलवे की रिक्त भूमि पर कोच फैक्ट्री स्थापित की जाए। आमला में ट्यूबवेल खनन पर लगे प्रतिबंध को 15 दिन के लिए हटाया जाए ताकि पानी की समस्या का समाधान हो सके।

मांगें पूरी नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी

ज्ञापन सौंपने वाले संगठनों ने चेतावनी दी कि यदि इन मांगों का शीघ्र समाधान नहीं किया गया तो वे आंदोलन करेंगे। ज्ञापन सौंपने वालों में मध्य प्रदेश मेहरा समाज के प्रदेश प्रवक्ता छन्नू बेले, मध्य प्रदेश किसान एवं ढोलेवार कुनबी समाज के अध्यक्ष सुखदेव नारे, सेन समाज के अध्यक्ष राजेश सूरे, अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के जिला संगठन मंत्री लखन लाल नागले, विनोद बेले, संदीप बचले, कुंवरलाल चौकीकर, जितेंद्र शर्मा, सुनील उईके, विनोद मालवीय, अर्जुन उईके, भोलाराम नारे, नासिर खान, अभिराम मंचित माथनकर, देवेंद्र राजू सहित कई अन्य संगठन पदाधिकारी उपस्थित रहे।

सातवां पोषण पखवाड़ा 8 से 22 अप्रैल तक

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से कुपोषण को कम करने के लिए पोषण अभियान चलाया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष पोषण अभियान के तहत पोषण को जन आंदोलन का स्वरूप देने के उद्देश्य से पोषण पखवाड़ा मनाया जाता है। इस पर सातवां पोषण पखवाड़ा 8 से 22 अप्रैल तक मनाया जाएगा। केंद्रीय महिला बाल विकास मंत्रालय द्वारा 'जीवन के प्रथम 1000 दिवस' पोषण ट्रैकर में लाभार्थी मॉड्यूल को लोकप्रिय बनाने व्यापक प्रचार-प्रसार, समुदाय आधारित पोषण प्रबंधन मॉड्यूल के माध्यम से कुपोषण का प्रबंध तथा बच्चों में मोटापे को दूर करने के लिए स्वस्थ जीवन शैली को अपने पर बाल जैसे थीम पर केंद्रित विभिन्न गतिविधियों को आयोजित करने के निर्देश दिए गए हैं।

पोषण पखवाड़ा के दौरान आंगनबाड़ी केंद्र सेक्टर, परियोजना एवं जिला स्तर की गतिविधियों में स्थानीय पोषण संसाधनों की को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण, सामुदायिक जागरूकता और पोषण संवेदनशील कार्यक्रम जैसे आयोजन किए जाएंगे। आंगनबाड़ी केंद्रों में दैनिक गतिविधियों की तिथिवार थीम आधारित कैलेंडर तैयार किया गया है। सभी जिलों में पखवाड़ा के दौरान साइकिल रैली, पोषण रैली, प्रभात फेरी, गर्भवती महिलाओं और धात्री माता एवं किशोरी बालिकाओं के साथ पोषण ट्रैकर में हितग्राही मॉडल पर समूह चर्चा, कुपोषित बच्चों की स्वास्थ्य जांच, एनीमिया जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाएगा।

पोषण पखवाड़ा के दौरान लोक स्वस्थ एवं परिवार कल्याण, आयुष, शिक्षा, पंचायत एवं ग्रामीण, शहरी विकास सहयोग से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने माँ चामुण्डा एवं माँ तुलजा भवानी के दर्शन कर पूजा अर्चना की

भोपाल(नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने देवास में माताजी की टेकरी पहुंचकर माँ चामुण्डा एवं माँ तुलजा भवानी के दर्शन कर विधि-विधान से पूजा अर्चना की और प्रदेश की जनता की सुख-समृद्धि की कामना की। उन्होंने माताजी से सभी को सुखी और निरोगी रखने की प्रार्थना की।

देवास में उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल का स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा माताजी की तस्वीर भेंट कर आत्मीय स्वागत किया। इस अवसर पर कलेक्टर श्री ऋतुराज सिंह, एएसपी श्री जयवीर सिंह भदौरिया, महापौर प्रतिनिधि श्री दुर्गेश अग्रवाल, श्री रायसिंह सेंधव, श्री राजेश यादव सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारीगण उपस्थित थे।

मंत्री श्री सिंह की अध्यक्षता में नगर पालिका गाडरवारा की बैठक सम्पन्न

नरसिंहपुर। स्वतंत्रमत।प्रदेश के परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह की अध्यक्षता में नगर पालिका परिषद गाडरवारा में आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से एक राष्ट्र - एक चुनाव के पक्ष में प्रस्ताव पारित किया। बैठक में मंत्री श्री सिंह ने बताया कि इसका उद्देश्य भारत के लोकतांत्रिक ढांचे को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाना है। एक राष्ट्र-एक चुनाव का मुख्य उद्देश्य लोकसभा और सभी राज्यों के विधानसभाओं के चुनावों को एक साथ आयोजित करना है, ताकि समय, संसाधन और प्रशासनिक खर्चों की बचत हो सके तथा देश के विकास में निरंतरता बनी रहे।इसके अलावा बैठक में गाडरवारा शहर के विकास और निर्माण कार्यों पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने अशोकनगर के आनंदपुर ट्रस्ट में दर्शन कर पूजा की।

वसंत राशिनकर स्मृति अ. भा. सम्मान घोषित

इंदौर। आपले वाचनालय एवं श्री सर्वोत्तम द्वारा उत्कृष्ट मराठी काव्य कृतियों को दिए जाने वाले वसंत राशिनकर स्मृति अखिल भारतीय सम्मानों की घोषणा कर दी गई है। संस्था सचिव संदीप राशिनकर एवं अध्यक्ष सतीश यवतीकर ने बताया कि देशभर से आई काव्य संग्रहों की प्रविष्टियों में से निर्णायक मंडल ने पुणे के कवि अविनाश सांगोलेकर की कृति अविनाशपासष्टी का चयन कविवर्य वसंत राशिनकर स्मृति अ. भा. सम्मान 2024 के लिए किया है। ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व रविचन्द्र हडसनकर,दासू वैद्य ,गीतेश गजानन शिंदे, संजय चौधरी, डॉ. विशाल इंगोले , राजू देसले, डॉ. बाला साहेब लबडे एवं प्रताप वाघमारे इस प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित हो चुके है। उल्लेखनीय काव्य कृतियों को दिए जाने वाले वसंत राशिनकर काव्य साधना अ. भा. सम्मान 2024 के लिए नाशिक के प्रा . प्र.द. कुलकर्णी की कृति आतून उगवलेल्या कविता , उस्मानाबाद की प्रा. अलका सपकाळ की कृति वादळ झेलताना, सोलापूर के हेमकिरण पत्की की कृति या तहानेला तळ नाही, सरिता पवार, सिंधुदुर्ग की कृति राखायला हवी निजखूण, धुळे के प्रेमचंद अहिरराव की कृति जंगल सहल , बीड के संतोष विठ्ठल घसिंग की कृति अश्वत्थयुग्माचे श्लोक, आंबेगांव के तान्हाजी रामदास बोरूहाडे की कृति जळताना भुई पायतळी और मुंबई की भारती बिर्जे डिग्गीकर की कृति अभिराम प्रहर का चयन किया गया है। आपले वाचनालय राजेंद्र नगर में निकट भविष्य में होने वाले गरिमामय समारोह में ये सम्मान प्रदान किये जायेंगे।

सिंधी साहित्य सभा का पुरस्कार समारोह आज नई दिल्ली में

भोपाल। अखिल भारत सिंधी बोली साहित्य सभा का वार्षिक पुरस्कार समारोह सुहिणा सिंधी 5 अप्रैल को आर्य ऑडिटोरियम ईस्ट ऑफ़ कैलाश नई दिल्ली में हो रहा है। संस्था ने साहित्य,संगीत, चित्रकला,पत्रकारिता, नाटक और नृत्य कला से जुड़ी 10 सिंधी भाषी विभूतियों को सम्मानित किया जा रहा है। इनमें पत्रकारिता अवॉर्ड नंद छुगानी एडिटर कूंज पत्रिका मुंबई, अदीब अवॉर्ड अरुण बाबाणी, मुंबई, संगीत अवार्ड नील तलरेजा, बुरहानपुर, फनकार अवार्ड घनश्याम भगत अजमेर, लैंग्वेज प्रमोशन अवॉर्ड रमेश लाल, नई दिल्ली,चित्रकला अवार्ड आभा आसुदाणी ,नागपुर, नृत्य अवॉर्ड काव्या नावाणी,दिल्ली, सिंधियत अवार्ड विजय इसराणी , नई दिल्ली साहित्य अवॉर्ड वीना श्रृंगी दिल्ली और ड्रामा अवॉर्ड दिल्ली की नाट्य संस्था सिंधु कला संगम के महासचिव कीर्ति ज्ञानचंदानी को दिया जा राधा रहा है। इन विभूतियों को पत्रकारिता, साहित्य, संगीत, भाषा चित्रकला,नृत्य कला और सिंधियत के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान के लिए सम्मानित किया जा रहा है। भारत के सबसे उम्र दराज कार्यक्रम आयोजक सिंधी साहित्य सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एसपी जयसिंघाणी ने बताया कि इस अवार्ड कार्यक्रम में सभा के मप्र पदाधिकारी भोपाल के अशोक मनवानी कार्यक्रम का संचालन करेंगे।

प्रेस-काउंसिल अथवा भारतीय प्रेस-परिषद के नाम का उपयोग करना अवैधानिक, प्रेस-काउंसिल ने जारी की एडवाइजरी

भोपाल (नप्र)। केन्द्र सरकार ने प्रेस-काउंसिल ऑफ इंडिया (भारतीय प्रेस परिषद) के नाम के अनाधिकृत उपयोग पर रोक लगाने के लिए एडवाइजरी जारी की है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा एडवाइजरी में कहा गया है कि उन्हें सूचना मिली है, कुछ प्रेस संगठनों द्वारा 'प्रेस-परिषद' शब्द का अनुचित उपयोग किया जा रहा है, जिससे प्रेस-काउंसिल ऑफ इंडिया की संस्थागत महत्ता प्रभावित हो रही है और उसके विशिष्ट अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए यह एडवाइजरी जारी की गई है।

सचिव सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों में कहा गया है कि प्रेस-काउंसिल ऑफ इंडिया एक सांविधिक निकाय है। इसकी स्थापना प्रेस-परिषद अधिनियम-1978 के तहत प्रेस की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने और समाचार-पत्रों एवं समाचार एजेंसियों के मानकों को बनाए रखने एवं सुधारने के उद्देश्य से की गई थी। इसका सचिवालय नई दिल्ली के लोधी रोड स्थित सीजीओ कॉम्प्लेक्स के सूचना भवन में है। सचिवालय द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि भारतीय प्रेस-परिषद की किसी भी राज्य में कोई शाखा नहीं है, न ही उसने किसी अन्य निकाय को अपने समान या मिलते-जुलते नाम का उपयोग करने के लिए अधिकृत किया है।

सचिवालय से जारी निर्देश के अनुसार किसी संगठन द्वारा प्रेस काउंसिल अथवा भारतीय प्रेस-परिषद शब्द का उपयोग करना, प्रतीक और नाम के अनुचित उपयोग निवारण अधिनियम, 1950 की धारा 3 और प्रविष्टि 7(ii) का उल्लंघन है। इस संदर्भ में केन्द्रीय विधि विभाग ने भी स्पष्ट किया है कि किसी अन्य संगठन द्वारा इस नाम का उपयोग करना अवैध है और इसके लिए कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

सचिवालय ने 'प्रेस-काउंसिल' अथवा भारतीय प्रेस परिषद शब्द का उपयोग न करने के संबंध में सभी जिला कलेक्टर्स को भी निर्देशित किया गया है। सचिवालय का निर्देश है कि यदि कोई स्थानीय, निजी अथवा सरकारी संगठन इस नाम का दुरुपयोग करता है, तो उनके पंजीकरण को निरस्त किया जाए अथवा उसमें आवश्यक सुधार किया जाए।

सरकार की इस पहल का उद्देश्य प्रेस परिषद ऑफ इंडिया की प्रतिष्ठा को बनाए रखना और प्रेस की स्वतंत्रता व मानकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

गेहूं उपार्जन के लिए किसान पंजीयन की अवधि 9 अप्रैल तक बढ़ी

नरसिंहपुर। रबी विपणन वर्ष 2025- 26 में समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी के लिए किसान पंजीयन का कार्य अब 9 अप्रैल तक बढ़ाई गई है। पहले यह पंजीयन का कार्य 20 जनवरी से 31 मार्च तक किया जाना था। शासन द्वारा गेहूं का समर्थन मूल्य 2425 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। इसके अतिरिक्त राज्य शासन द्वारा 175 रुपये प्रति क्विंटल के बोनस की घोषणा की गई है। इस तरह रबी विपणन वर्ष 2025- 26 में गेहूं की खरीदी शासन द्वारा 2600 रुपये प्रति क्विंटल की दर से की जावेगी। किसान जिले के 67 विपणन, वृहताकार, सेवा सहकारी समिति के अतिरिक्त समस्त प्राइवेट सीएससी, एमपी ऑनलाइन, ग्राम पंचायतों से जाकर पंजीयन कर सकते हैं। इसके अलावा किसान स्वयं के मोबाइल में किसान एप के माध्यम से घर बैठे भी पंजीयन कर सकेंगे, इससे किसानों को पंजीयन केन्द्रों में लाईन लगाकर पंजीयन कराने से छुटकारा मिलेगा। एमपी ऑनलाइन, कियोस्क, कॉमन सर्विस सेंटर- कियोस्क, निजी साइबर केफे भी शासन के निर्देशानुसार आवेदन कर पंजीयन का कार्य विधिवत फ्लैक्स तथा निर्धारित पंजीयन शुल्क अधिकतम 50 रुपये की सूचना प्रदर्शित करते हुए, कर सकेंगे। पंजीयन में किसी भी तरह की समस्या के समाधान के लिए क्षेत्रीय सेवा सहकारी समिति, सहकारिता निरीक्षक, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत से सम्पर्क किया जा सकता है। समर्थन मूल्य पर विक्रय करने के इच्छुक किसानों से आग्रह किया गया है कि वे अपने आधार से जुड़े हुए बैंक खाते व समस्त आवश्यक अभिलेखों के साथ अपने मोबाइल किसान एप के माध्यम से अथवा उपरोक्त पंजीयन केन्द्रों में जाकर पंजीयन का कार्य शीघ्र पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। यह जानकारी जिला आपूर्ति अधिकारी नरसिंहपुर ने दी है।

गांव एवं बस्ती चलो अभियान से भाजपा की रीति नीति से जोड़े जायेंगे आमजन : रामस्नेही पाठक

नरसिंहपुर। जिला भाजपा कार्यालय में जिलाध्यक्ष पं. रामस्नेही पाठक की अध्यक्षता में पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए श्री पाठक ने बताया कि पार्टी के बूथ स्तरीय 6 अनिवार्य कार्यक्रमों में से एक 6 अप्रैल स्थापना दिवस को प्रत्येक बूथ स्तर पर प्राथमिक सदस्यों के साथ हर्षोल्लास के साथ मनाना है एवं अपने अपने घरो पर पार्टी का ध्वज फहराना है। इसके उपरांत 8 से 9 अप्रैल को मंडल एवं विधानसभा स्तर पर सक्रीय सदस्यों का सम्मेलन करना है इसके उपरांत 13 अप्रैल तक गांव एवं बस्ती चलो अभियान का आयोजन किया जाएगा। इसके अंतर्गत स्कूल मंदिर एवं अस्पताल में स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। शासन की योजना के लाभार्थियों से मिलकर उनसे योजनाओं के संदर्भ में चर्चा करना, ग्रामीण चौपाल पर चर्चा करना, आपातकाल के नायक मीसाबंदियो एवं कारसेवको से मुलाकात कर उनका सम्मान करना। इसके साथ ही बूथ समितियों की बैठक करना। 14 अप्रैल भारतरत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की जयंती पर स्वच्छता अभियान एवं शाम के समय दीपोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा इसके साथ ही संविधान की

प्रस्तावना का सामूहिक पाठ किया जाएगा। आंगनवाडी केन्द्रो एवं अनुसूचित जाति के स्कूलो में पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराना एवं परिसर की साफ सफाई की जाना सुनिश्चित की जाएगी। 15 से 25 अप्रैल लखनऊ में आयोजित भारत रत्न डॉ.भीमराव अम्बेडकर के अनुसूचित जाति महासंघ के भाषण पर सगोष्ठी, समाज के विभिन्न वर्ग के नेताओं के साथ दो सत्रो में जिला स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन करेंगे जिस तरह से कांग्रेस ने भारत रत्न डॉ.भीमराव अम्बेडकर को उनके जीवन के विभिन्न पडावो पर अपमानित किया और भाजपा ने जिस तरह उन्हे सम्मान दिया इस पर चर्चा की जाएगी जिस तरह से कांग्रेस ने संविधान के प्रावधानो को कमजोर किया और भाजपा ने संविधान के प्रति जो सम्मान प्रेषित किया उस पर चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही उन्होने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं गृह मंत्री अमितशाह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस तरह केन्द्रीय नेतृत्व ने सदन में एक राष्ट्र एक चुनाव विधेयक वक्फ संशोधन विधेयक जैसे निर्णय देश को सशक्त करेंगे। हरियाणा, महाराष्ट्र एवं दिल्ली में एनडीए की निर्णायक जीत ने पुनः स्थापित कर दिया है कि भारतीय मतदाता नकारात्मक एवं भ्रम फैलाने वालो को स्वीकार नही करेंगा। इसके साथ ही उन्होने कहा कि उत्तराखंड, हरियाणा, गुजरात, छत्तीसगढ. के स्थानीय निकाय चुनावो में पार्टी की प्रचण्ड जीत से यह शाबित होता है कि जनता जर्नादन की पहली प्राथमिकता विकास ही है। उक्त जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी अभिनव शर्मा ने बताया कि उक्त पत्रकारवार्ता में जिला महामंत्री डॉ.हरगोविंद सिंह पटैल, जिला कोषाध्यक्ष नीलकमल जैन, सिंहपुर मंडल अध्यक्ष राघवेन्द्र जाट, नरसिंहपुर नगर मंडल अध्यक्ष अंशुल नेमा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

2 लिस्टेड गुंडे हथियारों के साथ पकड़े

• जुए के अड्डे पर जा रहे थे, बोले-वहां होता है विवाद, चेकिंग में पुलिस ने दबोचा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के टीला जमालपुरा थाना पुलिस ने गुरुवार रात चैकिंग के दौरान छोला थाना क्षेत्र के दो लिस्टेड बदमाशों को हथियार के साथ गिरफ्तार किया। आरोपियों के पास से दो छुरियां बरामद की गईं। पूछताछ में उन्होंने खुलासा किया कि वे हरी मजार इलाके में चल रहे एक जुआघर में जुआ खेलने जा रहे थे।

टीआई डीपी सिंह ने बताया कि हरी मजार बस्ती के पास लगातार संदिग्ध गतिविधियों की सूचना मिल रही थी। इसी के चलते वसुंधरा कॉलोनी में नाका लगाकर रात में चेकिंग की जा रही थी। इस दौरान बाइक पर सवार दो संदिग्धों को रोका गया। उन्होंने अपनी पहचान नरेंद्र साहू (30) और अमित पाल (32) के रूप में दी, जो छोला क्षेत्र के रहने वाले हैं।

एक दर्जन से ज्यादा अपराध दर्ज- तलाशी लेने पर दोनों के पास से छुरी बरामद हुई। थाने लाकर जब उनका आपराधिक रिकॉर्ड खंगाला गया तो पता चला कि नरेंद्र पर छोला, गौतम नगर और हनुमानगंज थानों में कुल 13 गंभीर अपराध दर्ज हैं। वहीं अमित पर भी पूर्व में कई मामले दर्ज हैं।

पुलिस पूछताछ में दोनों ने बताया कि हरी मजार के पास स्थित एक घर में जुआ चलता है। वे वहीं जुआ खेलने जा रहे थे। उन्होंने कहा कि अक्सर जुए के दौरान विवाद हो जाते हैं, इसलिए वे सुरक्षा के लिए हथियार लेकर चलते हैं। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ आर्म्स एक्ट समेत संबंधित धाराओं में केस दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। वहीं गिरफ्तारी के बाद इलाके में चल रहे जुए के अड्डे में हड़कंप मच गया है। पुलिस अब इस जुआघर के संचालकों की तलाश में जुटी है।

बेरहम बहू

बहू ने सास को बाल पकड़कर घसीटा, आंख पर मारे घूंसे

ग्वालियर (एजेंसी)। शहर के शिंदे की छावनी इलाके में एक बेरहम बहू ने अपनी सास को बाल पकड़कर घसीटा। जमीन पर पटककर उसे लात-घूंसे मारे। इतना ही नहीं अपने पति को पिता व भाई और इनके साथ आए गुंडों से पिटवाया।

गनीमत रही कि आसपास रहने वाले लोगों ने बीच-बचाव किया। इन लोगों के चंगुल से वृद्धा और उसके बेटे को बचा लिया। पीड़िता वृद्धा का कहना है कि उनकी बहू वृद्धाश्रम भेजने पर उतारू है, इसलिए वह बेटे पर दबाव बनाती है।

बेटे ने इंकार किया, तो उसे भी प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। अब वह और उसके परिवार वाले मारपीट भी करने लगे हैं। इसके चलते घर तक छोड़ने को मजबूर हो गए हैं। पीड़ित मां-बेटे अपनी शिकायत लेकर पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचे।

भले ही सरकार सरल नामांतरण सुविधा की ढींगे हांकती हो, लेकिन नामांतरण कराने बार-बार काटने पड़ते हैं तहसील दफ्तर के चक्कर : अवनीश बुंदेला

भोपाल। इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता कि जो व्यक्ति अपनी मेहनत-खून पसीने की कमाई से अपने जीवन काल में अपने और अपने परिवार के लिए आसियाना बनाता है, इसको खरीदने में अपना पेट काटकर अपने जीवन की एक आमदनी का बड़ा हिस्सा उसमें खर्च करता है। उसकी वह अचल संपत्ति में भूमि एक ऐसी वस्तु है की जो भी व्यक्ति इसको खरीदता है उसे भूमि को सहेज के रखता है। लेकिन वर्तमान में मध्य प्रदेश में परिस्थितियां कुछ ऐसी बनी हुई हैं कि संपत्ति खरीदने पर लगभग 10.50 प्रतिशत पंजीयन शुल्क सरकार को देने के बावजूद भी उस व्यक्ति को नगर निगम विभाग के द्वारा जिसमें नाली, सड़क, बिजली और पानी जैसी मूलभूत सरकारी सुविधाओं को लाभ उसे आसानी से नहीं मिल पाता, उस सुविधा से उसे वंचित रहना पड़ता है। जिसका एक सबसे बड़ा कारण है मध्य प्रदेश में 2022 के बाद संपत्तियों की नामांतरण उचित ढंग से नहीं हो पा रहे है।

मध्य प्रदेश में संपत्तियां चाहे वह खेती की जमीन हो, रहवासी जमीन हो, मकान हो या प्लाट हो, आज की तारीख में नामांतरण प्रक्रिया एक बहुत जटिल समस्या बन गई है। आम आदमी, किसानों, मध्यमवर्गीय लोगों के लिए अपनी संपत्ति का नामांतरण कराना शिखर पर चढने के समान हो गया है।

यदि अपनी पहुंच रखने वाला व्यक्ति संबंधित राजस्व निरीक्षक, पटवारी, तहसीलदार से मेल मुलाकात कर सेवा शुल्क दे देता है तो भी लगभग 2 महीने चक्कर काटने के बाद संभवतः नामांतरण हो जाता है। लेकिन आम और गरीब आदमी के लिए नामांतरण कराना इतना आसान नहीं होता है।

यह संज्ञान में लाना बहुत आवश्यक है कि जब एक गरीब व्यक्ति नियम अनुसार नामांतरण करवाने के लिए तहसील और नजूल विभाग जाता है जबकि उसके पास उसकी संपत्ति के समस्त दस्तावेज होते हैं और वह सारे दस्तावेज पहले से ही रिकार्ड में दर्ज भी होते हैं तब भी उससे पहले तो कागज़ जमा करवाए जाते हैं। तहसीलदार, पटवारी के चक्कर काटने के बाद पुराने रिकार्ड में भी कमी बताकर नामांतरण आवेदन को नियमों के हिसाब से निरस्त कर दिया जाता है। जबकि रिश्वत देने पर यह सारे नियम ताक पर रखकर तत्काल प्रभाव से नामांतरण कर दिया जाता है।

यदि राजस्व में तहसीलदार, राजस्व निरीक्षक, पटवारी के पास रिकॉर्ड अनुसार जानकारी आवेदक से मांगी जाए, जबकि पंजीयक शुल्क वह व्यक्ति पहले ही दे चुका होता है और अगर इस विषय का अध्ययन कर ढंग से जांच किया जाए तो शायद प्रदेश का यह एक बहुत बड़ा भ्रष्टाचार साबित होगा।

यदि हम बात ग्रामीण क्षेत्र की करें तो किसान अपना पूरा जीवन अपनी जमीन की देखभाल में निकाल देता है, वह अपनी जमीन को वह खून पसीने से सींचता है और अपने प्राणों से भी ज्यादा चाहता है। क्योंकि वही उसके जीवन यापन का एक मुख्य साधन होती है। लेकिन जब वही किसान अपनी मर्जी से वह जमीन अपने बच्चों को देना चाहता है, वसीयत बनाते हैं तो आसानी से वह नामांतरण नहीं करवा पाता है, वह उस किसान की खुद की जमीन है। इतना ही नहीं यदि किसी कारणवश किसान की मृत्यु हो जाए तो उसके परिजनों को महीनों-सालों तक तहसील के चक्कर लगाने पड़ते हैं, बार-बार राजस्व निरीक्षक, तहसीलदार, पटवारी तरह-तरह के नियम का हवाला देकर उसका नामांतरण नहीं करते और वह हार-थक कर घर बैठ जाता है। नामांतरण प्रक्रिया आज की तारीख में एक बहुत मुश्किल और जटिल प्रक्रिया बन गई है।

इसी विषय को टीकमगढ़ के कांग्रेस विधायक श्री यादवेन्द्र सिंह बुंदेला ने विधानसभा के पटल पर 21/03/2025 को उठाया और सरकार का ध्यान आकर्षित करते हुए बताया कि अकेले टीकमगढ़ जिले की तहसीलों में 13000 से ज्यादा नामांतरण के प्रकरण लंबित हैं तथा 4383 प्रकरण नामांतरण के न्यायालय में लंबित है। जिसमें से 3993 मामले तो सिर्फ पिछले तीन माह के है और 389 पिछले छः माह के। तहसील विभाग से एवं जिला कलेक्टर की यहां से जो प्रकरण निरस्त होते हैं उनका आधार सिर्फ एक होता है कि विक्रम संवत 2015 का रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है। अर्थात 1958-59 का इसलिए नामांकन निरस्त किए जाते हैं।

क्या विक्रम संवत का रिकॉर्ड लाने की जिम्मेदारी एक आम आदमी की है जो की स्टैंप ड्यूटी भी दे रहा है, संपत्ति कर, जल कर, बिजली कर सहित कई तरह के कर दे रहा है। फिर भी उससे कहा जाता है कि विक्रम संवत् 2015 का रिकॉर्ड लेकर आयें, जनता के साथ यह कैसा अन्याय है, यह कहां तक जायज है?

जब विधानसभा के पटल पर 21/03/2025 को विधायक यादवेंद्र सिंह ने मंत्री करण सिंह वर्मा को बताया कि लोक सेवा गारंटी में 929 मामले आपके पास उन्होंने भेजे थे, जिसमें से आपने 814 निरस्त कर दिए केवल 115 मामले ही स्वीकृत किये गये। इस पर मंत्री करण सिंह वर्मा जिला कलेक्टर से मिलने की हिदायत देते हैं खुद इस विषय से बचने का प्रयास करने लगे, फिर श्री यादवेंद्र सिंह जी ने जवाब में कहा कि आप जिला कलेक्टर की क्या बात करते हैं मैं राजस्व प्रमुख सचिव के कई बार खुद चक्कर लगा लगाकर आया हूं तो करण सिंह वर्मा फिर कहने लगे की आप कलेक्टर से मिलिए श्री वर्मा इस विषय पर साफ तौर पर पल्ला झाड़ते हुये नजर आये। मतलब 13000 नामांतरण का आंकड़ा सिर्फ अकेले टीकमगढ़ जिले का है तो प्रदेश स्तर पर यह आंकड़ा लाखों से ज्यादा का होगा। यह बड़ा हास्यपद है की तहसील में हमेशा आम नागरिकों को पुराने रिकॉर्ड का हवाला देकर परेशान किया जाता है, जबकि यदि आवेदक के पास पुराना रिकॉर्ड होता, उसकी जानकारी उसके पास होती तो वह तहसील जाता ही क्यों?

वृद्धा ने लगाए बहू पर गंभीर आरोप- शिंदे की छावनी स्थित आदर्श कॉलोनी में रहने वालीं 70 वर्षीय सरला बत्रा ने बताया कि वह अपने बेटे विशाल, बहू नीलिका और इनके बच्चों के साथ रहती हैं। पिछले करीब एक साल से बहू नीलिका उन्हें वृद्धाश्रम भेजने के लिए लगातार बेटे विशाल पर दबाव बना रही है। बीते रोज उसने इसी बात पर झगड़ा शुरू किया। अपने पिता सुरेंद्र कोहली, बेटे नानक कोहली को बुला लिया। यह लोग चार गुंडे अपने साथ लेकर आए थे। घर के पोर्च में बेटा विशाल था। पहली मंजिल से बहू नीलिका गालियां दे रही थी।

इसी दौरान सुरेंद्र कोहली, नानक कोहली गुंडों के साथ घर में घुस आए। बेटे की मारपीट शुरू कर दी। वह बचाने आई तो बहू नीलिका ऊपर से उतरकर आई। उसने बाल पकड़कर जमीन पर पटका। इसके बाद तो लात-घूंसें बरसाना शुरू कर दिए। उनकी आंख में घूंसे मारे। बेटे को उसके परिवार वाले गुंडों के साथ मिलकर घसीटते हुए बाहर ले गए। यहां सड़क पर पटककर पीटा। वह बाहर गई, तो यहां दोबारा उनकी बहू ने हमला कर दिया। उसी समय पड़ोसी मदद के लिए आए।

घर छोड़ जा, नहीं तो बेटे और तुझे मार डालूंगी- सरला ने बताया कि उनकी बहू कहती है कि घर छोड़ जा। घर नहीं छोड़ा तो तुझे और तेरे बेटे को जान से मार डालूंगी। उसने यह तक धमकी दी कि उसकी सुपारी दे दी है।

इंदरगंज पुलिस पर लापरवाही का आरोप- सरला ने बताया कि ऐसे मामले में भी इंदरगंज पुलिस ने लापरवाही बरती है। पहले दिन मां-बेटे शिकायत लेकर पहुंचे तो एफआइआर की जगह, एनसीआर काटकर चलता कर दिया गया। अगले दिन एफआईआर की गई। सरला ने कहा कि मेरे आरोप एफआईआर में नहीं लिखे गए। आरोपियों ने राजनीतिक रसूखदारों से सिफारिश कराई थी।

राइट क्लिक

मनोज कुमार की फिल्मी देशभक्ति ने तैयार की राष्ट्रवादी सत्ता की भावभूमि

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

हिंदी फिल्मों में गुजरे जमाने के एक खूबसूरत, खयालों में खोए से और देशभक्ति को अपनी पिक्करों की केन्द्रीय थीम बनाकर देश को एक अलग तरह का संदेश देने वाले हीरो मनोज कुमार का हिंदी फिल्म जगत को क्या अवदान है? देशभक्ति की उनकी परिभाषा, सेल्युलाइड पर उसका चित्रण को भारत की बदलती राजनीतिक, सामाजिक चेतना के सदंर्भ में मनोज कुमार की भूमिका को हम किस रूप में याद करें? यह सवाल 87वें साल में उनके निधन के बाद ज्यादा मौजूं हो गए हैं। समग्रता में देखें तो मनोज कुमार ने फिल्मों में अपनी आदर्शवादी, समावेशी देशभक्ति व राष्ट्रप्रेम के जरिए भविष्य में एक केन्द्रीय राजनीतिक विचार में तब्दील होने वाले प्रखर और काफी हद उग्र राष्ट्रवाद की शुरूआती जमीन तैयार की। मनोज कुमार कितने महान और वर्सटाइल अभिनेता थे, इस पर प्रश्नचिन्ह हैं, लेकिन वो एक निष्णात, डायरेक्टर, निर्माता संपादक और संवाद लेखक निःसंदेह थे। मनोज कुमार ने देश की स्वतंत्रता के एक दशक बाद नैतिक मूल्यों का आदर्श कायम रखते हुए देश के लिए जीने-मरने का ऐसा संदेश दिया, जो उस जमाने में हावी समाजवादी सोच और धर्मनिरपेक्ष आग्रहों से थोड़ा अलग हटकर था। इस अर्थ में मनोज कुमार को निर्मल देशभक्ति और प्रखर राष्ट्रवाद के मिलन बिंदु पर खड़ा कलाकार कहा जा सकता है, जो रोमांस में भी राष्ट्रीय मूल्यों को सहेजता है और जो राष्ट्रीय मूल्यों में रोमांस को जीता है। कुछ लोग मनोज कुमार की देशभक्ति को अति भावुकता से लबरेज और किसी हद तक अवास्तविकता से भरा मानते हैं। बावजूद इसके यह सच्चाई है कि मनोज कुमार ने यह फार्मूला व्यावसायिक तौर पर हिंदी फिल्मों में सफलता से अप्लाय किया और अपनी एक अलग छवि तैयार की।

यूं मनोज कुमार ने अपना फिल्मी कॅरियर उनकी पहली फिल्म 'कांच की गुड़िया'(1961) से शुरू किया। लेकिन उस फिल्म के चाकलेटी चेहरे वाले हीरो मनोज कुमार का कोई खास नोटिस नहीं लिया गया। याद रहे कि मनोज कुमार का फिल्म इंडस्ट्री में आगमन उस जमाने में हुआ, जब एक तरफ देवदास तो दूसरी तरफ प्ले ब्वॉय या फिर समाजवादी विचार से प्रेरित फिल्मी नायकों का जोर था। खुद मनोज कुमार जिनका असली नाम हरेकृष्ण गोस्वामी था, दिलीप कुमार के प्रशंसक थे और दिलीप साहब की एक पुरानी फिल्म 'शबनम' में उनके किरदार 'मनोज कुमार' से प्रभावित होकर अपना फिल्मी नाम भी मनोज कुमार रख लिया था। फिल्मों में शुरूआती चार साल मनोज कुमार के संघर्ष के थे। हालांकि आंखें बंद कर डायलॉग बोलने की उनकी अदा जरूर नोटिस की गई थी। 1964 में आई राज खोसला की यादगार फिल्म 'वह कौन थी' में मनोज बतौर हीरो नमूदार हुए, लेकिन वह फिल्म चली हीरोइन साधना के अभिनय और मदन मोहन के अमर संगीत के कारण। आज भी इस फिल्म के लिए लताजी द्वारा गाया 'लग जा गले' लता दीदी के टॉप टेन सांग में शामिल करना ही पड़ता है।

लेकिन मनोज कुमार की फिल्मी कामयाबी और हिंदी फिल्म उद्योग में देशभक्ति को सफल व्यावसायिक फार्मूला बनाने की कहानी शहीद भगत सिंह पर बनी फिल्म 'शहीद' से शुरू होती है। इस फिल्म का संगीत आज भी लाजवाब है। इसी फिल्म को देखकर तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने मनोज कुमार को देशभक्ति और उनके अमर नारे ' जय जवान, जय किसान' पर केन्द्रित एक फिल्म बनाने का सुझाव दिया। मनोज कुमार ने उस पर पूरी ईमानदारी से अमल किया और फिल्म 'उपकार' बनाई। मूलतः ये एक प्रचार फिल्म ही थी, लेकिन इसने रचनात्मकता, संवेदनशीलता, मैसेजिंग और बॉक्स आफिस पर कामयाबी का नया इतिहास रचा। इसीलिए देश में राजनीतिक एजेंडों पर जितनी भी फिल्में बनी हैं, उनमें 'उपकार' का मयार सबसे अलग और शाश्वत है। मनोज कुमार ने इसे दिल से बनाया था। यानी यह प्रचार फिल्म होकर भी देशप्रेम का सार्थक संदेश देने वाली अमर फिल्म बन गई। शानदार पटकथा, कहानी, अभिनय, संवाद, पात्रों की संरचना, गीत और संगीत ने भी इस फिल्म को हिंदी की श्रेष्ठ फिल्मों में स्थापित कर दिया। इस फिल्म के निर्माण के दौरान हुए भारत-पाक युद्ध के दौरान उभरे राष्ट्रप्रेम, युद्ध के कुछ समय बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की असमय और रहस्यमय मौत ने इस फिल्म की प्रासंगिकता को और बढ़ा दिया। इस फिल्म में महेन्द्र कपूर द्वारा गाए देशभक्ति गीत 'मेरे देश की धरती' ने हमारे राष्ट्रीय पर्वों के थीम सांग की जगह ले ली और खुद महेन्द्र कपूर देशभक्ति गीतों के आइकन और मनोज कुमार 'भारत कुमार' की ऐसी छवि में ऐसे ढल गए कि जिसका लाभांश उन्हें 1981 तक मिलता रहा।

हालांकि मनोज कुमार ने 'उपकार' के बाद 'पूरब पश्चिम', 'रोटी-कपड़ा-मकान', 'क्रांति' जैसी देशभक्ति पूर्ण और बॉक्स ऑफिस पर हिट फिल्में बनाईं, लेकिन 'उपकार' जैसा क्लासिक शाहकार वो नहीं बन सकीं।

इस दृष्टि से 1965 से 1981 का वह दौर, जो दो भारत-पाक युद्धों, समाजवादी-सेक्युलर और राष्ट्रवादी विचारों के बीच गहराते संघर्ष, आदर्शवाद और व्यवहारवाद में बढ़ते टकराव, 1971 के युद्ध में भारत की निर्णायक जीत के बाद आपातकाल में लोकतंत्र का दमन, गैर कांग्रेसी विचारों का असफल एकीकरण, नई राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक चेतना की दरकार एवं आजादी के बाद देखे और दिखाए गए सपनों के मोहभंग के बीच मनोज कुमार का फिल्मों में देशप्रेम के गुण गाते रहने का आग्रह शुरू में बहुत प्रेरक महसूस हुआ, लेकिन बाद में वह केवल फिल्मों को हिट बनाने वाले फार्मूले में तब्दील हो गया। खासकर देश में बढ़ती बेचैनी, एंग्री यंगमैन बनती जा रही पीढ़ी को यह फार्मूला अप्रासंगिक महसूस होने लगा। उदार, सौम्य और सर्व समावेशी देशप्रेम धीरे- धीरे उग्र राष्ट्रवाद में बदलने लगा। सत्तर के दशक के अंतिम वर्षों में देश में 'सर्व धर्म समभाव' की उदात्त चेतना की जड़ें हिलने लगी थी। ऐसे में मनोज कुमार का 'मेरा रंग दे बसंती चोला' का आह्वान भी रंग खोने लगा था। अस्सी के दशक में बहुसंख्यक हिंदुओं की धार्मिक चेतना उग्र राष्ट्रवाद के आवरण में नई हिलोरे लेने लगी, तब तक मनोज कुमार स्टाइल की देशभक्ति असर फीका पड़ गया था। बावजूद इसके 'मनोज कुमार उर्फ 'भारत कुमार' चरित्र के दो प्रातिनिधिक गीत 'मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती' और भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूं..' भविष्य में आर्थिक और सैनिक ताकत वाले भारत की पूर्व पीठिका तैयार कर चुके थे। वैसे 'देशभक्ति फार्मूले' से इतर भी मनोज कुमार ने कई फिल्मो में रोमांटिक हीरो' का किरदार जिया, लेकिन इस रोल में वो किसी भी पीढ़ी का वैसा आइकन नहीं बन सके, जैसे दिलीप कुमार, देवानंद, राजेश खन्ना, अमिताभ बच्चन या शाहरूख खान रहे हैं। अपने सफल फिल्मी जीवन के आखिरी सालों में उन्होंने राजनीति में कदम रखकर अगर 'भारतीय जनता पार्टी' की सदस्यता ली तो यह मनोज कुमार का स्वाभाविक चयन ही था। यह भी संयोग है कि भारतीय फिल्म जगत का सर्वाधिक प्रतिष्ठित दादा साहब फालके पुरस्कार भी मनोज कुमार को 2015 में मोदी सरकार सत्ता में आने के बाद मिला। हालांकि 1992 में नरसिंहराव सरकार के समय उन्हें पद्मश्री से नवाजा गया था। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि जिस जमीन पर आज 'इंडिया फर्स्ट' वाली सोच का महल खड़ा है, फिल्म जगत में उसकी नींव मनोज कुमार ने ही रखी थी।

॥ मंदिरम् ॥

75

जगन्नाथ मंदिर, डिब्रूगढ़ असम

श्री क्षेत्र धाम, महाप्रभु जगन्नाथ मंदिर असम के डिब्रूगढ़ जिले के डिब्रूगढ़ शहर में स्थित भगवान जगन्नाथ को समर्पित एक मंदिर है। मंदिर का निर्माण 2014 में पुरी, ओडिशा में श्री जगन्नाथ मंदिर की प्रतिकृति के रूप में किया गया था, जो हिंदू धर्म के चार प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह मंदिर 85 फीट की ऊंचाई पर है और डिब्रूगढ़-तिनसुकिया बाईपास रोड के किनारे खानिकर में महात्मा गांधी पार्क के पास स्थित है। वास्तुशिल्प डिजाइन के संदर्भ में, मंदिर पुरी में स्थित मूल जगन्नाथ मंदिर के दूसरे रूप की नकल करता है।

राम राजा की नगरी ओरछा को 25 करोड़ से संवारेंगे

केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने राशि दी, पहले 100 करोड़ रुपए मिल चुके

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में राम राजा की नगरी ओरछा को केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने 25 करोड़ रुपए दिए हैं। इस राशि से यह नगरी संवारी जाएगी। स्वदेश दर्शन योजना 2.0 में यह राशि मंजूर की गई है। इससे ओरछा में टूरिस्ट एक्सपीरियंस सेंटर, हुनर शाला, एंट्री प्लाजा के साथ यात्रा पथ का विकास किया जाएगा।

इससे पहले दिसंबर महीने में विरासतों के संरक्षण और संग्रहालयों के विकास आदि के लिए करीब 100 करोड़ रुपए मंजूर किए गए थे। बता दें कि वर्ष 2027-28 में ओरछा को यूनेस्को विश्व धरोहर के रूप में मान्यता दिए जाने के लिए केंद्र सरकार ने यूनेस्को को सिफारिश की है। साथ ही ओरछा को यूनेस्को की एचयूएल (हिस्टोरिकल अर्बन लैंडस्केप) पहल के तहत चुना गया है।

पर्यटन और संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव शिव शेखर शुक्ला ने बताया, योजना के तहत चेलेंज्ड बेस्ड डेस्टिनेशन डेवलपमेंट पहल शुरू की है। जिसका उद्देश्य पूरे देश में पर्यटन स्थलों का विकास करना है। इस योजना के तहत 50 स्थलों (प्रत्येक राज्य में अधिकतम 5) को विकास के लिए चुना जाना है। इसके तहत ओरछा को आध्यात्मिक गंतव्य स्थल की श्रेणी में चुना गया है। ओरछा में पर्यटकों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पर्यटन सुविधाओं के विकास के साथ शहर के

सौंदर्यीकरण, ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण और स्थानीय कलाकारों और संस्कृति का संरक्षण किया जाएगा। इससे ओरछा में देशी - विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी और स्थानीय समुदाय को भी आर्थिक लाभ मिलेगा। चैलेंज बेस्ड डेस्टिनेशन डेवलपमेंट के संदर्भ में किए जाने वाले कार्य है।

टूरिज्म इंटरप्रेटेशन सेंटर- केंद्र सरकार से मिली सहायता से ओरछा में तोपची की हवेली के पास पर्यटन अनुभव केंद्र का विकास किया जाएगा। जिसमें ओरछा का 3डी मॉडल, पैनल्स के माध्यम से ओरछा की ऐतिहासिक यात्रा का प्रदर्शन, बुकिंग कियोस्क, चिल्ड्रन प्ले एरिया और कैफे का निर्माण किया जाएगा।

हुनर शाला- स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाए जाने वाले सुविनियर को उत्कृष्ट बनाने का प्रशिक्षण देकर हुनर शाला के रूप में बाजार उपलब्ध कराया जाएगा। यहां पर्यटक न सिर्फ सुविनियर खरीद सकेंगे, बल्कि उन्हें बनता हुआ देखने के साथ वर्कशॉप में स्वयं बना भी सकेंगे। हुनर शाला में ओपन एयर एमपी थिएटर का भी विकास किया जाएगा। पर्यटकों की सुविधा के लिए पार्किंग और दुर्ग समूह के बीच ब्रिज के दोनों ओर एंट्री प्लाजा बनेगा। जिसमें ई चार्जिंग स्टेशन और क्यूआर बेस्ड टिकटिंग की सुविधा होगी।

पहले मंजूर राशि से यह काम

- ओरछा शहर के आधारभूत संरचना में सुधार।
- प्रवेश द्वारों का संरक्षण एवं पुलों का जीर्णोद्धार।
- संग्रहालय के आसपास व शहर की सड़कों को जोड़ना। यहां ई-कार्ट पार्किंग, चार्जिंग स्टेशन सुविधाएं, साइनेज आदि विकसित करना।
- स्मारकों को जोड़ने वाले मार्गों का विकास।
- प्रोजेक्शन मैपिंग और स्थानीय कलाकारों द्वारा लाइव परफॉमेंस।
- क्यूआर आधारित वॉक एप विकसित करना।
- सड़क पर रोशनी और हेरिटेज लाइटिंग।
- गढ़ परिसर के अंदर मंदिर/स्मारकों का संरक्षण।
- संग्रहालयों का विकास।
- आधुनिक शौचालयों का निर्माण व मेला ग्राउंड का विकास।
- शॉपिंग क्षेत्र का विकास।

नवीन युग की ओर अग्रसर ओरछा

इस विकास से न केवल ओरछा का सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व बढ़ेगा, बल्कि स्थानीय समुदाय को भी आर्थिक लाभ मिलेगा। इन योजनाओं के क्रियान्वयन के साथ, ओरछा विश्व पर्यटन के मानचित्र पर अपनी अद्वितीय छवि स्थापित करेगा और एक नई पर्यटन क्रांति का सूत्रपात करेगा।

मऊगंज में घर में मिले पिता-दो बच्चों के शव

फांसी पर लटके थे ; परिजन का आरोप पुलिस की पिटाई के बाद बाहर नहीं निकले

मऊगंज (नप्र)। मऊगंज जिले के गडरा गांव के एक घर में तीन शव मिले हैं। बदबू आने पर पड़ोसियों ने पुलिस को सूचना दी थी। पुलिस गेट खोलकर अंदर गई तो तीन शव फंदे से झूल रहे थे। उनकी पहचान औसेरी साकेत, उसकी बेटी मीनाक्षी (11) और बेटे अमन (8) के रूप में हुई है।

औसेरी के भाई की पत्नी का कहना है कि पिछले दिनों हिंसा के बाद गांव में सुरक्षा के लिए तैनात पुलिस ने जेठ से मारपीट की थी। उसी दिन से उन्होंने घर का गेट नहीं खोला। वो अपने से फांसी नहीं लगाए हैं। इसके लिए पुलिस जिम्मेदार है। बता दें, ये वही गडरा गांव है, जहां 15 मार्च को पीट-पीटकर एक युवक की हत्या के बाद हिंसा में एएसआई की मौत हो गई थी। रीवा आईजी गौरव राजपूत ने बताया, औसेरी साकेत के घर से बदबू आ रही थी। घर के अंदर औसेरी, बेटी मीनाक्षी (11) और बेटे अमन (8) के शव मिले हैं। पारिवारिक कारणों के चलते सामूहिक सुसाइड का मामला लग रहा है। 15 मार्च को हुई हिंसा से यह मामला पूरी तरह से अलग है।

घर से बदबू आने पर पड़ोसियों ने पुलिस बुलाई

पड़ोसियों ने बताया, आज सुबह से घर से बदबू आ रही थी। खिड़की से झांककर देखा तो दरवाजा अंदर से बंद था। इसके बाद पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने रीवा से फॉरेंसिक टीम और अतिरिक्त पुलिस बल को बुलाया है।

सुरक्षा करने वाली पुलिस ने फांसी पर लटका दिया

मृतक औसेरी के परिजन रामकली साकेत ने कहा, पुलिस कहती थी कि किसी के घर मत जाना। किसी को अपने पास मत बैठाना, हम तुम्हारी सुरक्षा करेंगे। हिंसा के बाद पुलिस ने घर में घुसकर लोगों को पीटा है। छोटे-छोटे बच्चों को उठाकर खेत में फेंक दे रहे थे। रात में पुलिसवाले घर में घुसकर महिलाओं को मार रहे थे। कुंडी लगाकर पीटा है।

परिजन बोले- घर में घुसकर मारती थी पुलिस

कुसुमकली ने बताया, जेठ और उनके बच्चों के शव मिले हैं। हम दो किलोमीटर दूर रहते हैं। यहां गांव में 15 मार्च को विवाद हुआ था, इसके बाद से कोई घर से बाहर नहीं निकल रहा था। गांव में जो पुलिस तैनात थी वो लोगों को घर में घुसकर मारती थी।

एक साथ जलीं 8 चिताएं, बेटी ने दी मुखाग्नि

खंडवा में कुएं में जहरीली गैस से हुई थी मौतें, एक को बचाने में गई 7 की जान

खंडवा (नप्र)। खंडवा के कोंडावत गांव में शुक्रवार सुबह एक साथ 8 चिताएं जलीं तो मुक्तिधाम में मौजूद लोग अपने आंसू नहीं रोक सके। पिता को मुखाग्नि देने वाली बेटी का चेहरा देखकर सभी गमगीन हो गए। कोंडावत गांव के एक कुएं में जहरीली से दम घुटने के कारण गुरुवार को 8 लोगों की मौत हो गई थी। करीब 3 घंटे चले रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद शव कुएं से बाहर निकाले जा सके। सभी 8 शवों को जिला अस्पताल ले जाया गया। रात 12 बजे तक डॉक्टरों की टीम ने पोस्टमॉर्टम किया। शुक्रवार सुबह साढ़े आठ बजे सभी शवों को अलग-अलग वाहनों से गांव लाया गया। यहां अंतिम श्रद्धांजलि के बाद मुक्तिधाम ले

जाया गया। अंतिम संस्कार में आसपास के गांवों के लोग भी शामिल हुए। प्रशासन ने मृतकों के परिजन को 4-4 लाख रुपए की आर्थिक मदद देने का ऐलान किया है। एसडीएम बजरंग बहादुर ने कहा कि कुएं को तोड़कर मुरुम से भरा जाएगा।

मुक्तिधाम में सभी की आंखें नम, गांव भर में मातम- खंडवा के कोंडावत गांव में कुएं में जहरीली गैस से जान गंवाने वाले सभी 8 लोगों का अंतिम संस्कार एक साथ किया गया। आसपास के गांव के लोग भी पहुंचे। परिजन का हाल देखकर मुक्तिधाम में मौजूद हर किसी की आंखें नम हो गई।

गर्मी की वजह से बदला बड़वानी के स्कूलों का समय

प्रदेश में 8 अप्रैल से 5 डिग्री तक बढ़ेगा पारा भोपाल, इंदौर, उज्जैन सबसे ज्यादा तपेंगे

भोपाल (नप्र)। अप्रैल की शुरुआत के साथ ही मध्यप्रदेश में गर्मी बढ़ने लगी है। इसके चलते बड़वानी में स्कूलों का समय बदला गया है। अब जिले में एक पाली में लगने वाले सभी स्कूल सुबह 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक ही लगाए जाएंगे।

जिला शिक्षा अधिकारी शीला चौहान ने कहा- राज्य शासन के निर्देश पर यह आदेश जारी किया है। इसके दायरे में नवोदय और सीबीएसई स्कूल भी हैं। हालांकि, दो पालियों में चलने वाले स्कूलों का समय नहीं बदलेगा। वार्षिक परीक्षाएं पहले से तय समय सारणी के अनुसार ही होंगी। साथ ही वार्षिक परीक्षाओं के मूल्यांकन का समय भी पहले जैसा ही रहेगा।

अगले 5 दिन तक तेज गर्मी पड़ेगी

मध्यप्रदेश में अगले 5 दिन तक तेज गर्मी पड़ेगी। भोपाल, इंदौर, उज्जैन और ग्वालियर में पारा 2 से 5 डिग्री तक बढ़ेगा, जबकि जबलपुर, चंबल, नर्मदापुरम, रीवा, शहडोल, सागर संभाग में भी गर्मी बढ़ेगी। इससे पहले गुरुवार को भोपाल समेत प्रदेश के कई जिलों में ओले, बारिश और तेज हवा का असर रहा।

मौसम विभाग के अनुसार, वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) और साइक्लोनिक सर्कुलेशन की वजह से प्रदेश में पिछले चार दिन से मौसम बदला रहा। कई जिलों में ओले गिरे। आकाशीय बिजली भी गिरी, जबकि बारिश और तेज आंधी चली। यह सिस्टम अब कमजोर पड़ जाएगा। जिससे शुक्रवार को बारिश का अलर्ट नहीं है। कुछ जिलों में बादल जरूर छा सकते हैं। दूसरी ओर, भोपाल समेत कई शहरों में दिन के पारे में बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि 8 अप्रैल से एक पश्चिमी विक्षोभ एक्टिव हो रहा है, जिसका असर प्रदेश में भी देखने को मिलेगा। यानी, एक बार फिर बारिश का दौर शुरू हो जाएगा।

कांग्रेस बोली- मुस्लिम गांव बसाने की अनुमति दें सीएम

धीरेंद्र शास्त्री के हिंदू गांव वाले ट्वीट को किया टैग भाजपा का जवाब-10 फीट नीचे दफना देंगे

भोपाल (नप्र)। छतरपुर स्थित बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र शास्त्री के हिंदू गांव बसाने पर कांग्रेस की तरफ से प्रतिक्रिया आई है। कांग्रेस प्रवक्ता अब्बास हफीज ने कहा है कि अगर देश का संविधान धर्म के आधार पर गांव बसाने की अनुमति देता है, तो मुझे भी मुस्लिम, ईसाई और सिख ग्राम बसाने की अनुमति दी जाए। हफीज ने शास्त्री के ट्वीट को टैग करते हुए शुक्रवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से यह मांग की है। शास्त्री ने इस ट्वीट में कहा था कि बागेश्वर धाम में देश का पहला हिंदू गांव बनेगा, जिसकी आधारशिला रखी जा चुकी है। बागेश्वर धाम गढ़ा में बनने वाले इस हिंदू ग्राम में करीब एक हजार परिवारों को बसाया जाएगा।

रामेश्वर बोले- देश का विभाजन स्वीकार नहीं- अब्बास की इस मांग पर बीजेपी विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा- देश का विभाजन पहले भी स्वीकार नहीं था, न अब है। अब पाकिस्तान की बात करने वालों को कुचल दिया जाएगा। जमीन के दस फीट नीचे दफना दिया जाएगा।

रेल यात्रियों का खोया मोबाइल अब जल्द मिलेगा वापस

सीधे सीईआईआर पोर्टल पर कर सकते हैं शिकायत रेलवे सुरक्षा बल-दूरसंचार विभाग के बीच करार

भोपाल (नप्र)। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने दूरसंचार विभाग के साथ मिलकर एक बड़ी पहल की है, जिसके तहत अब गुम हुए मोबाइल फोन की खोज और बरामदगी के लिए सेंट्रल इक्विपमेंट आइडेंटिटी रजिस्टर (सीईआईआर) पोर्टल का उपयोग किया जाएगा। इस कदम से लाखों यात्रियों को फायदा

मिलने की उम्मीद है। इस योजना की शुरुआत नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर रेलवे में एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में की गई थी, जिसमें कई खोए हुए मोबाइल सफलतापूर्वक बरामद किए गए और चोरी में लिप्त आरोपियों को पकड़ा भी गया। अब इस योजना को पूरे देश में लागू किया जा रहा है।

ऐसे करें शिकायत दर्ज- यदि कोई यात्री ट्रेन यात्रा के दौरान अपना मोबाइल फोन खो देता है, तो वह रेल मदद ऐप या 139 हेल्पलाइन नंबर के माध्यम से इसकी रिपोर्ट कर सकता है। यदि एफआईआर दर्ज नहीं करानी हो, तो यात्री सीईआईआर पोर्टल पर भी सीधे शिकायत दर्ज कर सकता है।

सीईआईआर पर शिकायत दर्ज करने के बाद, आरपीएफ की जोनल साइबर सेल डिवाइस की जानकारी पोर्टल पर अपडेट कर उसे ब्लॉक कर देगी। यदि फोन में नई सिम का उपयोग किया गया हो, तो उसे ट्रैक कर वापसी की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

मोबाइल मिलने पर क्या करना होगा?

जब खोया हुआ मोबाइल मिल जाता है, तो उपयोगकर्ता को नजदीकी आरपीएफ पोस्ट पर फोन जमा कराने के लिए कहा जाएगा। असली मालिक आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत कर अपना फोन प्राप्त कर सकता है। रिकवरी के बाद, शिकायतकर्ता सीईआईआर पोर्टल पर फोन को अनब्लॉक करने का अनुरोध भी कर सकता है।

एक साल में आरपीएफ ने 1.15 लाख यात्रियों को लौटाया सामान

आरपीएफ पहले से ही ऑपरेशन अमानत के तहत यात्रियों की खोई संपत्ति की बरामदगी में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। जनवरी 2024 से फरवरी 2025 के बीच आरपीएफ ने 84.03 करोड़ रुपए मूल्य की वस्तुएं रिकवर कर 1.15 लाख से अधिक यात्रियों को लौटाई हैं। सीईआईआर पोर्टल को शामिल किए जाने से अब मोबाइल फोन की रिकवरी प्रक्रिया और अधिक तेज़ व प्रभावी हो सकेगी।